

# **EXTRAORDINARY**

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

#### PUBLISHED BY AUTHORITY

नई दिल्ली, शुक्रवार, अक्तूबर 10, 2014/आश्विन 18, 1936 सं. 2381 No. 238]

NEW DELHI, FRIDAY, OCTOBER 10, 2014/ASVINA 18, 1936

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय वाणिज्य विभाग (पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय) अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 अक्तूबर, 2014

(अंतिम जांच-परिणाम)

विषय: पाकिस्तान, सऊदी अरेबिया और यूएई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "क्लीयर फ्लोट ग्लास" के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच का अंतिम जांच-परिणाम।

संख्या 14/25/2012-डीजीएडी .---यत:, निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतद्पश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष नियमों के अंतर्गत मैसर्स गोल्ड प्लस ग्लास इंडस्ट्री लिमिटेड. मैसर्स एचएनजी फ्लोट ग्लास लिमिटेड और मैसर्स सेंट गोबैन ग्लास इंडिया लिमिटेड (जिन्हें एतद्पश्चात् याचिकाकर्ता या आवेदक कहा गया है) ने पाकिस्तान, सऊदी अरेबिया और यूएई (जिन्हें तद्पश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "4 मिमी से 12 मिमी (दोनों समाविष्ट) तक की मामुली मोटाई के क्लीयर फ्लोट ग्लास" के पाटन का आरोप लगाते हुए एक आवेदनपत्र दायर किया गया है।

2. यत:, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच प्रारंभ करते हुए दिनांक 11 अप्रैल, 2013 को भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना नियमावली के नियम 6(1) के अनुसार जारी की ताकि कथित पाटन की मौजूदगी उसकी मात्रा और उसके प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश पर विचार किया जा सके।

4029 GI/2014 (1)

#### क. प्रक्रिया

- 3. इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया :
  - (i) प्राधिकारी ने जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटनरोधी नियमावली के उपनियम 5(5) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के कथित पाटन का आरोप लगाते हुए आवेदनपत्र की प्राप्ति के संबंध में भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावासों को सूचना प्रेषित की।
  - (ii) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरूआत का एक सार्वजनिक नोटिस दिनांक 11 अप्रैल, 2013 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया।
  - (iii) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार एक पत्र के साथ इस सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों, (जिनका विवरण घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराया गया था) और उद्योग एसोसिएशनों को प्रेषित की तथा उन्हें अपने विचारों से लिखित रूप में निर्धारित समय-सीमा के अंदर अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।
  - (iv) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार आवेदनपत्र के अगोपनीय पाठ की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में संबद्ध देशों के ज्ञात आयातकों को प्रदान कराई। इस आवेदनपत्र की एक प्रति, अनुरोध करने पर, अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी प्रदान कराई गई।
  - (v) संबद्ध देशों के उत्पादों/निर्यातकों को भेजी गई निर्यातक प्रश्नाविलयों और पत्र की प्रतियां भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावासों को भी ज्ञात निर्यातकों/ उत्पादकों की एक सूची सिहत इस अनुरोध के साथ भेजी गई कि वे अपने संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को तथा संबद्ध देशों के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों को यह सुझाव दे कि वे निर्धारित समय-सीमा के अंदर प्रश्नाविलयों के प्रत्युत्तर प्रदान करें।
  - (vi) संबद्ध देशों में निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और निर्यातक प्रश्नाविलयों की प्रतियां भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावासों को ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की एक सूची सिहत इस अनुरोध के साथ प्रेषित की गई कि वे संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के साथ-साथ संबद्ध देशों के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों को यह सुझाव दे कि वे निर्धारित समय-सीमा के अंदर प्रश्नाविलयों का प्रत्युत्तर दें।
  - (vii) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को भी निर्यातक प्रश्नावलियां संगत सूचना प्रदान करने के लिए भेजी :
    - क. ख्वाजा ग्रुप ग्लास पाकिस्तान
    - ख. घानी ग्लास लिमिटेड, पाकिस्तान
    - ग. इमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, यूएई
    - घ. गल्फ ग्लास इंडस्ट्रीज यूएई
    - ङ. सऊदी गार्डियन इंटरनेशनल फ्लोट ग्लास कंपनी लिमिटेड, सऊदी अरेबिया
    - च. ओबैकन ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया
  - (viii) निम्नलिखित द्वारा प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दायर किया गया :
    - क. ओबैकन ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया
    - ख. मैसर्स अरेबियन यूनाइटेड फ्लोट ग्लास कंपनी सऊदी अरेबिया
    - ग. मैसर्स इमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, यूएई और
    - घ. मैसर्स घानी ग्लास लिमिटेड, पाकिस्तान
  - (ix) उपर्युक्त के अलावा, मैसर्स तारिक ग्लास इंडस्ट्रीज लिमिटेड, पाकिस्तान ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर न करके याचिका के संबंध में अपनी टिप्पणियां और क्षति प्रस्तुतिकरण दायर किया। वाणिज्य एवं उद्योग

मंत्रालय, सऊदी अरेबिया साम्राज्य ने प्राधिकारी को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने यह अभिव्यक्त किया कि इस जांच में हितबद्ध पक्षकार के रूप में उनके अधिकार सुरक्षित हैं।

- (x) भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावलियां पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार जरूरी सूचना प्रदान कराने के लिए भेजी :
  - 1. अटलांटिक ट्रेडिंग, मुंबई
  - 2. कांच घर, मुंबई
  - 3. फिशफा ग्लास, मुंबई
  - 4. समर्थ इंडस्ट्रीज, मुंबई
  - 5. प्रशांत ट्रेडिंग, मुंबई
  - 6. अश्मि ट्रेडिंग, मुंबई
  - 7. रजत ग्लास ट्रेडर्स, करद
  - 8. चन्दन ग्लास ट्रेडर्स, पुणे
  - 9. कोछर ग्लास ट्रेडर्स, भोपाल
  - 10. गनेरीवाला ब्रदर्स प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता
  - 11. स्योर सेफ ग्रुप/गनेरीवाला ग्लास ट्रेडर्स, कोलकाता
  - 12. एम एस ग्लास ट्रेडर्स, कोलकाता
  - 13. ग्लेज आर्किटेक्चर प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता
  - 14. ग्लेज इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता
  - 15. श्राफ ग्लास प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता
  - 16. जीएससी, नोएडा
  - 17. शिव शक्ति, रूड़की
  - 18. रिद्धि सिद्धि, जयपुर
  - 19. बनारस ग्लास, लखनऊ (ग्लोब इंडिया)
  - 20. टी एल वर्मा, चंडीगढ़
  - 21. जगदम्बा ग्लास दिल्ली
  - 22. शीशमहल, टफ, रोहतक
  - 23. नूतन ग्लास एचएस (प्राइवेट) लिमिटेड, बंगलौर
  - 24. महाबीर ग्लास एचएस, बंगलौर
  - 25. कर्नाटक मेटल कंपनी, बंगलौर
  - 26. इम्पैक्ट सेफ्टी ग्लास (प्राइवेट) लिमिटेड, बंगलौर
  - 27. सदर्न आटो प्रोडक्ट्स (प्राइवेट) लिमिटेड, बंगलौर
  - 28. टफ ग्लास इंडिया, बंगलौर
  - 29. यीशो फ्लोट ग्लास (प्राइवेट) लिमिटेड, हैदराबाद
  - 30. भंडारी ग्लास कंपनी, हैदराबाद
  - 31. प्रकाश ग्लास, हैदराबाद
  - 32. महावीर ग्लास चेन्नई/नवाकार/महावीर मिरर विशाखापत्तनम
  - 33. उमा इंडस्ट्रीज, बंगलौर
  - 34. जय मिरर इंडस्ट्रीज, चेन्नई

- (xi) केवल समर्थ इंडस्ट्रीज मुंबई में प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया।
- (xii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय पाठ एक सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा गया।
- (xiii) वाणिज्यिक असूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से जांच की अवधि और विगत तीन वर्षों की अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों का विवरण प्रदान कराने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया और उसे प्राप्त किया गया।
- (xiv) गैर-क्षितकारी कीमत का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा इसकी उत्पादन लागत के आधार पर प्रस्तुत सूचना के अनुसार किया गया और भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने तथा उसकी बिक्री करने की लागत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अंतर्गत निर्धारित दिशानिर्देशों के आधार पर किया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षिति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी।
- (xv) याचिकाकर्ता और संबद्ध देशों के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रदान कराई गई सूचना का प्राधिकारी द्वारा संगत समझी गई सीमा तक स्थल सत्यापन किया गया। इस प्रकटन विवरण के प्रयोजनार्थ केवल ऐसी सत्यापित आवश्यक संशोधनों सहित, जहां आवश्यक हुआ, सूचना पर भरोसा किया गया।
- (xvi) पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने दिनांक 18 जून, 2014 को आयोजित एक मौखिक विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने का हितबद्ध पक्षकारों को अवसर भी प्रदान किया गया। इस मौखिक सुनवाई में अपने सुनवाई में भाग लेने वाले हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध किया गया कि वे मौखिक रूप में अभिव्यक्त अपने विचारों को लिखित रूप से भी प्रस्तुत करें।
- (xvii) यह जांच 01 अक्तूबर, 2011 से प्रारंभ करके 31 दिसम्बर, 2012 तक की जांच की अवधि (पीओआई) के लिए आयोजित की गई। तथापि, क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच अप्रैल, 2009 मार्च, 2010, अप्रैल, 2010 मार्च, 2011, अप्रैल 2011 मार्च, 2012 तथा जांच की अवधि के लिए की गई।
- (xviii) यह जांच पूरी करने के लिए मूल तारीख 11.04.2013 थी। तथापि, प्राधिकारी के अनुरोध पर वित्त मंत्रालय ने इस तारीख को दिनांक 10.10.2014 तक बढ़ा दिया।
- (xix) इस जांच में इस अंतिम जांच परिणाम के आधारभूत अनिवार्य तथ्यों से युक्त एक प्रकटन वितरण सभी हितबद्ध पक्षकारों के लिए दिनांक 24.09.2014 को जारी किया गया। प्रकटन विवरण के पश्चात् घरेलू उद्योग तथा हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रस्तुतिकरणों पर इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में आवश्यक समझी गई सीमा तक विचार किया गया।
- (xx) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए उन प्रस्तुतिकरणों का, जिन्हें संगत समझा गया, इस प्रकटन विवरण में समाधान कर दिया गया।
- (xxi) इस प्रकटन विवरण में \*\*\* हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत गोपनीय सूचना का प्रतिनिधित्व करता है और इसलिए प्राधिकारी द्वारा उसे नियमों के अंतर्गत वैसा ही माना गया है।
- (xxii) इस जांच की अवधि के लिए अंगीकृत विनिमय दर 1 अमरीकी डालर = 53.10/- रुपए है।

## ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

- 4. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद को पाकिस्तान, सऊदी अरेबिया और यूएई में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित "4 मिमी से 12 मिमी (दोनों समाविष्ट) तक की मामूली मोटाई के क्लीयर फ्लोट ग्लास" के रूप में परिभाषित किया गया जिसकी मामूली सी मोटाई बीआईएस 14900:2000 के अनुसार हो।
- 5. क्लीयर फ्लोट ग्लास का प्रयोग विनिर्माण, रेफ्रिजरेशन, दर्पण और सौर ऊर्जा उद्योग में किया जाता है। यह उत्पाद श्रेष्ठ गुणवत्ता का ग्लास (शीशा) होता है। इसकी अंतर्निहित सुदृद्धता, उच्च ऑप्टिकल स्पष्टता, मुक्त चिकनी सतह पर विकृति आदि के कारण इसका प्रयोग विभिन्न प्रयोजनों के लिए पड़ रहा है।
- 6. फ्लोट ग्लास को "ग्लास एवं ग्लासवेयर" अध्याय शीर्ष 70 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है तथापि इस संबद्ध वस्तु का 7003, 7004, 7005, 7009, 7019, 7013, 7015, 7016, 7018 और 7020 प्रशुल्क शीर्षों के अंतर्गत भी आयात किया

जा रहा है। तथापि, यह सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वह किसी भी रूप में वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं हैं।

### उत्पादकों, निर्यातकों/आयातकों/ अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतकरण

- 7. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में जांच की कार्रवाई के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए वे प्रस्तुतिकरण जिन्हें प्राधिकारी द्वारा विचारार्थ संगत माना गया निम्नलिखित हैं :
  - (i) क्लियर फ्लोट ग्लास जिसका प्रयोग सजावट के लिए, औद्योगिक अथवा ऑटोमोटिव प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है उसे विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अपवर्जित कर देना चाहिए क्योंकि उसे चीन और इंडोनेशिया से संबंधित विगत जांचों में शामिल नहीं किया गया है।
  - (ii) प्रतिबिंवन ग्लास, लाइट ग्रीन ग्लास, ग्रीन ग्लास तथा परिवर्ती ग्लास को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अपवर्जित कर दिया जाना चाहिए।
  - (iii) प्राधिकारी को उसी विचाराधीन उत्पाद पर विचार करना चाहिए जिस पर उसने पिछले मामलों पर विचार किया है और जो उत्पाद विगत परम्परा के अनुसार विचाराधीन उत्पाद के भाग नहीं हैं उनका प्राधिकारी द्वारा अपवर्जन कर दिया जाना चाहिए।

### घरेलू उद्योग के विचार

- 8. वर्तमान जांच के प्रयाजनार्थ विचाराधीन उत्पाद "4 मिमी से 12 मिमी (दोनों समाविष्ट) तक की मामूली मोटाई के क्लीयर फ्लोट ग्लास" उत्पाद है जिसकी मोटाई बीआईएस 14900:2000 के अनुरूप होती है।
- 9. क्लीयर फ्लोट ग्लास का प्रयोग विनिर्माण, रेफ्रिजरेशन, दर्पण और सौर ऊर्जा उद्योग में किया जाता है। यह उत्पाद श्रेष्ठ गुणवत्ता का ग्लास (शीशा) होता है। इसकी अंतर्निहित सुदृद्धता, उच्च ऑप्टिकल स्पष्टता, मुक्त चिकनी सतह पर विकृति आदि के कारण इसका प्रयोग विभिन्न प्रयोजनों के लिए पड़ रहा है।
- 10. फ्लोट ग्लास को "ग्लास एवं ग्लासवेयर" अध्याय शीर्ष 70 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है तथापि इस संबद्ध वस्तु का 7003, 7004, 7005, 7009, 7019, 7013, 7015, 7016, 7018 और 7020 प्रशुल्क शीर्षों के अंतर्गत भी आयात किया जा रहा है। तथापि, यह सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वह किसी भी रूप में वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं हैं।
- 11. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु भौतिक एवं रासायनिक गुण धर्मों, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, प्रकार्यों एवं प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों वितरण एवं विपणन और वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरण जैसे गुण धर्मों के रूप में तुलनीय हैं। आवेदकों ने दावा किया है कि संबद्ध वस्तु जिसका भारत में आयात किया जा रहा है, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के समरूप है। पाटित आयातों और घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा आवेदक द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद के तकनीकी विनिर्देशनों, गुणवत्ता, प्रकार्यों एवं अंतिम प्रयोगों में कोई अंतर नहीं है। दोनों ही तकनीकी रूप से एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थानीय हैं और इसलिए उन्हें नियमों के अंतर्गत समान वस्तु के रूप में माना जाए।
- 12. प्रतिबिंबन ग्लास, लाइट ग्रीन ग्लास, ग्रीन ग्लास और परिवर्ती ग्लास जैसे उत्पादों का अपवर्जन करने के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि यह तर्क निराधार है, क्योंकि फ्लोट ग्लास के इन प्रकारों की जांच शुरूआत अधिसूचना में परिभाषित विचाराधीन उत्पाद का भाग नहीं है। इसलिए इन प्रकारों का अपवर्जन करने के लिए अनुरोध को इस कार्रवाई के एक भाग के रूप में समाधान करने की जरूरत नहीं हैं।

- 13. जहां तक सजावटी, औद्योगिक अथवा आटोमोटिव प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग किए जाने वाले क्लियर फ्लोट ग्लास का अपवर्जन इस आधार पर करने की इनको विगत परम्परा के अनुसार पिछली जांचों में शामिल नहीं किया गया था। इस संबंध में यह प्रस्तुत किया जाता है कि यह संपूर्ण पहुंच स्विहतैषी, भ्रामक, निराधार है और इसलिए इस तर्क में कोई दम नहीं है। प्रतिवादी पक्षकारों ने अपने इस दावे के संबंध में कोई विधि या तार्किक आधार उद्भृत नहीं किया है, कि अपवर्जन का आधार "विगत परम्परा होनी चाहिए"। किसी विधिक या तार्किक आधार के अभाव में निर्यातक के इस दावे पर कोई टिप्पणी करना उचित नहीं होगा। ऐसा होते हुए भी निर्दिष्ट प्राधिकारी इस तथ्य को मानेंगे कि इस विचाराधीन उत्पाद को निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा किसी विशिष्ट जांच के संबंध में व्याप्त परिस्थितियों के आधार पर विशेष रूप से परिभाषित किया है। यह विगत के मामलों से समानांतर मामला मनाने का कोई आधार नहीं है क्योंकि वर्तमान जांच के कुछ आवेदक विगत जांच में भी शामिल रहे हों।
- 14. पुन: यह प्रस्तुत किया जाता है कि घरेलू उद्योग इस विचाराधीन उत्पाद अर्थात "4 मिमी से 12 मिमी (दोनों समाविष्ट) तक की मामूली मोटाई के क्लीयर फ्लोट ग्लास" है। उपयुक्त को ध्यान में रखते हुए अपवर्जन के किसी भी अनुरोध पर प्राधिकारी द्वारा विचार नहीं किया जाना चाहिए।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच :

- 15. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद "4 मिमी से 12 मिमी (दोनों समाविष्ट) तक की मामूली मोटाई के क्लीयर फ्लोट ग्लास" है, जिसकी मामूली सी मोटाई वीआईएस 14900:2000 के अनुरूप होगी (जिसे एतद्पश्चात संबद्ध वस्तु कहा गया है।
- 16. क्लीयर फ्लोट ग्लास का प्रयोग विनिर्माण, रेफ्रिजरेशन, दर्पण और सौर ऊर्जा उद्योग में किया जाता है। यह उत्पाद श्रेष्ठ गुणवत्ता का ग्लास (शीशा) होता है। इसकी अंतर्निहित सुदृद्धता, उच्च ऑप्टिकल स्पष्टता, मुक्त चिकनी सतह पर विकृति आदि के कारण इसका प्रयोग विभिन्न प्रयोजनों के लिए पड़ रहा है। फ्लोट ग्लास को "ग्लास एवं ग्लासवेयर" अध्याय शीर्ष 70 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है तथापि इस संबद्ध वस्तु का 7003, 7004, 7005, 7009, 7019, 7013, 7015, 7016, 7018 और 7020 प्रशुल्क शीर्षों के अंतर्गत भी आयात किया जा रहा है। तथापि, यह सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वह किसी भी रूप में वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं हैं।
- 17. समानवस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नलिखित प्रावधान किया गया है :--

"समान वस्तु का आशय ऐसी वस्तु से है जो भारत में पाटित की जा रही विचाराधीन वस्तु के सभी रूपों में समान या समरूप हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य वस्तु जो यद्यपि सभी तरह से समान न हो फिर भी जांच के अधीन वस्तु के समान गुणों को परिलक्षित करती हो।"

- 18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु भौतिक एवं रासायनिक गुण धर्मों, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, प्रकार्यों एवं प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों वितरण एवं विपणन और वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरण जैसे गुण धर्मों के रूप में तुलनीय हैं। दोनों ही तकनीकी रूप से एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थानीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के आशय के अंतर्गत समान वस्तु है।
- 19. विचाराधीन उत्पाद और घरेलू समान वस्तु के संबंध में वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए वे विविध प्रस्तुतिकरण जिन्हें प्राधिकारी ने संगत माना हैं, उनकी जांच एवं उनका समाधान निम्नलिखित है :

- (i) जहां तक इस प्रस्तुतिकरण का संबंध है कि परावर्तक ग्लास लाइट ग्रीन ग्लास, परिवर्ती ग्लास को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से विशेष रूप से अपवर्जित कर दिया जाना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद को वर्तमान जांच में "क्लीयर फ्लोट ग्लास" के रूप में परिभाषित किया गया है और इस कारण उसमें उक्त उत्पाद शामिल नहीं है।
- (ii) जहां तक इस प्रस्तुतिकरण का संबंध है कि सजावटी, औद्योगिक तथा आटोमोटिव प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग किया जाने वाला क्लीयर फ्लोट ग्लास, 5 मिमी से 12 मिमी के किसी अन्य क्लीयर फ्लोट ग्लास से भिन्न नहीं होता है क्योंकि दोनों ही पाटनरोधी नियमावली के दायर के अंतर्गत वाणिज्यिक रूप से एवं तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय हैं।
- 20. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु दोनों ही भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्मों, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, प्रकार्यों एवं प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण एवं विपणन और वस्तु के प्रशुल्क वर्गीकरण जैसे गुणधर्मों में तुलनीय हैं। उपभोक्तागण इन दोनों ही वस्तुओं का प्रयोग अदल-बदल कर रहे हैं। अतः प्राधिकारी इस विचाराधीन उत्पाद को "4 मिमी से 12 मिमी (दोनों समाविष्ट) तक की मामूली मोटाई के क्लीयर फ्लोट ग्लास" के रूप में परिभाषित करते हैं जिसकी सांकेतिक मोटाई बीआईएस 14900:2000 के अनुरूप है।

### ग. घरेलू उद्योग एवं आधार

### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

21. कितपय हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया कि नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का कोई आधार नहीं है क्योंकि दो अन्य बड़े घरेलू उत्पादकों ने कोई सूचना प्रदान नहीं की है। मैसर्स आशी इंडिया ग्लास लिमिटेड और गुजरात गार्डियन लिमिटेड को समर्थन में कोई आंकड़ा न देने के कारण उन्हें समर्थकर्ता के रूप में नहीं माना जा सकता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को उन अन्य घरेलू उत्पादकों, जिनका उत्पादन कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है, द्वारा सूचना प्रदान न किए जाने को देखते हुए वर्तमान जांच समाप्त कर देनी चाहिए।

### घरेलू उद्योग के विचार

22. आवेदक, जिन्हें अन्य दो घरेलू उत्पादकों का समर्थन प्राप्त हो या न प्राप्त हो, अर्थात् मैसर्स आशी इंडिया ग्लास लिमिटेड (एआईएस) और गुजरात गार्डियन लिमिटेड (जीसीएल) का उत्पादन कुल घरेलू उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक का है। इसके अतिरिक्त, आवेदकों ने संबद्ध वस्तु का संबद्ध देशों से न तो आयात किया है और न ही उनका इस संबद्ध वस्तु के किसी भी आयातक से कोई संबंध है। इसलिए आवेदकगण पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत "आधार" की जरूरतों को पूरा करते हैं और वे पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के आशय के अंतर्गत घरेलू उद्योग है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

23. पाटनरोधी नियमावली के नियम 3(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नवत परिभाषित किया गया है :

"घरेलू उद्योग का आशय समग्र रूप से उन घरेलू उत्पादकों से होता है जो समान वस्तु के विनिर्माण में या उससे संबद्ध किसी अन्य गतिविधि में संलिप्त हो अथवा उन उत्पादकों से होता है जिनका उक्त वस्तु का समग्र उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता हो, सिवाय इसके कि जब इन उत्पादनकर्ताओं का कथित पाटित वस्तु के किसी आयातक या निर्यातक से कोई संबंध हो या वे उसके स्वयं आयातक हों, ऐसे मामलों में वाक्यांश घरेलू उद्योग को शेष उत्पादकों का उल्लेख करते हुए के रूप में माना जाएगा।"

24. यह आवेदन पत्र मैसर्स गोल्ड प्लस ग्लास इंडस्ट्री लिमिटेड, मैसर्स एचएनजी फ्लोट ग्लास लिमिटेड और मैसर्स सेंट गोबैन ग्लास इंडिया लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से दायर किया गया है। मैसर्स आशी इंडिया ग्लास लिमिटेड (एआईएस) और गुजरात गार्डियन लिमिटेड (जीजीएल) नामक दो अन्य उत्पादकों ने इस याचिका का समर्थन किया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं का उत्पादन उक्त वस्तु के कुल भारतीय उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक है। पुन: यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ताओं में से किसी ने भी इस विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है और न ही उनमें से किसी का उक्त वस्तु के निर्यातक या आयात से कोई संबंध है। इसलिए याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार "घरेलू उद्योग" हैं। चूंकि यह आवेदनपत्र उन आवेदनकर्ताओं द्वारा दायर किया गया है जिनका उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक उत्पादन होता है और इस आवेदनपत्र का अन्य उत्पादकों द्वारा समर्थन किया गया है, इसलिए यह "आधार" की जरूरत को पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत पूरा करता है।

#### घ. गोपनीयता

### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

- 25. गोपनीयता के संबंध में वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान उत्पादकों/ निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए वे प्रस्तुतिकरण, जिन्हें प्राधिकारी द्वारा जांच के लिए संगत माना गया और जिनका समाधान कर दिया गया, निम्नलिखित हैं
  - (i) इस याचिका में भारी गोपनीयता का दावा किया गया है। यह याचिका वितरण माध्यमों, कमीशन/डिस्काउंट नीति, क्रेडिट की शर्तों, सामान्य मूल्य परिकलन आदि के संबंध में याचिकाकर्ताओं की नीति के बारे में समग्र रूप से कोई सूचना प्रदान नहीं करती है।
  - (ii) घरेलू उद्योग ने अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है कि उन्हें इस अत्यधिक गोपनीयता की अनुमित इस भावना से दी गई है कि उन्होंने अपनी सार्वजनिक फाइल में अपनी वार्षिक रिपोर्ट उपलब्ध नहीं कराई है।
  - (iii) आवेदनकर्ता घरेलू उत्पादकों ने लागत निर्धारण सूचना के संबंध में गोपनीयता का दावा किया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि लागत निर्धारण सूचना के एक भाग के रूप में प्रस्तुत निम्नलिखित सूचना को अनुक्रमणिका रूप से आसानी से प्रदान कराया जा सकता है जिससे कि याचिका के साथ-साथ उसकी प्रवृत्ति प्रदर्शित हो सके।
  - (iv) याचिकाकर्ताओं ने आयात आंकड़ों में सुधार करने के लिए प्रयोग की जाने वाली क्रिया पद्धित के संबंध में कोई वास्तविक जानकारियों का खुलासा नहीं किया है।

## घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

- 26. गोपनीयता के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए वे विभिन्न प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं जिनकी प्राधिकारी ने जांच की और उनका समाधान कर दिया है :
  - (i) याचिकाकर्ताओं ने उनके द्वारा प्रदान कराई गई सूचना के संबंध में गोपनीयता का दावा पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 के अंतर्गत करने की अनुमित दी गई है और उक्त सूचना का सार्थक सारांश भी प्रदान कराया गया है। हितबद्ध पक्षकारों के यह दावे निराधार हैं कि याचिकाकर्ता ने अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है।
  - (ii) दूसरी ओर निर्यातकों द्वारा अत्यधिक गोपनीयता का दावा इस आधार पर किया गया है कि निर्यातकों द्वारा दायर प्रश्नावली प्रत्युत्तर का अगोपनीय पाठ गोपनीय पाठ की सही-सही प्रतिकृति नहीं था जैसाकि इस मुद्दे के नियमों और अनुदेशों के अंतर्गत अपेक्षा की गई है।
  - (iii) इस संबंध में मूलभूत सूचना नहीं प्रदान की गई है कि निर्यातकों ने अपना वाणिज्यिक प्रचालन कब शुरू किया।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

- 27. गोपनीयता के संबंध में इस जांच की कार्रवाई के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए वे विभिन्न प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं जिनको प्राधिकारी द्वारा जांच के लिए संगत माना गया और जिनका समाधान कर दिया गया है :
  - (i) गोपनीयता के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 में निम्नलिखित प्रावधान किया गया है :

गोपनीय सूचना : नियम 6 के उपनियम (7), उपनियम (2), नियम 12 के उपनियम (3) (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) तथा उपनियमों में किसी बात के होते हुए भी नियम 5 के उपनियम (2) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनपत्रों की प्रतियां अथवा जांच की कार्रवाई के दौरान किसी पक्षकार द्वारा निर्दिष्ट प्राधिकारी को गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई किसी अन्य सूचना को, निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा संतुष्ट हो जाने पर उनके द्वारा उसे गोपनीय के रूप में माना जाएगा और ऐसी सूचना का, उक्त सूचना प्रदान करने वाले पक्षकार द्वारा विशिष्ट रूप से प्राधिकृतीकरण किए बिना किसी अन्य पक्षकार को प्रकटन नहीं किया जाएगा।

- (2) निर्दिष्ट प्राधािकरी गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान कराने वाले पक्षकारों से यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वे उनका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करें और यदि, ऐसी सूचना प्रदान कराने वाले पक्षकार की राय में, उक्त सूचना का सारांश प्रस्तुत किया जाना संभव नहीं है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को उन कारणों का विवरण प्रस्तुत कर सकता है कि उसका संक्षिप्तीकरण संभव क्यों नहीं है।
- (3) उपनियम (2) में किसी बात का उल्लेख होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट हैं कि गोपनीयता के लिए अनुरोध औचित्यपूर्ण नहीं हैं अथवा सूचना का प्रदायक सूचना को सार्वजनिक करने का इच्छुक नहीं है अथवा सामान्यीकृत या सारांश रूप में इसके प्रकटन को प्राधिकृत करना नहीं चाहता है तो वह उक्त सूचना की अनदेखी कर सकते हैं।
- (ii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना की गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां कहीं आवश्यक हुआ गोपनीयता के दावे को स्वीकार कर लिया और ऐसी सूचना को गोपनीय के रूप में माना गया तथा उसका अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकटन नहीं किया गया। जहां कहीं संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान कराने वाले पक्षकारों को यह निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दायर की गई सूचना पर्याप्त अगोपनीय पाठ भी प्रदान कराएं। प्राधिकारी ने विभिन्न पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का अगोपनीय पाठ सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया।

### ड. विविध प्रस्तुतिकरण

## उत्पादों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

- 28. वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विविध प्रस्तुतिकरण और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं :
  - (i) घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन प्राधिकारी द्वारा निर्धारित स्वरूप और ढंग में नहीं है।
  - (ii) यह याचिका अपूर्ण है और इसलिए इस जांच को समाप्त कर देना चाहिए।
  - (iii) इसके अतिरिक्त, याचिका में कई अशुद्धियां हैं। आयातकों को सहयोगकर्ता आयातक के रूप में मानने के उद्देश्य से आयातकों को प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर करने की जरूरत नहीं है। प्रत्युत्तर दायर न करना या अधूरा प्रत्युत्तर दायर करने से किसी हितबद्ध पक्षकार का प्रस्तुतिकरण दायर करने का अधिकार तनुकृत नहीं हो जाता है।

- (iv) यह प्रस्तुत किया जाता है कि याचिका में कई बड़े अंतर हैं जिनके आधार पर वर्तमान जांच प्रारंभ की गई है और सूचना का निगमन करने के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों को प्रस्तुत याचिका का अगोपनीय पाठ प्राधिकारी द्वारा जांच की अविध में स्वत: 3 माह के लिए बढ़ाई गई।
- (v) घरेलू उद्योग ने स्वदेशी उत्पाद की औसत बिक्री कीमत का विवरण प्रपत्र के अनुरूप प्रपत्र-IVख में कहीं भी प्रदान नहीं कराया है।
- (vi) यह नोट किया जाना चाहिए कि शीट ग्लास, जो क्लीयर फ्लोट ग्लास का एक वाणिज्यिक प्रतिस्थानी है, यह भी समान रूप से एक कम कीमत वाला आयात है जिसे आवेदक घरेलू उत्पादकों को क्षति, यदि कोई हों, का एक अन्य कारण माना जा सकता है। जहां फ्लोट ग्लास के लिए एक वाणिज्यिक प्रतिस्थानी की मौजूदगी और तत्काल उपलब्धता वह एक कारण हो सकता है जिसकी वजह से फ्लोट ग्लास के घरेलू उत्पादकों को क्षति हो रही हो।
- (vii) यह संगत है कि जांच की अवधि के दौरान यूएसडी के लिए घरेलू उद्योग द्वारा अंगीकृत विनिमय दर रुपए 53.10 है। तथापि, भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार यूएसडी की वर्तमान दर रुपए 61.90 है। यह भी पूर्वावधारणा की गई कि रुपए की कीमत में पुन: वृद्धि नहीं होगी और इसमें और अधिक गिरावट आ सकती है। इसका आशय यह है कि इस समय भारत में आयात उन कीमतों की तुलना में बहुत अधिक उच्चतर कीमतों पर हो रहे हैं जिन पर वे जांच की अवधि के दौरान हुआ करते थे। यह भी प्रस्तुत किया जाता है कि आवेदक घरेलू उत्पादक रुपए 53.10 की विनिमय दर पर विचार करते हुए 15-25 प्रतिशत की कीमत अधोरदन पर पहुंचे हैं। तथापि, यदि वर्तमान विनिमय दर पर विचार किया जाता है, जो सर्वाधिक सही तस्वीर प्रस्तुत करेगा, तो कीमत अधोरदन और कीमत अधोबिक्रयण के स्तर का उपशमन हो जाएगा।
- (viii) घरेलू उद्योग ने आवेदनपत्र का अगोपनीय प्रदान कराते समय नियम 7 का अनुसरण नहीं किया है।
- (ix) समर्थन पत्र संपूर्ण जांच अवधि के लिए नहीं हैं।
- (x) घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराए गए प्रमाणपत्र सही नहीं हैं और वे संपूर्ण जांच अवधि को भी कवर नहीं कर रहे हैं।
- (xi) इस मामले में जांच अवधि 10 अप्रैल, 2014 को पूरी हो गई है। 05 जून, 2014 या 12 मई, 2014 दोनों ही तारीखें 10 अप्रैल, 2014 की समापन अवधि से परे हैं। एक वर्ष की अवधि समाप्त हो जाने के पश्चात मृत जांच को पुन: जीवित नहीं किया जाता है।

## घरेलू उद्योग के विचार

- 29. घरेलू उद्योग द्वारा जांच की अवधि के दौरान किए गए वे विविध प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित है जिनको प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया :
  - (i) सऊदी अरेबिया और यूएई के उत्पादक/निर्यातक लागत निर्धारण का प्राकृतिक गैस की दोहरी कीमत निर्धारण और अन्य उपयोगिताओं के कारण अनुचित लाभ उठाते हैं। अत: उत्पादन लागत का परिकलन करते समय प्राकृतिक गैस की सही-सही कीमत परावर्तित होनी चाहिए।
  - (ii) प्रमाणपत्रों को निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुरूप हस्ताक्षरित नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा प्रेषित प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में अपने संयंत्र तथा कारपोरेट कार्यालय के पूरे पते उपलब्ध नहीं कराए हैं।
  - (iii) याचिका में उपलब्ध कराई गई सूचना सही है और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए दावे के अनुसार वह विसंगति प्रदर्शित नहीं करती है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग के नियमों के अंतर्गत निर्धारित सभी प्रक्रियाओं का अनुपालन किया है।।
  - (iv) घरेलू उद्योग ने प्रपत्र-IVक में बिक्री कीमत और क्षिति विश्लेषण में संपूर्ण विवरण प्रदान कराए हैं। इसिलए, केवल एक स्थान पर ही सूचना प्रदान न करने को किसी नियम का उल्लंघन नहीं माना जा सकता है, खासकर तब जबिक घरेलू उद्योग ने क्षिति विश्लेषण प्रदान करते समय कीमत अधोरदन से संबंधित सूचना अलग से प्रदान कराई है।
  - (v) घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी को संपूर्ण अपरिष्कृत आंकड़े प्रदान कराए हैं और पृथक्करण क्रियापद्धित का विस्तार से स्पष्टीकरण दिया है, इसके पश्चात घरेलू उद्योग याचिका में जांच के लिए संगत आंकड़े ही प्रदान

- कराता है। यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि सभी हितबद्ध पक्षकारों ने केवल प्रस्तुतिकरण ही किए हैं और उसे असत्य दर्शाने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत करने में असफल रहे हैं।
- (vi) यह प्रस्तुत किया जाता है कि शीट ग्लास और क्लीयर फ्लोट ग्लास तकनीकी रूप से एवं वाणिज्यक रूप से अलग-अलग हैं और इसलिए उन्हें किसी भी ढंग से समान उत्पाद नहीं कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, अधिक महत्वपूर्ण यह है कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इसके विपरीत सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया है। अत: यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए प्रतिस्थापनात्मकता का तर्क पूरी तरह से नामंजूर कर देना चाहिए।
- (vii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सुझाई गई क्रियापद्धित की प्राधिकारी को वर्तमान विनिमय दर का प्रयोग करना चाहिए और उसी के आधार पर कीमत अधोरदन का निर्धारण करना चाहिए, गलत है और यह ईजीएडी की सुस्थापित परम्परा के विपरीत है। इसके अतिरिक्त, उक्त क्रियापद्धित तार्किक रूप से या विधिक रूप से संधारणीय नहीं है। इसलिए उसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।
- (viii) हितबद्ध पक्षकारों का समय विस्तार के संबंध में तर्क गलत है। हमारे विचार से, वित्त मंत्रालय को अवधि की समाप्त के पश्चात भी अवधि विस्तार करने का पूर्ण अधिकार है। इसके अतिरिक्त, यह एक प्रशासनिक प्रकार्यात्मक मुद्दा है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

- 30. वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा विभिन्न विविध मुद्दे उइाए गए और वे मुद्दे जिन्हें प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया उनकी निम्नवत जांच की गई है :
  - क. जहां तक विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क का संबंध है कि यह याचिका त्रुटिपूर्ण है और इसलिए इस जांच को समाप्त कर देना चाहिए। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वर्तमान जांच घरेलू उद्योग द्वारा पाटन क्षति और कारणात्मक संबंध को दर्शाते हुए और अधिनियम एवं नियमों के अनुसार जांच की शुरूआत को न्यायोचित ठहराते हुए प्रथम दृष्टया साक्ष्यों के आधार पर शुरू की गई है। प्राधिकारी ने जहां कहीं आवश्यक हुआ अतिरिक्त सूचना भी मंगाई और घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना सत्यापन भी किया।
  - ख. प्रमाणपत्रों एवं समर्थन पत्र संबंधी तर्क के बारे में यह नोट किया जाता है कि वह पूर्ण है और वर्तमान जांच के लिए सही है।
  - ग. जहां तक कीमत अधोरदन का निर्धारण करने के लिए वर्तमान विनिमय दर का प्रयोग करने के तर्क का संबंध है, प्राधिकारी ने यह नोट किया कि वह व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है और अन्य कारक प्रकृति में परिवर्तनीय होते हुए व्यावहारिक रूप से यह संभव नहीं है कि विनिमय दर के प्रभाव का विश्लेषण अकेले किया जाए। इसके अतिरिक्त, उसे तार्किक रूप से और विधिक रूप से अपनाना अनुचित विचार होगा।
  - घ. जहां तक शीट ग्लास और क्लीयर फ्लोट ग्लास की प्रतिस्थापनीयता का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि उसे नियम 2(घ) के अंतर्गत समान वस्तु के रूप में उल्लिखित नहीं किया जा सकता है। इसलिए, उन दोनों को एक दूसरे का प्रतिस्थानी नहीं कहा जा सकता है।

## सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

## च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

- 31. इस जांच की कार्रवाई के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में किए गए वे प्रस्तुतीकरण जिन्हें प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया, निम्नलिखित हैं :
  - (i) आवेदक घरेलू उत्पादकों ने संबद्ध वस्तु के खिलाफ जांच प्रारंभ करने की मांग की है परंतु उसके समर्थन में ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है जिसे डीजीएडी द्वारा स्वीकार किया गया हो। इस संबंध में यह प्रस्तुत

- किया जाता है कि बिना किसी साक्ष्यात्मक मानदंडों को पूरा किए बिना कोई भी जांच तर्कसंगत नहीं है और इसलिए वर्तमान जांच को तत्काल समाप्त कर दिया जाना चाहिए।
- (ii) संगत प्रावधानों में विनिर्दिष्ट दो शर्तों में सामान्य मूल्य का विनिर्माण करने के लिए आधार के रूप में घरेलू बिक्री कीमत से संबंधित आंकड़े की "अनुपलब्धता" शामिल नहीं है। अत: विनिर्मित सामान्य मूल्य का आश्रय लेने के लिए जिस आधार का उल्लेख आवेदनपत्र में किया गया है वह त्रृटिपूर्ण है।
- (iii) सऊदी अरेबिया को अंतर्ग्रस्त करते हुए सभी जांचों में घरेलू उद्योग ने एक दावा किया है कि "सऊदी अरेबिया में प्राकृतिक गैस की कीमतें कम होने के कारण वहां एक विशेष प्रकार की बाजार व्यवस्था प्रचलित थी"। प्राधिकारी ने सभी जांचों में इन दावों का खंडन किया है। प्रतिवादियों ने यह भी प्रस्तुत किया है कि कितपय ऐसी वस्तुएं हैं जिनके संबंध में कुछ देशों को भौगोलिक लाभ मिलता है और केवल इस तरह का लाभ प्राप्त करने का आशय यह नहीं है कि पाटनरोधी जांच में कोई विशिष्ट बाजार स्थिति मौजूद है।
- (iv) ओबिकान ग्लास कंपनी ने अपना वाणिज्यिक उत्पादन 1 जुलाई, 2011 को प्रारंभ किया था। संबद्ध जांच में जांच की अवधि अक्तूबर, 2011 से दिसम्बर, 2012 है। इस प्रकार प्रतिवादी अपना वाणिज्यिक उत्पादन प्रारंभ करने से ही पाटनरोधी कार्रवाई का सामना कर रहा है। इस अवधि के दौरान, प्रतिवादी की लागत संरचना भारी शुरूआती लागत और न्यून क्षमता उपयोग के कारण बहतु अधिक थी।
- (v) आवेदक घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रदान करया गया अंतरदेशीय भाड़े का आकलन का समर्थन भी साक्ष्यों द्वारा नहीं किया गया है। आवेदक घरेलू उद्योग ने जानबूझकर आंकड़ों का एक ऐसा सेट बनाया है जिससे कि अंतरदेशीय भाड़े का आकलन अभिव्यक्त हो सके। आवेदनपत्र में इस तरह का कोई साक्ष्य नहीं है कि अंतरदेशीय भाड़े के रूप में उदधृत आंकड़ों पर कैसे पहुचा गया है और संगत परिकलन क्या हैं।
- (vi) याचिकाकर्ता द्वारा अपनी याचिका में निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात को सटीक के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि याचिकाकर्ता ने अपनी संगणनाओं के समर्थन में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है।
- (vii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उल्लिखित के अनुरूप विहित प्रक्रिया का अनुपालन नहीं किया है।
- (viii) आवेदनकर्ताओं द्वारा निर्यात कीमत के संबंध में किया गया समायोजन असामान्य रूप से बहुत अधिक हैं और किसी साक्ष्य द्वारा उसका समर्थन नहीं किया गया है। इसलिए, निर्यात कीमत की संगणना करते समय प्राधिकारी को यथार्थ समायोजन का प्रयोग करना चाहिए।
- (ix) संबद्ध देशों से आयात की कुल प्रमात्रा बहुत कम है और यह भारत में कुल मांग की केवल 6 प्रतिशत के लगभग है।
- (x) पाकिस्तान से सभी आयात सड़क मार्ग से आ रह हैं। इसलिए समुद्री भाड़े पर होने वाला व्यय पाकिस्तान से होने वाले आयातों पर लागू नहीं होता है।
- (xi) इस याचिका में समुद्री बीमा के लिए किया गया समायोजन इसी कारण से स्वीकार्य नहीं है।
- (xii) पाटनरोधी शुल्क, यदि कोई हो, को संदर्भ कीमत आधार पर अधिरोपित किया जाना चाहिए।
- 32. घरेलू उद्योग द्वारा सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में दिए गए वे प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित है जिन्हें प्राधिकारी ने संगत माना है :
- क. सऊदी अरेबिया और यूएई में उत्पादक अनिवार्यत: सरकारी हस्तक्षेप के कारण ऊर्जा कीमत निर्धारण के संबंध में अनुचित लाभ अर्जित करते हैं। ऊर्जा लागत, जोिक संबद्ध वस्तु की लागत का एक बहुत बड़ा भाग होता है को इन देशों में अपनाई जाने वाली विभेदकारी कीमत निर्धारण नीित के कारण अंकित मूल्य के रूप में स्वीकार नहीं की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, यह सऊदी अरेबिया और यूएई में उपयोगिता लागत की उचित बाजार कीमत की विमर्शक कीमत नहीं है। प्राधिकारी से यह अनुरोध किया जाता है कि वह सऊदी अरेबिया और यूएई में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उत्पादन लागत की संगणना करते समय उपयोगिता लागत की बाजार कीमत को ध्यान में रखें।
- ख. मैसर्स ओबिकान ग्लास कंपनी ने कच्चे माल और उपयोगी वस्तुओं की आपूर्ति के संबंध में प्राधिकारी से सूचना को विशेष रूप से रोका रखा है। यहां तक कि परिशिष्ट-8 में लागत निर्धारण शीर्षों का भी उल्लेख नहीं किया गया है जिससे संदेह होता है कि वे प्राधिकारी से या तो कुछ छिपाना चाहते हैं या प्राधिकारी को भ्रमित कर रहे हैं।

- ग. मैसर्स ओबिकान ग्लास कंपनी ने अपने प्रचालनों को प्रारंभ करने के संबंध में भ्रामक एवं गलत सूचना प्रदान कराई है। उनके वाणिज्यिक प्रस्तुतिकरण से यह स्पष्ट है कि उन्होंने अपना प्रचालन अप्रैल, 2011 में प्रारंभ कर दिया था जबिक वे उसे 01 जुलाई, 2011 दिखा रहे हैं। इसकी जांच की जानी चाहिए और यदि इसे सही पाया जाता है तो गलत आंकड़े प्रदान करने के लिए इस निर्यातक को नामंजूर किया जा सकता है।
- घ. ओबिकान का यह अनुरोध स्वीकार कर दिया जाना चाहिए कि शुरूआती लागत समायोजन को स्वीकार किया जाए क्योंकि वह प्रत्युत्तर के अगोपनीय पाठ का एक भाग नहीं है और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उन्होंने अपना वाणिज्यिक प्रचालन जांच की अवधि से पहले ही प्रारंभ कर दिया था। विधि एवं उपलब्ध नीतिशास्त्र के अनुसार जब कोई फर्म अपना वाणिज्यिक प्रचालन जांच की अवधि के दौरान प्रारंभ करती है उसे तभी स्टार्ट-अप समायोजन की अनुमित दी जा सकती है। यह संदेह से परे है कि मैसर्स ओबिकान ने अपना प्रचालन जांच पहले ही प्रारंभ कर दिया था।
- ङ. निर्यातक ने प्राधिकारी को इस तथ्य का प्रकटन न करके भी भ्रमित किया है कि निर्यात बिक्रियों और घरेलू बिक्रियों और निर्यात एवं घरेलू बिक्रियों के बीच अंतर का चार्ट बनाते समय पैकिंग, भाड़ा, सुपुर्दगी शर्तों एवं भुगतान शर्तों आदि में भारी अंतर है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने घरेलू बाजार को उनके द्वारा प्रदान कराए जा रहे सेवा सहायता के बारे में भी कोई विवरण प्रदान नहीं कराया है।
- च. मैसर्स ओबिकान ग्लास कंपनी द्वारा प्रदान कराई गई अधूरी सूचना को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग प्राधिकारी से यह विनम्र प्रार्थना करता है कि वह इस जांच के प्रयोजनार्थ उनके सामान्य मूल्य को नामंजूर कर दें।
- छ. घरेलू उद्योग ने जांच की कार्रवाई के दौरान जहां कहीं आवश्यक हुआ जांच के दौरान अपेक्षित सभी साक्ष्य प्रदान कराए हैं। अत:, हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क गलत है कि कोई भी सूचना प्रदान नहीं कराई गई है और उसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।
- ज. ओबिकान द्वारा अपने दावों में तथ्यात्मक असंगतता की पूर्वावधारण के बिना यह प्रस्तुत किया जाता है कि स्टार्ट-अप लागत समायोजन के दावे उक्त निर्यातक को भी इस आधार पर उपलब्ध नहीं है कि उन्होंने सर्वसम्मति से अपना वाणिज्यिक उत्पादन जांच की अविध से बहुत पहले ही शुरू कर दिया था। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 3(ii) की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जो निम्नवत पठित है –
  - "(ii) खंड (i) और ऊपर उपखंड (i) में उल्लिखित लागत आबंटन में पहले से उल्लेख न होने पर निर्दिष्ट प्राधिकारी लागत के उन अनावर्ती मदों के लिए भी समुचित समायोजन करेंगे जिनका बाद में लाभ प्राप्त होता है और/या मौजूदा उत्पाद या उन परिस्थितियों के लिए जिनमें जांच की अविध के दौरान लागत पर स्टार्ट-अप प्रचालनों के कारण प्रभाव पड़ता है।
- झ. उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कि नियमों में निर्दिष्ट प्राधिकारी को केवल जांच की अवधि के दौरान उस लागत को समुचित रूप से समायोजित करने का अधिकार प्राप्त है जो स्टार्ट-अप प्रचालन द्वारा प्रभावित होती है। दूसरे शब्दों में, इस खंड के अंतर्गत इन समायोजनों की अनुमित केवल तभी है जब स्टार्ट-अप प्रचालन जांच की अविध के दौरान हुए हों और उनसे उस अविध की लागत प्रभावित हुई हो।
- ञ. यह भी नोट किया जाए कि ओबिकान की स्थापना वर्ष 2010 में किसी समय की गई थी और उसका वाणिज्यिक उत्पादन, जैसा कि निर्यातक उत्पादक की वेबसाइट से स्पष्ट है, फरवरी, 2011 में प्रारंभ हुआ था चूंकि यह एक सर्वसम्मत तथ्य है कि स्टार्ट-अप प्रचालन जांच की अवधि के दौरान नहीं हुआ था, इसलिए स्टार्ट-अप प्रचालन के कारण समयोजन करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, निर्यातक इस समायोजन की मांग नहीं कर सकता है क्योंकि निर्यातक ने अपना प्रचालन जांच की अवधि में प्रारंभ नहीं किया था।
- ट. मैसर्स ओबिकान द्वारा दावा किया गया स्टार्ट-अप व्यय को अनुबंध-1 के पैराग्राफ 3(ii) के अंतर्गत समायोजन के लिए नामंजूर कर दिया जाना चाहिए क्योंकि यह एक अविवादित तथ्य है कि मैसर्स ओबिकान एक सुस्थापित फैक्टरी थी

क्योंकि उसकी स्थापना वर्ष 2010 में की गई थी और उन्होंने अपना वाणिज्यिक उत्पादन फरवरी, 2011 में, अर्थात जांच की अवधि अक्तूबर, 2011 से दिसम्बर, 2012 से काफी पहले, प्रारंभ कर दिया था। यह प्रकल्पना करते हुए, परंतु इसे स्वीकार न करते हुए कि उन्होंने अपना वाणिज्यिक उत्पादन जुलाई, 2011 में प्रारंभ किया, तब भी तो यह जांच की अवधि से बहुत पहले किया गया और इसलिए यह ऊपर उदधृत प्रावधानों के अनुसार किसी भी प्रकार का समायोजन प्राप्त करने का पात्र नहीं है।

- ठ. स्टार्ट-अप लागत को हैंडलिंग करने के मुद्दों का यूएस विधि (अधिनियम की धारा 773(च) (1)(ग) (ii) में बड़े वाक्पट ढंग से वर्णन किया गया है, जिसमें स्टार्ट-अप लागत की संगणना करने की क्रियापद्धति पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। उपर्युक्त धारा से निम्नलिखित का स्पष्टीकरण हो जाता है :
  - (i) यह कि यूएस विधि विशेष रूप से अधिदेशित करती है कि प्राधिकारी को स्टार्ट-अप अविध की शुरूआत एवं स्टार्ट-अप अविध की समाप्ति का अच्छी तरह से अभिज्ञात कर लेना चाहिए [देखें 773(च) (1) (π) (ii) (4) (1)]।
  - (ii) यह कि कुछ विशिष्ट दिशानिर्देश एवं सूझबूझ है जिसका स्टार्ट-अप अविध की समाप्ति का निर्धारण करने के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। [देखें 773(च) (1) (ग) (ii) (2) (1)]। यह विधियां ठोस आर्थिक सिद्धांतों पर आधारित हैं और यद्यपि भारत में ऐसे कोई ठोस दिशानिर्देश नहीं हैं फिर भी भारत में उनका प्रयोग किया जाना चाहिए।
  - (iii) यह कि यूएस विधि में विशिष्ट रूप से यह प्रावधान किया गया है कि किसी उत्पादक की भावी मात्रा या लाभ के प्रक्षेपणों को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए [देखें 19 सीएफआर 35.407(घ) (3) (ii)]। यह प्रस्तुत किया जाता है कि किसी निर्यातक की लागत की संगणना परिकल्पना या स्वयंभू प्रक्षेपणों के आधार पर करने का कोई पूर्वोदाहरण नहीं है। प्राधिकारी की यह सतत परम्परा रही है कि जहां तक निर्यातकों का संबंध है, उनके बारे में वे केवल वास्तविक लागत पर ही ध्यान देते हैं। इस परस्पर और विधि की सामान्य स्थिति से विपक्षित होने का कोई कारण नहीं है।
  - (iv) यह कि यूएस विधि में प्रावधान है कि वाणिज्यिक उत्पादन के शुरूआती चरण में उससे जुड़े कई तकनीकी कारकों के कारण जांच की अविध के दौरान उत्पादन स्तर सीमित होना चाहिए।
- ड. पुन: यह प्रस्तुत किया जाता है कि स्टार्ट-अप लागत को संपूर्ण विश्व में वास्तविक लागत और एक तर्कसंगत समयावधि के अंदर स्टार्ट-अप लागत के लिए परिकलित उत्पादन लागत के बीच अंतर को परिशोधित करके समायोजित किया जाता है। वर्तमान मामले में यह अवधि बड़ी अभिलक्षक रूप से 15-20 वर्षों की है जो भट्टी के जीवन काल के समनुरूप है।
- ढ. उपर्युक्त को देखते हुए यह स्पष्ट है कि स्टार्ट-अप लागत के कारण समायोजन की अनुमति देने के लिए यह आवश्यक होगा कि :
  - (i) स्टार्ट-अप लागत का प्रभाव जांच की अवधि के अंदर होना चाहिए।
  - (ii) यह प्रदर्शित होना चाहिए कि जांच की अवधि के दौरान उत्पादन स्तर वाणिज्यिक उत्पादन के शुरूआती चरण के साथ जुड़े तकनीकी कारणों से सीमित थे।
  - (iii) निर्यातक द्वारा स्टार्ट-अप लागत का विवरण उनका समायोजन के रूप में दावा करने के लिए प्रदान कराया जाना चाहिए।
  - (iv) समायोजन का दावा साक्ष्य, आंकड़ों एवं सूचना या विधिवत प्रमाण पर आधारित होना चाहिए जिससे कि समायोजन को न्यायोचित ठहराया जा सके।
  - (v) स्टार्ट-अप अवधि की समाप्ति की पहचान करने के लिए साक्ष्यों का विवरण दिया जाना चाहिए।
  - (vi) उत्पाद या मशीनरी के जीवन की स्टार्ट-अप अवधि के उत्तरवर्ती समय की तर्क संगत अवधि के लिए स्टार्ट-अप लागत का परिशोधन का ब्यौरा दिया जाना चाहिए।
- ण. घरेलू उद्योग ने अपने प्रस्तुतिकरण में यह भी उल्लेख किया है कि प्रत्युत्तर के अगोपनीय पाठ और ओबिकान की वेबसाइट में उल्लेख है कि यह संयंत्र एक नया संयंत्र नहीं है क्योंकि उसे जांच अवधि के पहले स्थापित किया गया था।

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त कोई भी आवश्यक शर्त या अपेक्षा को पूरा नहीं किया जिससे कि स्टार्ट-अप लागत समायोजन करने का दावा करने की अनुमित दी जा सके। घरेलू उद्योग ने पुन: यह प्रस्तुत किया है कि परिशिष्ट 8 का अगोपनीय पाठ लागत निर्धारण के तत्व को भी व्यक्त नहीं करता जिससे यह संदेह उत्पन्न हो रहा है कि वे या तो कुछ छिपाने का प्रयास कर रहे हैं या प्राधिकारी को भ्रमित कर रहे हैं। यह प्रस्तुत किया जाता है कि किसी भी निर्यातक को बिना कोई कारण बताए लागत तत्व को भी गोपनीय रखने की अनुमित नहीं दी जा सकती है। उन्होंने इसके अतिरिक्त, यह प्रस्तुत किया है कि यह तथ्य कि वे अपना समायोजन तथाकथित स्टार्ट अप लागत के कारण करना चाहते थे, उसे उनके प्रत्युत्तर तथा अन्य पत्राचार के अगोपनीय पाठ में बड़ी चतुराई से या धृष्टता से छिपाया गया था। पहली बार लिखित प्रस्तुतिकरणों में निर्यातक का "स्टार्ट अप लागत" के संबंध में दावा सामने आया था।

- त. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए स्टार्ट-अप लागत के कारण सामान्य मूल्य का समायोजन करने के लिए किसी भी दावे की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।
- थ. उपर्युक्त की पूर्वावधारणा के बिना यदि निर्यातक ने सत्यापन भ्रमण के दौरान कोई अतिरिक्त सूचना/साक्ष्य प्रस्तुत किया है तो वह घरेलू उद्योग को उसकी टिप्पणियों के लिए प्रदान किया जाना चाहिए। यह हमारे तर्क की पूर्वावधारणा के बिना है कि सत्यापन दौरे के दौरान या सार्वजनिक सुनवाई समाप्त हो जाने के पश्चात कोई नई सूचना नहीं ली जा सकती है। माननीय प्राधिकारी सीआर क्वाइल्स के मामले का संदर्भ ग्रहण करें जिसमें घरेलू उद्योग की तकनीकी क्षमता के संबंध में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम द्वारा एक विस्तृत रिपोर्ट केवल इस आधार पर नामंजूर कर दी गई थी कि वह सार्वजनिक सुनवाई के उपरांत दायर की गई।
- द. निर्यातक के इस अनुरोध को स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि उसे संदर्भ कीमत शुल्क प्रदान किया जाए। यह प्रस्तुत किया जाता है कि संदर्भ कीमत आधारित शुल्क, संबद्ध वस्तु की कीमत एवं लागत उतार-चढ़ाव को ध्यान में नहीं रखती है। ऐसे परिदृश्य में संदर्भ कीमत पर आधारित शुलक घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों के विरूद्ध पर्याप्त एवं कारक संरक्षण देने में सक्षम नहीं होगा।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

- 33. 9क (1) (ग) किसी वस्तु के संबंध में "सामान्य मूल्य" का आशय -
- (i) उपनियम (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश अथवा भू-भाग में खपत के उद्देश्य से व्यापार के सामान्य अनुक्रम में समान वस्तु के लिए तुलनीय कीमत है; अथवा
- (ii) निर्यातक देश या भूभाग की घरेलू बाजार में व्यापार के सामान्य अनुक्रम में जब उस सामान समान वस्तु की बिक्री न होती हो अथवा निर्यातक देश या भू-भाग की घरेलू बाजार में विशिष्ट बाजार परिस्थितियों अथवा बिक्री की न्यून मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियां समुचित तुलना करने की अनुमति न देती हों तो उस वस्तु का सामान्य मूल्य या तो-
- (क) उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा-निर्धारित उस समान वस्तु की वह तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत होगी जिस पर उसका निर्यात किसी निर्यातकर्ता देश या (भू-भाग से) किसी उपयुक्त तृतीय देश को किया जाता है; अथवा
- (ख) उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री या सामान्य लागत तथा लाभ के लिए किए गए अन्य संवर्धनों सहित उद्गम के देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत होती है:
- 34. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नाविलयां यह सुझाव देते हुए भेजी कि वे विहित स्वरूप और ढंग से सूचना प्रदान करें। तथापि, निम्नलिखित उत्पादकों और निर्यातकों को छोड़कर संबद्ध देशों के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने अपनी प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर करे इस जांच में सहयोग नहीं दिया।
  - (i) मैसर्स ओबिकान ग्लास कंपनी सऊदी अरेबिया
  - (ii) मैसर्स अरेबियन यूनाइटेउ फ्लोट ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया
  - (iii) मैसर्स इभिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, आबुधाबी, युएई
  - (iv) मैसर्स घानी ग्लास कंपनी, पाकिस्तान

- 35. चूंकि उपर्युक्त कंपनियों ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया था इसलिए प्राधिकारी ने इन कंपनियों के संबंध में ही व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है। उनके लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए अपनाई गई सामान्य क्रियापद्धित यह थी कि पहले यह देखा गया कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री उनकी गृह बाजार में प्रतिनिधिक बिक्री थी और क्या वह घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की अनुमित देने के लिए उपयुक्त है और क्या प्रतिवादियों द्वारा प्रदान कराए गए आंकड़ों के अनुसार व्यापार का सामान्य अनुक्रम परीक्षण सत्यापन के अध्याधीन पूरा होता था। जहां कहीं प्रतिवादियों ने अपनी गृह बाजारों में की गई बिक्री का संव्यवहार-वार ब्यौरा प्रदान कराया है वहां इस तरह प्रदान कराई गई सूचा पर संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए उस पर, अग्रिम जांच एवं सत्यापन के अध्यधीन भरोसा किया गया है। अन्य मामलों में अर्थात जहां प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा अपनी गृह बाजारों में संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री प्रतिनिधिक और घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की अनुमित देने के लिए व्यवहार्य नहीं है और जहां व्यापार की सामान्य अनुक्रम जांच संतोषजनक नहीं थी वहां संबंधित निर्यातकों द्वारा एसजीएंडए व्ययों सिहत उत्पादन की लागत का दावा सत्यापन के पश्चात स्वीकार कर लिया गया और लाभ के पक्ष में 5 प्रतिशत जोड़कर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया है।
- 36. संबद्ध देशों के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों से सहयोग न मिलने की स्थिति में प्राधिकारी सामान्य मूल्य का निर्धारण करार के अनुच्छेद 6.8 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार करने का प्रस्ताव करते है।
- 37. तदनुसार, प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नवत करने का प्रस्ताव किया है।

### मैसर्स ओबिकान ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया के मामले में सामान्य मूल्य

- 38. प्रश्नावली प्रत्युत्तर की जांच की गई और यह पाया गया कि प्रतिवादियों ने बिक्री कीमत का विवरण अपने प्रत्युत्तर के परिशिष्ट 3क और 3ख में प्रदान कराया है। यह नोट किया गया कि इस तरह निर्धारित भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत भारित औसत घरेलू उत्पादन लागत से कम थी और यह भी नोट किया गया कि कुल बिक्रियों के 20 प्रतिशत से अधिक संव्यवहारों में घाटा हुआ है। अत: प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के प्रावधानों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण लाभदायक बिक्रियों के आधार पर किया है। इस निर्यातक की सामान्य मूल्य का आकलन \*\*\* यूएसडी डालर प्रति एमटी किया गया।
- 39. स्टार्ट अप लागत के आधार पर लागत का समायोजन करने के लिए निर्यातक के दावे के संबंध में प्राधिकारी यह पाते हैं कि विधि में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 3 में उल्लिखित शर्तों के अनुसार इन समयोजनों के लिए उसमें उल्लिखित शर्तों के अध्यधीन करने का प्रावधान है। उपर्युक्त पैराग्राफ का संगत भाग यहां प्रस्तुत किया जा रहा है :
  - "(ii) उपर्युक्त खंड (1) के उपखंड (i) उल्लिखित लागत के आबंटन जब तक पहले से ही अन्यथा उल्लिखित न हो तब तक निर्दिष्ट प्राधिकारी लागत की उन अनावर्ती मदों के लिए समुचित समायोजन करेंगे जो वर्तमान उत्पाद या उन परिस्थितियों में और/या अधिक इजाफ करता हो जिनमें जांच की अवधि के दौरान लागत स्टार्ट अप प्रचालनों के कारण प्रभावित होती हो।"
- 40. यह नोट किया जाता है कि इस प्रावधान में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि "स्टार्ट अप लागत" का वास्तविक आशय क्या है और न ही यह उन परिस्थितियों के संबंध में कोई दिशानिर्देश प्रदान करता है जिनके अंतर्गत यह समायोजन करने की अनुमित दी जाती हो। यह समायोजन करने के लिए कोई क्रियाविधि भी निर्धारित नहीं है। तथापि, घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी का ध्यान इस मुद्दे के संबंध में यूएस विधि के प्रावधानों एवं परम्पराओं की ओर काफी विस्तार के उदधृत किया है। हालांकि यूएस विधि किसी भी रूप में प्राधिकारी पर बाध्यकारी नहीं हैं, फिर भी प्राधिकारी का यह विचार है कि उक्त प्रावधानों की आर्थिक औचित्यता एवं क्रियापद्धित का महत्व अभी समाप्त नहीं हुआ है। उपर्युक्त प्रावधानों की सावधानीपूर्वक जांच करने से यह स्पष्ट होता है कि स्टार्ट अप लागत दुर्बोधतपूर्ण ढंग से उन दिक्कतों से संबंधित है, जो किसी उद्योग को अपने शुरूआती स्तर पर सामना करनी पड़ती हैं। निश्चित रूप से, यह समस्याएं तकनीकी मुद्दों से संबंधित हो सकती है, न कि किसी अन्य

कारण से मंथरता से। द्वितीयक यह स्पष्ट रूप से पहचान लेने की जरूरत है फिर स्टार्ट अप अविध के शुरूआत/मुद्दे क्या है और अंतिम बिंदु क्या हैं। यूएस विधि विशेष रूप से यह प्रावधान करती है कि चरम उत्पादन स्तर को प्राप्त कर लेने का आशय यह नहीं होगा कि यह स्टार्ट अप अविध की पहचान करने का एक मानक है क्योंकि किसी कंपनी द्वारा अपनी इष्टतम क्षमता उपयोग प्राप्त कर लेने से पहले ही स्टार्ट अप अविध समाप्त हो सकती है। यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि यूएस विधि में विशेष तौर पर उत्पादक के भावी उत्पादन मात्रा या लागत के प्रक्षेपणों को उत्पादक द्वारा प्रयोग किए जाने का स्पष्टत: आर्थिक युक्तिसंगतता के आधार पर निषेध करती है क्योंकि किसी निर्यातक को ऐसे समायोजनों के करने की परिकल्पनात्मक या स्वेच्छाचारी ढंग से किए गए अनुमानों के आधार पर नहीं दी जा सकती है।

- 41. प्राधिकारी घरेलू उद्योग के इस आपत्ति को नोट करते हैं कि निर्यातक ने इस तथ्य का संकेत नहीं दिया है कि उनका इरादा निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के अगोपनीय पाठ में स्टार्ट अप लागत के कारण समायोजन का दावा करने का था। घरेलू उद्योग ने जोरदार ढंग से यह मुद्दा भी उठाया है कि निर्यातक सुनवाई पश्चात किए गए लिखित प्रस्तुतिकरणों के स्तर तक उक्त सुचना को इरादतन रूप से प्रदान नहीं किया था।
- 42. उपर्युक्त दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का विचार है कि निर्यातक को इस तरह की वाणिज्यिक प्रचालन पूर्व लागत जिनका जांच की अविध के दौरान लागत पर कुछ प्रभाव पड़ता है के आधार पर समायोजन करने का दावा करने का अधिकार है। इस असाधारण लागत का दीर्घ अविध में परिशोधन किया जाना चाहिए जो सामान्यत: पिरसंपित्यों के उपयोगी जीवनकाल तक होना चाहिए, इस संबंध में यह तर्क दिया जा सकता है कि इस लागत का जांच की अविध के दौरान, असाधारण स्टार्ट अप लागत के कारण लागत पर कोई अनुचित प्रभाव न पड़े। इस संबंध में आयकर अधिनियम की धारा 35घ का उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण होगा जिसमें प्रारंभिक व्ययों का दीर्घ समयाविध तक समायोजन करने की अनुमित है। यह अधिगम इसलिए भी तर्क संगत है क्योंकि स्टार्ट अप चरण के दौरान असाधारण लागत पर किसी निश्चित अविध पर बोझ नहीं पड़ेगा। प्राधिकारी यूएस विधि के इस तर्क में भी अच्छाई पाते हैं जिसमें उत्पादक की भावी मात्रा या लागत के संबंध में प्रत्याशाओं का विशेष रूप से निषेध करने का उल्लेख है। वास्तविक लागत में कोई समायोजन वास्तविक आंकड़ों के आधार पर होना चाहिए न कि स्वेच्छाचारी एवं अविवेकपूर्ण ढंग से। प्राधिकारी को इस तथ्य का पूर्ण सज्ञान है कि इस तरह का असाधारण समयोजन करने का मतलब होता कि उत्पादन/निर्यातक की वास्तविक लागत से बिल्कुल अलग हो जाना, इसलिए इसका दायित्व पूरी तरह से इन समायोजनों का दावा करने वाले पर जाता है। यह देखा गया कि निर्यातक का यह दावा उस प्रक्रिया एवं जांच को पूरा नहीं करता है जिससे उन लागतों को "स्टार्ट अप लागत माना जाता है। इस मामले के तथ्यों एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए निर्यात विधि के अंतर्गत या तथ्यों के आधार पर अपने को दावे को न्यायोचित ठहराने में समर्थ नहीं हो पाया है।
- 43. निर्यातक के प्रस्तावित सामान्य मूल्य का उल्लेख पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है।

## मैसर्स ओबिकान ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया के मामले में निर्यात कीमत

44. प्राधिकारी मैसर्स ओबिकान के परिशिष्ट-2 से यह नोट करते हैं कि इसने अपने असंबद्ध पक्षकारों को भारत में \*\*\* एसआर पर मूल्यांकित \*\*\* एमटी संबद्ध वस्तु का प्रत्यक्ष निर्यात किया था। ओजीसी ने (i) अंतरदेशीय एवं समुद्रपारीय भाड़ा (ii) समुद्रपारीय बीमा (iii) क्रेडिट व्यय (iv) पत्तन प्रहस्तन और सीमाशुल्क ब्रोकर शुल्क (v) बैंक प्रभारों के कारण समायोजन का दावा किया था। सत्यापन दौरे के दौरान यह स्पष्टीकरण किया गया कि घरेलू बिक्री तथा निर्यात बिक्री के लिए व्यय की गई पैकिंग लागत में कोई अंतर नहीं है और इसलिए निर्यातक ने इस संबंध में किसी समायोजन का दावा नहीं किया है। प्राधिकारी ओजीसी द्वारा भारत को किए गए निर्यातों और दावा किए गए समायोजन का सत्यापन किया है और \*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी निवल निर्यात कीमत का निर्धारण किया है।

## मैसर्स अरेबियन यूनाइटेड फ्लोट ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया के मामले में सामान्य मूल्य

45. प्रश्नावली प्रत्युत्तर का अध्ययन किया गया और यह पाया गया कि प्रतिवादी ने अपने प्रत्युत्तर के संगत परिशिष्टों में संबद्ध वस्तु की बिक्री का ब्यौरा प्रदान किया है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए विवरणों का आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातक ने विनिर्माण लागत को अपनी संगत परम्परा के अनुसार विचाराधीन उत्पाद और गैर-विचाराधीन उत्पाद के बीच आबंटित की है। सत्यापन के दौरान प्राधिकारी को अपने दावे के समर्थन में कोई दस्तावेजी साक्ष्य प्रदान नहीं कराया गया था। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी सह सराहना करने की स्थिति में नहीं हैं कि इस उत्पाद की उत्पादन लागत को उत्पादन मात्रा के बजाय बिक्री मात्रा के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है। इसलिए प्राधिकारी ने लागत आबंटन में संशोधन किया और उत्पादन/बिक्री लागत को फिर से निर्धारित किया। फिर से निर्धारित की गई बिक्री लागत पर, निर्यातक द्वारा की गई घरेलू बिक्रियां व्यापार के सामान्य अनुक्रम परीक्षण में खरी नहीं उतरी। अत: प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्माण संशोधित उत्पादन लागत पर और बिक्री लागत में 5 प्रतिशत का लाभ जोड़ने के बाद किया है। निर्यातक के लिए इस तरह निर्धारित किया गया सामान्य मूल्य यूएस डाली प्रति \*\*\* एमटी है।

### मैसर्स अरेबियन यूनाइटेड फ्लोट ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया के मामले में निर्यात कीमत

46. जांच की अवधि के दौरान कंपनी ने भारत को \*\*\* एमटी संबद्ध वस्तु का \*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी की औसत बीजक कीमत पर निर्यात किया है। निर्यातक ने समुद्री भाड़ा, अंतरदेशीय भाड़ा और प्रहस्तन प्रभार, बीमा (सीआईएफ) के मामले में) के कारण समायोजन का दावा किया है। आंकड़ों का आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया और इस तरह सत्यापित आंकड़ों के आधार पर \*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी निवल निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है।

### सऊदी अरेबिया के उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

47. सऊदी अरेबिया में अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुरूप उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है और वह \*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी निर्धारित किया गया है।

#### सऊदी अरेबिया के उत्पादकों/निर्यातकों के मामले में निर्यात कीमत

48. सऊदी अरेबिया के अन्य निर्यातकों द्वारा इस जांच के सहयोग न करने के कारण अन्य निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) में उल्लिखित शर्तों के अनुरूप किया गया है। इस तरह निर्धारित निवल निर्यात कीमत \*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी है।

## मैसर्स एमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, आबूधाबी, यूएई के मामले में सामान्य मूल्य

49. उनके प्रत्युत्तर की जांच की गई और यह पाया गया कि प्रतिवादी ने संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत का ब्यौरा अपने प्रत्युत्तर के संगत परिशिष्टों में दिया है। यह नोट किया गया कि इस तरह निर्धारित की गई भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत भारित औसत घरेलू उत्पादन लागत से कम थी और यह भी नोट किया गया कि 20 प्रतिशत से अधिक संव्यवहारों में घाटा हो रहा था और इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के परिशिष्ट-1 के प्रावधानों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण लाभदायक बिक्रियों के आधार पर किया है। निर्यातक का सामान्य मूल्य \*\*\* यूएसडी डालर प्रति एमटी आकलित किया गया। निर्यातक द्वारा दावाकृत समायोजन का सत्यापन किया गया और विशुद्ध पाई गई सीमा तक इसे स्वीकार किया गया। निर्यातक के लिए इस तरह निर्धारित सामान्य मूल्य \*\*\* यूएसडी प्रति एमटी है।

## मैसर्स एमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, आबूधाबी, यूएई के मामले में निर्यात कीमत

50. जांच की अविध के दौरान मैसर्स अरेबियन एिमरेट्स ने \*\*\* एमटी संबद्ध वस्तु की भारत में बिक्री \*\*\* यूएसडी डालर प्रति एमटी की औसत कीमत पर भारतीय बाजार में की थी। निर्यातक ने अंतरदेशीय भाड़ा, समुद्रपारीय भाड़ा, निकासी एवं प्रहस्तन प्रभार, सामुद्रिक बीमा के कारण समायोजन का दावा किया है और उसे सत्यापन के पश्चात स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार, इस निर्यातक के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण \*\*\* यूएसडी डालर प्रति एमटी किया गया है।

### यूएई के अन्य उत्पादकों और निर्यातकों के मामले में सामान्य मूल्य

51. यूएई के अन्य निर्यातकों द्वारा इस जांच के सहयोग न करने के कारण अन्य निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) में उल्लिखित शर्तों के अनुरूप किया गया है। इस तरह निर्धारित निवल निर्यात कीमत\*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी है।

### यूएई के अन्य उत्पादकों एवं निर्यातकों के मामले में निर्यात कीमत

52. इस जांच में अन्य निर्यातकों के असहयोग को ध्यान में रखते हुए अन्य निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण यूएई के सहयोगकर्ता निर्यातकों की न्यूनतम निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है क्योंकि निर्यातकों के आंकड़ों के अनुसार समायोजन की अनुमित देने के लिए अनुमित के पश्चात वह सर्वाधिक उपलब्ध तथ्य है। इस तरह निर्धारित की गई निर्यात कीमत की तुलना यूएई के सहयोगकर्ता उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य से की गई। तदनुसार, यूएई के सभी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण पाटन मार्जिन तालिका में किए गए उल्लेख के अनुसार किया गया है।

### मैसर्स घानी ग्लास कंपनी पाकिस्तान के मामले में सामान्य मूल्य

53. उनके प्रत्युत्तर की जांच की गई और यह पाया गया कि प्रतिवादी ने संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत का ब्यौरा अपने प्रत्युत्तर के संगत परिशिष्टों में दिया है। यह नोट किया गया कि इस तरह निर्धारित की गई भारित औसत घरेलू बिक्री कीमत भारित औसत घरेलू उत्पादन लागत से कम थी और यह भी नोट किया गया कि 20 प्रतिशत से अधिक संव्यवहारों में घाटा हो रहा था और इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के परिशिष्ट-1 के प्रावधानों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण लाभदायक बिक्रियों के आधार पर किया है। निर्यातक द्वारा दावाकृत समायोजन स्वीकार कर लिया गया है। इस प्रकार निर्यातक के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य \*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी है।

#### मैसर्स घानी ग्लास कंपनी, पाकिस्तान के मामले में निर्यात कीमत

54. जांच की अवधि के दौरान मैसर्स घानी ग्लास लिमिटेड ने \*\*\* एमटी संबद्ध वस्तु की भारत में बिक्री \*\*\* यूएसडी डालर प्रति एमटी की औसत कीमत पर भारतीय बाजार में की थी। निर्यातक ने अंतरदेशीय भाड़ा, समुद्रपारीय भाड़ा, निकासी एवं प्रहस्तन प्रभार, सामुद्रिक बीमा के कारण समायोजन का दावा किया है और उसे सत्यापन के पश्चात स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार, इस निर्यातक के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण \*\*\* यूएसडी डालर प्रति एमटी किया गया है।

### पाकिस्तान के अन्य उत्पादकों, निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य

55. पाकिस्तान के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है और इस तरह निर्धारित निवल निर्यात कीमत \*\*\* यूएसडी डालर प्रति एमटी है।

### पाकिस्तान के अन्य उत्पादकों एवं निर्यातकों के मामले में निर्यात कीमत

56. पाकिस्तान के अन्य निर्यातकों द्वारा इस जांच के सहयोग न करने के कारण अन्य निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) में उल्लिखित शर्तों के अनुरूप किया गया है। इस तरह निर्धारित निवल निर्यात कीमत \*\*\* यूएस डालर प्रति एमटी है।

#### पाटन मार्जिन

57. अपर यथानिर्धारित संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत एवं सामान्य मूल्य पर विचार करने के पश्चात संबद्ध वस्तु के लिए समग्र रूप से पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नवत किया गया है। यह देखा जाता है कि संबद्ध वस्तु के लिए पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक और महत्वपूर्ण हैं:

देश	निर्यातक/आयतक	सामान्य मूल्य	न्य मूल्य निवल निर्यात कीमत		मार्जिन
		(यूएस डालर/ एमटी)	(यूएस डालर/ एमटी)	(यूएस डालर/ एमटी)	% रेंज
सऊदी अरेबिया	ओबिकान ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया	***	***	***	20-30
सऊदी अरेबिया	अरेबिया यूनाइटेड फ्लोट ग्लास कंपनी सऊदी अरेबिया	***	***	***	55-65
सऊदी अरेबिया	असहयोगकर्ता उत्पादक/ निर्यातक	***	***	***	85-95
यूएई	इमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी यूएई	***	***	***	25-35
	असहयोगकर्ता उत्पादक/ निर्यातक	***	***	***	40-50
पाकिस्तान	घानी ग्लास कंपनी, पाकिस्तान	***	***	***	25-35
पाकिस्तान	असहयोगकर्ता उत्पादक/ निर्यातक	***	***	***	50-60

#### क्षति का आकलन तथा क्षति एवं कारणात्मक संबंधों की जांच

### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

- 58. जांच की अवधि के दौरान क्षति के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किए और उन्हें प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया।
- (i) डीजीएडी को न केवल याचिका कंपनी के बल्कि बाजार में अन्य घरेलू उत्पादकों के आंकड़ों की भी जांच करना अपेक्षित है। बाजार में 5 उत्पादक है, जैसा कि याचिकाकर्ता ने उल्लेख किया है। ऐसा मामला होने पर, डीजीएडी सूचना प्रस्तुत करे या अन्य घरेलू उत्पादकों से यह अपेक्षा करे कि वह क्षति का मूल्यांकन करने के प्रयोजनार्थ आवश्यक सूचना दें।
- (ii) क्षति अवधि के दौरान आयात कीमत बढ़ गई है, इसलिए याचिकाकर्ता का यह दावा कि पाटित आयात लाभप्रदायकता को प्रभावित कर रहे हैं और अपनी बिक्री कीमत बढ़ाने की इसकी अक्षमता का कोई महत्व नहीं है। मात्रा प्रभाव भी नहीं है।
- (iii) यह प्रस्तुत किया जाता है कि आवेदक घरेलू उत्पादकों ने अनुच्छेद 3.4 के संबंध में अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया है जो यह अधिदेशित करता है विभिन्न कारकों में "वास्तविक" एवं संभावित गिरावट की जांच की जाए और क्षति का सकारात्मक निष्कर्ष स्थापित किया जाए।
- (iv) यह प्रस्तुत किया जाता है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों के बाजार हिस्से में यद्यपि आधार वर्ष की तुलना में हल्की सी वृद्धि हुई है, इसलिए कोई मात्रात्मक क्षति नहीं हुई।
- (v) घरेलू उद्योग के उत्पादन में भारी सुधार हुआ घरेलू उद्योग ने अपनी संयंत्र क्षमता में विस्तार किया है। अत: इस कारक पर कथित पाटित आयातों का कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा है। यह भी उल्लेख करना विषयानुकूल नहीं है कि यहां भारतीय क्षमता इस उत्पाद के लिए घरेलू मांग की तुलना में बहुत अधिक है।

- (vi) संबद्ध देशों से नगण्य आयात हुए जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई।
- (vii) उत्पादन, उत्पादन क्षमता, बिक्री, रोजगार, उत्पादकता (प्रतिदिन, प्रति कर्मचारी) में स्पष्ट सुधार हुआ है। अत: घरेलू उद्योग द्वारा दावाकृत क्षति में कोई दम नहीं है।
- (viii) सऊदी अरेबिया में आयातों की सीआईएफ कीमत में संपूर्ण क्षति अविध के साथ-साथ जांच की अविध के दौरान भारी वृद्धि हुई है। सीआईएफ कीमत/एमटी जो वर्ष 2009-10 में 10790 एमटी थी से बढ़कर वर्ष 2010-11 में 11457 एमटी हो गई और यह वर्ष 2011-12 में 12773 एमटी हो गई। जांच की अविध में इसमें और अधिक वृद्धि हुई और यह 14942 एमटी हो गई, जो कि वर्ष 2009-10 की सीआईएफ कीमत/एमटी से 38 प्रतिशत की वृद्धि है।
- (ix) सऊदी अरेबिया के हितबद्ध पक्षकारों ने यह प्रस्तुतीकरण किया कि जब आवेदकों का 93 प्रतिशत बाजार पर कब्जा है, तो यह सोचना कि सऊदी अरेबिया से आयात की मात्रा, जो कुल मांग की 5 प्रतिशत से भी कम है, आवेदकों की क्षति कारित करने में सक्षम होगी।
- (x) कीमतों में वृद्धि और फिर लाभ में कमी यह संकेत देती है कि क्षति के बीच उसका कोई संबंध नहीं है जो आवेदक घरेलू उत्पादकों द्वारा सहन की जा रही है।
- (xi) एक आवेदक घरेलू उत्पादक, मैसर्स एचएनजी फ्लोट ग्लास लिमिटेड ने मैसर्स सेट गोबैन ग्लास इंडिया लिमिटेड (एसजीजीआईएल) के विरूद्ध भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग के समक्ष सूचना प्रस्तुत की है जिसमें उसने एसजीजीआईएल पर कुछ आरोप लगाए हैं जिनमें प्रभावी स्थिति का दुरूपयोग, आक्रामक एवं अनुचित कीमत निर्धारण कार्यनीति, प्रतिस्पर्धा रोधी एवं विकृतिकारी विपणन कार्यनीतियां, शामिल है, इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि इसके कारण ही प्रतिस्पर्धा में कमी आ रही है।
- (xii) एचएनजी फ्लोट ग्लास लिमिटेड ने भी विशेष रूप से यह उल्लेख किया है कि सेंट गोबैन ग्लास इंडिया लिमिटेड बाजार में क्लीयर फ्लोट ग्लास की कीमतों में कमी के लिए उत्तरदायी है।
- (xiii) आवेदक घरेलू उत्पादकों के बीच आंतरिक प्रतिस्पर्धा एक नाजुक कारक है जिसे क्षित का निर्धारण करते समय ध्यान में रखना चाहिए। प्रतिवादी यह प्रस्तुत करते हैं कि प्राधिकारी को क्षिति के संबंध में कोई निर्धारण करते समय इस कारक को समुचित महत्व देना चाहिए।
- (xiv) उपर्युक्त के अलावा निम्नलिखित कारक स्पष्टत: यह दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से कथित पाटन और घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है :
  - क. संबद्ध देशों से आयात क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग की तुलना में बहुत ही कम स्तर पर बना रहा जिससे घरेलू उद्योग पर संबद्ध देशों से आयातों का मात्रा प्रभाव नगण्य प्रतीत होता है।
  - ख. उतराई कीमत और कीमत अधोविक्रयण घरेलू उद्योग की कीमत ने बढ़ने की प्रवृत्ति प्रदर्शित की है जिससे घरोलू उद्योग पर कीमत प्रभाव की संभावना समाप्त हो जाता है। वास्तव में आयातों की उतराई कीमत और कीमत अधोविक्रयण और घरेलू उद्योग की कीमत के बीच एक विपरीत संबंध है।
  - ग. एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य जो कथित पाटन एवं क्षित के बीच कारणात्मक संबंध के बारे में याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए सभी तर्कों को नामंजूर कर देता है वह यह है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में और जांच की अविध के दौरान विगत वर्ष की तुलना में वसूली में भारी सुधार हुआ। यदि कथित पाटन और क्षित के बीच कोई कारणात्मक संबंध होता तो ऐसा नहीं हुआ होता। इस प्रकार वर्तमान मामले में कथित पाटन एवं क्षित के बीच विपरीत संबंध है।
  - घ. यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि विगत वर्षों में आधार वर्ष को छोड़कर अन्य कारक ही घरेलू उद्योग को क्षिति कारित कर रहे हैं। याचिकाकर्ता द्वारा यह नहीं दर्शाया गया है कि जांच की अवधि के दौरान यह अन्य कारक मौजूद नहीं थे और उनके द्वारा दावा की गई क्षिति केवल संबद्ध देशों से कथित पाटन के कारण ही हुई है।
  - ङ. अन्य कारणों से होने वाली क्षति तथा कथित पाटन से होने वाली क्षति को अलग-अलग करना आवश्यक है क्योंकि घरेलू उद्योग को आधार वर्ष को छोड़कर विगत वर्षों के दौरान अन्य कारणों से क्षति हो रही थी और यह नहीं दर्शाया गया है कि यह अन्य कारण जांच की अविध के दौरान मौजूद नहीं थे।
  - च. उपर्युक्त तथ्यपरक परिस्थितियों के अंतर्गत, जब क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की केवल अल्प मात्रा ही भारत पहुंची, जब इन आयातों की उतराई कीमत में सतत वृद्धि प्रदर्शित हुई है, जब घरेलू उद्योग की क्षति के मात्रा एवं कीमत दोनों पैरामीटरों में उस समय सुधार प्रदर्शित हुआ है जब याचिकाकर्ता

ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन का आरोप लगाया तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हालात से यह प्रदर्शित होता है कि कथित पाटन एवं कथित क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

- (xv) इसलिए याचिकाकर्ता को क्षति का वास्तविक कारण संबद्ध वस्तु का पाटन नहीं है परंतु उसे अन्य घरेलू उत्पादकों से आंतरिक प्रतिस्पर्धा और अंधाधुंध जांच जैसे अन्य कारणों से क्षति हुई है।
- (xvi) कथित पाटित आयातों के कारण घरेलू कीमतों पर कोई कीमत प्रभाव नहीं है।

### घरेलू उद्योग के विचार

- 59. घरेलू उद्योग ने वर्तमान जांच की कार्रवाई के दौरान क्षति के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं और प्राधिकारी ने उन्हें संगत माना है :
- (i) विचाराधीन उत्पाद के आयात में वर्षों से भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई और जांच की अवधि के दौरान यह वृद्धि बहुत अधिक थी।
- (ii) भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में आयातों में वृद्धि हुई है।
- (iii) मांग में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा बहुत अधिक है। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध के दौरान कमी आई है। यह सब संबद्ध देशों से भारी आयातों के कारण हुआ।
- (iv) विदेशी उत्पादकों के माल में कीमत में कमी कर दिए जाने से भारतीय उत्पादकों के समक्ष केवल एक ही विकल्प रह जाता है वह यह है कि वे या तो अपनी कीमतों को आयात कीमतों में हुए परिवर्तन के अनुरूप बनाए या अपने आर्डर खो दें ओर इस प्रकार उनका बाजार हिस्सा भी समाप्त हो जाए।
- (v) घरेलू उद्योग की कीमतें उन कीमतों के प्रभाव को प्रदर्शित करती हैं जिनकी घरेलू बाजार में आयातकों द्वारा पेशकश की जा रही है।
- (vi) आयातित वस्तु घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रही है। विचाराधीन उत्पाद के संबंध में कीमत अधोरदन बहुत अधिक है।
- (vii) घरेलू उद्योग की मालसूची में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- (viii) लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ और नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में तीव्र गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त, जीजीएल के तुलनपत्र से जीजीएल (एक बहु उत्पाद कंपनी) की लाभप्रदता का कोई निष्कर्ष नहीं निकलता है क्योंकि जीजीएल एक बहु उत्पाद कंपनी है और विचाराधीन उत्पाद उसके उत्पाद समूह का एक उत्पाद है।
- (ix) घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में गिरावट संबद्ध देशों से अलाभकर कीमत पर आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि के कारण आई है।
- (x) बिक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि की तुलना में कम थी और इसलिए पाटित आयात घरेलू उद्योग पर निग्रहणकारी प्रभाव सृजित कर रहे हैं।
- (xi) जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण का संबंध है कि आयातों एवं घरेलू उद्योग पर उनका प्रभाव बहुत ही कम था, यह प्रस्तुत किया जाता है कि सभी संबद्ध देशों से आयात 3 प्रतिशत की अधिकतम सीमा से अधिक है इसलिए यह कहना गलत होगा कि आयात बहुत कम था। इसके अतिरिक्त, उनका मूल्य घरेलू उद्योग की लागत एवं बिक्री कीमत से कम था, इसलिए उनके कारण क्षति हुई। प्राधिकारी यह सराहना करेंगे कि किसी भी निर्यातक ने यह दावा नहीं किया है कि वे संबद्ध वस्तु का पाटन नहीं कर रहे हैं। इसलिए घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी से यह अनुरोध किया है कि प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए सभी दावे नामंजूर कर देना चाहिए।
- (xii) घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन के संबंध में वास्तविक क्षति सहन करनी पड़ी है। इसके अतिरिक्त, यदि वर्तमान स्थिति जारी रही तो घरेलू उद्योग के समक्ष सतत क्षति की चुनौती बनी रहेगी।
- (xiii) यह प्रस्तुत किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकारों ने धृष्टतापूर्ण ढंग से जांच के केवल आरोप वाले हिस्से का ही उल्लेख किया और आयोग के जांच परिणामों को इरादतन रोके रखा। यह रिकार्ड का मामला है कि सीसीआई ने यह धारित किया कि न केवल एसजीजीआईएल अपनी अभिभावी स्थिति का दुरूपयोग नहीं कर रहा है बल्कि वास्तव में यह प्रबल भागीदार भी नहीं है। जांच-परिणाम का संगत भाग यहां उद्धृत किया जा रहा है जिससे कि प्राधिकारी को तत्काल संदर्भ सुलभ हो सके:

#### पैरा 64

''परिणामत:, आयोग का यह विचार है कि विरोधकर्ता पक्षकार के विरुद्ध अधिनियम की धारा 4 के प्रावधानों का उल्लंघन करने का कोई मामला नहीं बनता है और वह इस संबंध में महानिदेशक के जांच परिणामों से अपनी सम्मति व्यक्त करते हैं।"

(xiv) उपर्युक्त को देखते हुए, यह देखा जा सकता है कि निर्यातकों द्वारा सीसीआई जांच का संदर्भ दिया जाना केवल संभ्रम उत्पन्न करने के इरादे से किया गया है और इसमें कोई खूबी नहीं है। यह हमारे आधारभूत तर्क के पूर्वाग्रह के बिना है कि किसी सह आवेदक द्वारा की गई शिकायत यह सिद्ध करती है कि उद्योग के अंदर किसी तरह का टकराववादी माहौल नहीं है और यह कि उनके बीच प्रतिस्पर्धा की स्वस्थ शर्तें हैं। हम माननीय प्राधिकारी का ध्यान प्रतिस्पर्धा आयोग के पूर्ववर्ती निर्णय की ओर भी आकृष्ट करना चाहते हैं जहां आयोग ने बड़े स्पष्ट ढंग से यह कहा है कि ग्लास उद्योग को आयातित वस्तु से भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

- 60. जहां तक कुछ हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुति का सवाल है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को न केवल याचिकाकर्ता कंपनी के आंकड़ों की जांच करना अपेक्षित है बल्कि उन्हें बाजार में अन्य घरेलू उत्पादकों के आंकड़ों की जांच करना भी अपेक्षित है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि नियमों के अंतर्गत याचिकाकर्ता कंपनी ही घरेलू उद्योग है और इसलिए समर्थनकर्ता कम्पनियों के आंकड़ों की जाँच करने की कोई जरूरत नहीं है।
- 61. प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III और डीजीएडी की सुस्थापित परम्परा के अनुसार गैर-क्षतिकारी कीमत की संगणना करने का प्रस्ताव करते हैं।
- 62. घरेलू उद्योग को क्षिति से संबंधित विश्लेषण के संबंध में डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) इन वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव दोनों की वास्तविक जांच करने का प्रावधान है। पाटित आयातों के प्रभाव की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह परीक्षण करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों के समग्र रूप से या भारत में उत्पादन अथवा खपत से संगत रूप से पर्याप्त वृद्धि हुई है। पाटित आयातों का कीमत पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह परीक्षण करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत अधोरदन किया गया है, अथवा इन आयातों के प्रभाव से कीमतों का अन्यथा भारी मात्रा में निग्रहण हो रहा है जिससे वे कीमतों को बढ़ने से रोक रही है, जो अन्यथा पर्याप्त मात्रा में हुई होती।
- 63. इसके अतिरिक्त, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में प्रावधान है कि यदि किसी उत्पाद के आयात एक से अधिक देशों द्वारा किए जा रहे हैं और वे पाटनरोधी जांच के अध्यधीन हैं तो निर्दिष्ट प्राधिकारी यदि निम्नलिखित का निर्धारण करते हैं तो इन आयातों के प्रभावों का संचयी रूप से आकलन करेंगे :
  - (i) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है ओर प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान उत्पाद के आयातों का तीन प्रतिशत है अथवा जहां अलग-अलग देशों के निर्यात तीन प्रतिशत से कम हैं वहां संचयी रूप से यह आयात समान वस्तु के आयातों के सात प्रतिशत से अधिक बनते है; और
  - (ii) आयातित वस्तु और घरेलू समान वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के आलोक में इन आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उपयुक्त होता है।
- 64. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच में आयातित वस्तु तथा घरेलू समान वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के आलोक में घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के प्रभावों का संचयी आकलन करना उपयुक्त होगा और इन देशों से आयातों का पाटन मार्जिन और मात्रा न्यनतम स्तर से अधिक है।

65. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा V में निम्नलिखित उल्लेख है :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर आयात की गई वस्तुओं के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्यों का मूल्यांकन तथा जिसमें बिक्री, लाभ, आउटपुट, मार्किट शेयर, उत्पादक का शेयर, निवेश पर लाभ अथवा क्षमता निर्माण, घरेलू मूल्यों को प्रभावित करने वाले तथ्य, वास्तविक रूप से आयात की गई वस्तुओं के मार्जिन तथा रोकड़, इनवेंटरी, रोजगार, वेतन वृद्धि तथा निवेश पर पूंजी उगाहने जैसे घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले सूचकांक का मूल्यांकन शामिल होता हैं।"

- 66. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने प्रमुख नियमों के अनुबंध-II (iv) के अनुसार उन संगत संकेतकों पर विचार किया है जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री प्रमात्रा स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्रापण, पाटन मार्जिन एवं उसकी मात्रा, आदि।
- 67. प्राधिकारी द्वारा इसके अंतर्गत किया गया क्षति विश्लेषण वर्तमान जांच की अवधि के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा विचारार्थ संगत माने गए विभिन्न प्रस्तुतिकरणों का समाधान कर देता है।

#### ड. पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव

### आयात मात्रा एवं बाजार हिस्सा

68. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में भारत में उत्पादन या मांग के संगत के रूप में या समग्र रूप से वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस से अधिप्राप्त आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा के प्रभाव का विश्लेषण निम्नवत किया गया है:-

					-:- 4 6	जांच की
					जांच की अवधि	अवधि
विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	(15 माह)	(वार्षिकीकृत)
संबद्ध देश	एमटी	24996	19744	17088	88799	71039
अन्य देश	एमटी	5771	1324	7954	56820	45456
कुल आयात मात्रा	एमटी	5320	373	1	2898	2319
आयातों में बाजार हिस्सा		13905	18047	9134	29081	23264
संबद्ध देश	%	15971	14504	15157	19770	15816
अन्य देश	%	40966	34248	32245	108569	86855
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	एमटी	269380	418154	494621	611120	488896
अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्रियां	एमटी	245270	171052	241300	336641	269313
कुल घरेलू बिक्रयां	एमटी	514650	589206	735921	947761	758209
कुल मांग	एमटी	555616	623454	768166	1056330	845064

मांग में बाजार हिस्सा						
संबद्ध देश	%	61	58	53	82	82
अन्य देश	%	39	42	47	18	18
घरेलू उद्योग	%					
अन्य घरेलू उत्पादक	%	4.50	3.17	2.22	8.41	8.41
कुल घरेलू बिक्री	%	2.87	2.33	1.97	1.87	1.87

- 69. उपुर्यक्त आंकड़ों से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान पाकिस्तान से आयात न्यनूतम स्तर से कम हैं। प्राधिकारी पुन: यह नोट करते हैं कि डीजीसीआईएंडएस से प्रदान किराए गए आयात आंकड़ों में पाकिस्तान से बाघा सीमा होकर किए गए आंकड़े शामिल नहीं हैं। प्राधिकारी पुन: यह नोट करते हैं कि पाकिस्तान में केवल दो ज्ञात निर्यातक हैं और उनमें से एक ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दिया है। प्राधिकारी निर्यातक सहयोगकर्ता द्वारा प्रदान कराए गए आंकड़ों से यह भी नोट करते हैं कि पाकिस्तान से आयातों की मात्रा न्यूनतम स्तर से अधिक है। अत: पाकिस्तान ने पाकिस्तान को एक संबद्ध देश के रूप में माना है और तदनुसार क्षति विश्लेषण किया है।
- 70. उपर्युक्त तालिक से यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच की अविध में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात में समग्र रूप से वृद्धि हुई है।
- 71. समग्र आयातों के संबंध में भी संबद्ध देशों के बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध के दौरान भारी वृद्धि हुई। यह वृद्धि बहुत अधिक है। इसी तरह कुल मांग में संबद्ध देशों के बाजार हिस्से में भी उसी अविध के दौरान दोगुने से अधिक वृद्धि हुई है। यह भी देखा गया है कि देश में घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध में बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। इस प्रकार, यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों से आयात की मात्रा में समग्र रूप से और घरेलू उत्पादन के संबंध में तथा देश में समग्र मांग के संबंध में भारी वृद्धि हुई है। जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण का संबंध है कि कुछ खास देशों से आयात देश में कुल मांग की तुलना में बहुत कम है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सभी संबद्ध देशों से आयात अधिकतम प्रतिशत की सीमा से बहुत अधिक है।

#### आयातों का कीमत प्रभाव

72. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन किया गया है, या क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण करना या कीमतों को बढ़ने से रोकना है जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ होता। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कीमत अधोरदन, कीमत निग्रहण और कीमत अवमंदन यदि कोई, के संबंध में की गई है।

#### इस अवधि के दौरान कीमत उदभवन

73. क्षति अवधि में संबद्ध देशों में उदभवित आयातों की औसत सीआईएफ कीमत निम्नलिखित है:

संबद्ध देश	आयात कीमत (सीआईएफ)			
यूनिट	यूएस डालर/एमटी	रुपए/एमटी		
2009-10	241	11627		
2010-11	296	13645		
2011-12	273	13128		
अक्तूबर 11 से दिसम्बर 12 (पीओआई)	232	12300		

74. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि संबद्ध वस्तु की सीआईएफ आयात कीमत में यूएस डालर के रूप में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई है और तत्पश्चात इसमें गिरावट आई है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यूएस डालर के रूप में आयात कीमत में जांच की अविध में विगत किसी वर्ष की कीमत की तुलना भारी गिरावट आई है। प्राधिकारी को संपूर्ण क्षति अविध के आंकड़ों की जांच करना अपेक्षित होता है, न कि जांच की अविध और आधार वर्ष की तुलना करना। यह नोट किया जाता है कि तत्काल पूर्ववर्ती दो वर्षों की अविध की तुलना में कीमतों में यह गिरावट बहुत अधिक है खासकर तब जब कि समसामयिक अविध के दौरान कीमतों में भारी वृद्धि हो गई है। इसका विस्तृत विश्लेषण क्षति विश्लेषण के उत्तरवर्ती भागों में किया गया है।

#### कीमत अधोरदन

75. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों की कीमत अधोरदन कर रहे हैं, प्राधिकारी ने आयातों की उतराई कीमत की तुलना घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्रापण से की है।

संबद्ध देश	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
आयातों की उतराई कीमत	रुपए/एमटी	12952	15201	14625	13695
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/एमटी	***	***	***	***
निवल बिक्री प्रापण	इंडेक्स	100	102	108	121
कीमत अधोरदन	रुपए/एमटी	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	रेंज %	25-35	5-15	15-25	40-50

सऊदी अरेबिया	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
आयातों की उतराई कीमत	रुपए/एमटी	10118	13048	12690	13325
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/एमटी	***	***	***	***
निवल बिक्री प्रापण	इंडेक्स	100	102	108	121
कीमत अधोरदन	रुपए/एमटी	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	रेंज %	55-65	5-15	35-45	40-50

पाकिस्तान	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
आयातों की उतराई कीमत	रुपए/एमटी	13118	15622	-	14405
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/एमटी	***	***	-	***
निवल बिक्री प्रापण	इंडेक्स	100	102	108	121
कीमत अधोरदन	रुपए/एमटी	***	***	-	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***	-	***
कीमत अधोरदन (%)	रेंज %	20-30	0-10	-	35-45

यूएई	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
आयातों की उतराई कीमत	रुपए/एमटी	14065	15350	16309	14348
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/एमटी	***	***	***	***
निवल बिक्री प्रापण	इंडेक्स	100	102	108	121
कीमत अधोरदन	रुपए/एमटी	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन (%)	रेंज %	10-20	5-15	5-15	30-40

76. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का उतराई मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम था जिससे यह प्रदर्शित हो रहा है कि जांच की अविध में संबद्ध देशों से पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन किया जा रहा है।

#### कीमत अधोबिक्रयण

77. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा सहन की जा रही कीमत अधोविक्रयण की जांच निम्नावत की है :

विवरण	इकाई	सऊदी <b>अरेबि</b> या	पाकिस्तान	यूएई	संबद्ध देश
आयात मात्रा	एमटी	56820	2898	29081	88799
उतराई कीमत	रुपए/एमटी	13325	14405	14348	13695
गैर क्षतिकारी कीमत	रुपए/एमटी	***	***	***	***
कीमत अधोविक्रयण	रुपए/एमटी	***	***	***	***
कीमत अधोविक्रयण %	%	***	***	***	***
कीमत अधोविक्रयण	रेंज	90-100	70-80	70-80	80-90

78. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को भारी कीमत अधोरविक्रयण सहन करना पड़ा है।

## कीमत निग्रहण एवं अवमंदन

79. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटित आयात घरेलू कीमतों का निग्रहण या अवमंदन कर रहे हैं और क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों को बहुत अधिक मात्रा में निग्रहित करना या कीमतों को बढ़ने से रोकना है जो अन्यथा भारी मात्रा में बढ़ी होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागत और कीमत में परिवर्तनों पर विचार किया है। अधोलिखित तालिका तथ्यात्मक स्थिति दर्शाती है :

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
आयातों का उतराई मूल्य	रुपए/एमटी	12952	15201	14625	13695
इंडेक्स	अनुक्रमिक	100	117	113	106
बिक्री लागत	रुपए/एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमिक	100	107	119	125
बिक्री कीमत	रुपए/एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमिक	100	102	108	121

- 80. यह देखा जाता है कि घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में लागत में वृद्धि की तुलना में कोई वृद्धि नहीं हुई है।
- 81. उपर्युक्त तालिका से यह भी नोट किया जाता है कि संपूर्ण क्षति अविध के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि का रूझान प्रदर्शित हुआ है। हालांकि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध में बिक्री लागत में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, वही बिक्री कीमत में केवल 21 प्रतिशत वृद्धि हुई। यह स्थिति क्षति जांच अविध के दौरान घरेलू उद्योग की गिरती लाभप्रदता से स्पष्ट होती है। यह भी नोट किया जाता है कि उतराई मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध के दौरान 5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई परंतु यह उसी अविध के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत में हुई वृद्धि के समान नहीं है। समग्र रूप से यह नोट किया जाता है कि क्षति अविध के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई तथापि, घरेलू समान उत्पाद की बिक्री कीमत में उसी अविध के दौरान उसी अनुपात में वृद्धि नहीं हुई। तदनुसार, यह स्पष्ट है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग की कीमतों का निग्रहण किया है।

## ज. घरेलू उद्योग के आर्थिक पैरामीटर

- 82. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में अपेक्षा की जाती है कि क्षति के निर्धारण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच अंतर्ग्रस्त होती है। इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर परिणामी प्रभाव की जांच के संबंध में पाटनरोधी नियमावली में पुन: यह प्रावधान किया गया है। घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्यों तथा उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले अन्य सभी कारकों जिसमें बिक्री, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता के उपयोग में प्राकृतिक और संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले तथ्यों, पाटन के मार्जिन की वास्तविक मात्रा तथा नकदी प्रवाह पर संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, वेतनवृद्धि, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाना शामिल होगा।
- 83. घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षिति पैरामीटरों की जांच निम्नवत की गई है :
- (क) बाजार हिस्सा: घरेलू बिक्रियों तथा घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच निम्नवत की गई है: जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात आधार वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच की अविध में समग्र रूप से बढ़ा है। आयात जो वर्ष 2009-10 आधार वर्ष में 24996 एमटी थे, बढ़कर जांच की अविध के दौरान 100083 एमटी और जांच की अविध वार्षिकीकृत के दौरान यह 80066 एमटी हो गई जो 220 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी है।

	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग की बिक्रियां (एमटी)	269380	418154	494621	611120	488896
अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्रियां (एमटी)	245270	171052	241300	336641	269313
कुल घरेलू बिक्रयां	514650	589206	735921	947761	758209
संबद्ध देशों से आयात (एमटी)	24996	19744	17088	88799	71039
अन्य देशों से आयात (एमटी)	15971	14504	15157	19770	15816
कुल आयात (एमटी)	40966	34248	32245	108569	86855
कुल मांग (एमटी)	555616	623454	768166	1056330	845064
प्रवृत्ति	100	112	138	190	152
मांग में घरेलू बिक्री का बाजार हिस्सा	93%	95%	96%	90%	90%
मांग में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा %	4%	3%	2%	8%	8%

(ख) लाभप्रदायकता: अधोलिखित तालिका से यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग के समग्र घाटे में क्षति अविध के दौरान भारी वृद्धि हुई है। यही प्रवृत्ति प्रति इकाई लाभप्रदता में भी देखी गई।

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री लागत	रुपए/एमटी	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	107	119	125	125
बिक्री कीमत	रुपए/एमटी	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	102	108	121	121
लाभ/हानि	रुपए/एमटी	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	-100	-184	-299	<del>-</del> 204	-204
लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमिक	-100	-286	-549	-462	-370
पीबीआईटी	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमिक	100	-70	-472	-102	-82

(ग) निवेश पर प्रतिलाभ : निवेश पर प्रतिलाभ में भी लाभप्रदता के समान प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई जैसा कि अधोलिखित तालिका से देखा जा सकता है आधार वर्ष की तुलना में 2010-11 से जांच की अविध के दौरान निवेश पर प्रतिलाभ ऋणात्मक रहा है।

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
आरओआई	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	-64	-364	-73	-58

(घ) नकदी प्रवाह: यह तथ्य कि जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए नकदी प्रवाह भी ऋणात्मक रहा है, यह इंगित करता है कि पाटित आयातों और घरेलू उद्योग के गिरते निष्पादन का नकदी प्रवाह की स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ा

है। तालिका से यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष 2009-10 की तुलना में बिक्री लागत में जांच की अविध के दौरान बढ़ोत्तरी हुई। चूंकि बिक्री कीमत में वृद्धि बिक्री लागत के समनुरूप नहीं हुई, इसिलए आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग को क्षित जांच अविध में घाटा हुआ है। इसी तरह, घरेलू उद्योग को क्षित जांच अविध के दौरान नकद घाटा हुआ, हालांकि आधार वर्ष के दौरान मामूली सा नकद लाभ भी हुआ था।

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
नकद लाभ/ हानि	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	-4	-267	-47	-37

(ड.) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग: यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है जो अधिकांशत: उत्पादन क्षमता में वृद्धि के कारण हुई है, जिसमें देश में बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए 50 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग इस तथ्य के बावजूद कि जांच की अविध के दौरान मांग में भारी वृद्धि हुई, अपरिवर्तित ही रहा। तथापि, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के पास बहुत बड़ी अनप्रयुक्त क्षमता है जिससे बढ़ती मांग को पूरा किया जा सकता है और इसलिए इस अनप्रयुक्त क्षमता के कारण घरेलू उद्योग को नुकसान सहन करना पड़ा है।

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
क्षमता	एमटी	678300	861900	1027960	1285480	1028384
कुल उत्पादन	एमटी	540617	693443	821298	1065839	852671
उत्पादन – पीयूसी						
(4 मिमी -12 मिमी	एमटी	323025	458942	522964	639371	511497
क्षमता उपयोग	%	80	80	80	83	83
बिक्री मात्रा						
घरेलू	एमटी	269380	418154	494621	611120	488896
निर्यात	एमटी	14495	15521	16269	20635	16508
कुल बिक्रियां	एमटी	283875	433675	510890	631755	505404

(च.) बिक्री मात्रा: उपर्युक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में संपूर्ण क्षति जांच अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई। बिक्रियों में वृद्धि हुई जो यह बाजार आकार में वृद्धि प्रदर्शित करता है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यद्यपि घरेलू उद्योग अपनी बिक्री मात्रा में वृद्धि करने में सक्षम रहा तथापि उसे नकद घाटा उठाना पड़ा है।

(छ) मालसूची: संबद्ध वस्तु की मालसूची से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं:

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
औसत स्टॉक	एमटी	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमिक	100	140	137	144	144

तालिका से यह नोट किया जाता है कि जांच की अवधि के दौरान औसत स्टॉक में आधार वर्ष की तुलना में भारी वृद्धि हुई। बढ़ने की यह प्रवृत्ति तत्काल पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में भी जांच की अवधि के दौरान देखी जा सकती है। यह देखा गया है कि तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में मालसूची में वृद्धि हुई। (ज) रोजगार तथा पारिश्रमिक : रोजगार एवं पारिश्रमिक से संबंधित स्थिति निम्नलिखित है। यह देखा गया कि जांच की अवधि के दौरान रोजगार के स्तर में मामूली सी गिरावट आई और जांच की अवधि में प्रति कर्मचारी वेतन में वृद्धि हुई।

	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (15 माह)	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
रोजगार	***	***	***	***	***
प्रवत्ति	100	104	120	117	111
पारिश्रमिक/कर्मचारी (रुपए)	***	***	***	***	***
प्रवत्ति	100	140	145	217	173

(झ) उत्पादकता: अधोलिखित तालिका से यह देखा जा सकता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान उत्पादक प्रति कर्मचारी में वृद्धि हुई है। उत्पादकता में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में जांच की अवधि के दौरान कमी आई है। तद्नुसार, उत्पादकता वह कारक नहीं है जिसे क्षति के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सके।

	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि
					(वार्षिकीकृत)
उत्पादन (एमटी)	***	***	***	***	***
कर्मचारी	***	***	***	***	***
उत्पादन/कर्मचारी	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	137	134	169	135

- (ञ) पाटन की मात्रा : पाटन की मात्रा उस सीमा की संकेतक है जिस तक पाटित आयात घरेलू उद्योग को क्षिति कारित कर सकते हैं। यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों की तुलना में निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक एवं पर्याप्त है। प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि सहयोगकर्ता निर्यातकों का पाटन मार्जिन बहुत अधिक है।
- (ट) पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता: संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण इस सेक्टर में भावी निवेश अवरूद्ध हो जाएगा। लाभप्रदता, निवेश पर प्रतिलाभ के तीव्र गिरावट तथा कम होता नकदी प्रवाह यह संकेत देता है कि घरेलू उद्योग के लिए पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण कमी आई है।
- (ठ) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक: संबद्ध देशों से आयात कीमतों, लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा उन अन्य कारकों पर विचार करते हुए जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं, यह स्पष्ट होता है कि संबद्ध देशों से आयातित माल का उतराई मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और गैर-क्षतिकारी कीमत से बहुत कम है जो घरेलू उद्योग की कीमतों का बाजार में भारी कीमत अधोरदन और कीमत अधोविक्रयण कारित कर रहा है। संबद्ध देशों के अलावा अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों को क्षति नहीं पहुंचा रहे हैं क्योंकि इन देशों द्वारा पेशकश की गई कीमतें बहुत उच्चतर हैं। इस उत्पाद की मांग में बढ़ने की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है और इसलिए, यह घरेलू उद्योग द्वारा सामना किए जा रहे कीमत निग्रहण एवं कीमत अवमंदन के लिए उत्तरदायी एक कारक नहीं हो सकता है। अत: यह स्पष्ट है कि संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग की कीमत निग्रहण एवं कीमत अवमंदन के लिए उत्तरदायी है।

(ड) वृद्धि: आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध के दौरान बिक्री और उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग में सकारात्मक वृद्धि हुई है। तथापि, उसमें ठीक विगत वर्ष अर्थात 2011-12 की तुलना में जांच की अविध के दौरान गिरावट आई है। मांग में भारी वृद्धि होने के बावजूद आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध मं लाभ, नकद लाभ एवं आरओआई में भारी गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि क्षमता में वृद्धि के साथ ही घरेलू उद्योग ने लाभ, आसान नकदी प्रवाह और निवेश पर प्रतिलाभ में भारी वृद्धि की उम्मीद की थी। तथापि, घरेलू उद्योग यह उपलिब्ध संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण हासिल नहीं कर सका।

#### झ. वास्तविक क्षति संबंधी निष्कर्ष

84. आयातों की मात्रा एवं कीमत प्रभाव के साथ-साथ क्षित संबंधी विभिन्न पैरामीटरों की जांच स्पष्टत: यह व्यक्त करती है कि घरेलू उद्योग को जांच की अविध के दौरान वास्तविक क्षित कारित हुई है। क्षित जांच अविध के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा में वृद्धि समग्र रूप के साथ-साथ कुल आयातों, घरेलू उत्पादन और देश में कुल मांग के रूप में भी हुई हैं। अन्य मात्रात्मक पैरामीटरर्स जैसे विक्री, उत्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादन क्षमता से भी यह इंगित होता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रात्मक क्षित सहन करनी पड़ी है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण कीमत प्रभाव के संबंध में, यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी कीमत अधोरदन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण कीमत निग्रहण भी सहन करना पड़ा है। घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयातों के कारण संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में वृद्धि की तुलना में संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं हुई। उतराई मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत से करने पर भी यह व्यक्त होता है कि पर्याप्त कीमत अधोविक्रयण हुआ है। घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध मं यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्रियों के रूप में मामूली सुधार होने के बावजूद लाभ, नकदी प्रवाह, निवेश पर प्रतिलाभ और मालसूची के संबंध में इसके कार्यनिष्पादन में गिरावट आई है। लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ और नकदी प्रवाह में गिरावट बहुत अधिक एवं वास्तविक क्षति हुई है।

#### ञ. अन्य ज्ञात कारक एवं कारणात्मक संबंध

85. वास्तविक क्षति की अवस्थिति, घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के कीमत प्रभाव की जांच इसके कीमत अधोरदन, कीमत अधोविक्रयण और कीमत निग्रहण एवं कीमत अवमंदन प्रभाव के रूप में जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने यह देखने के लिए कि क्या पाटित आयातों के अलावा कोई अन्य कारक भी है जो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति में अपना योगदान दे सकते हैं।

### क. तृतीय देशों से आयातों की मात्रा एवं कीमत

86. संबद्ध देशों के अलावा अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात उच्चतर कीमतों पर हुए हैं। निम्नलिखित तालिका से यह स्पष्ट है कि अन्य देशों से आयात संबद्ध देशों से होने वाले आयातों की आयात कीमत की तुलना में उच्चतर कीमतों पर हुए हैं। इसके अतिरिक्त, अन्य देशों से आयात की मात्रा में भी वर्ष 2010-11 और 2011-12 की तुलना में जांच की अवधि (वार्षिकीकृत में) गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है, जबिक संबद्ध देशों से आयात की मात्रा में भारी वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
आयात मात्रा						
संबद्ध देश	एमटी	24996	19744	17088	88799	71039

अन्य देश	एमटी	15971	14504	15157	19770	15816
कुल आयात	एमटी	40966	34248	32245	108569	86855
संबद्ध देशों की आयात मात्रा में हिस्सा	%	61	58	53	82	82
अन्य देशों की आयात मात्रा में हिस्सा	%	39	42	47	18	18
आयात कीमत (प्रति एमटी सीआईएफ मूल्य)						
संबद्ध देश	रुपए/एम टी	11627	13645	13128	12300	12300
अन्य देश	रुपए/एम टी	19710	19766	23264	20641	20641

## (ख) मांग में संकुचन और खपत की प्रणाली में परिवर्तन

87. संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान संबंधित उत्पाद की मांग में निरंतर वृद्धि हुई है। इसलिए मांग में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का एक कारण नहीं हो सकता है।

### (ग) प्रौद्योगिकी में विकास

88. प्रौद्योगिकी के विकास का न तो कोई आरोप है और न ही अब तक की गई जांच से यह व्यक्त हुआ है कि घरेलू उद्योग को संभावित क्षति प्रौद्योगिकी में विकास के कारण कारित की जा सकती है।

### (घ) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं और घरेलू एवं विदेशी उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

89. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया नहीं है जो घरेलू उद्योग को क्षित का एक संभावित कारण हो सकती हो क्योंिक संबद्ध वस्तु तथा कच्चे माल का मुक्त रूप से आयात किया जा सकता है। जहां तक कुछ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) द्वारा की गई जांच के संबंध में उठाए गए मुद्दे का संबंध है प्राधिकारी का यह विचार है कि घरेलू उद्योग के किसी एक संघटक द्वारा किसी अन्य संघटक के विरूद्ध शिकायत दर्ज करने से पाटनरोधी जांच पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके अतिरिक्त, विशेषत इस मामले के तथ्यों में, यह देखा जाता है कि सीसीआई ने अपने दिनांक 21.10.2013 के आदेश में यह निष्कर्ष निकाला है कि न तो एसजीजीआईएल बाजार में एक बड़ा प्रतिभागी है और न ही उसने इस स्थिति में अपनी स्थिति का दुरूपयोग किया है। इन परिस्थितियों के अंतर्गत प्राधिकारी का यह विचार है कि प्रतिस्पर्धा विधि के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों का तर्क असंगत है और उसमें कोई सूची नहीं है।

## (ड.) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

90. ऐसी उद्योग के निर्यात का उनकी कुल बिक्री में बहुत कम हिस्सा है। तथापि, यह प्रस्तुत किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा जांच की गई क्षिति सूचना घरेलू प्रचालनों के लिए है। इसलिए निर्यात मात्रा में संभावित गिरावट से घरेलू उद्योग को कोई क्षिति नहीं हुई है।

### (च) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

91. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में प्रति कर्मचारी उत्पादन और प्रति दिन उत्पादन दोनों में इस अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

- 92. अत: यह नोट किया जाता है कि सूचीबद्ध अन्य ज्ञात कारक यह नहीं दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को इन अन्य कारकों से कोई क्षति पहुंची होगी। किसी भी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने ऐसा कोई साक्ष्य नहीं दिया है जिससे यह सुझाव मिलता है कि घरेलू उद्योग को कारित की गई वास्तविक क्षति के लिए कोई अन्य कारक उत्तरदायी हैं। दूसरी ओर निम्नलिखित पैरामीटर यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों द्वारा की कारित की गई है:
- क. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी अधोरदन कर रहे थे। इसके परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों में लागत में वृद्धि के अनुरूप वृद्धि करने में सक्षम नहीं हुआ।
- ख. घरेलू उद्योग की घरेलू कीमतों पर दबाव से जांच की अवधि के दौरान लाभप्रदता और निवेश पर प्रतिलाभ में भारी घाटा हुआ। इस प्रकार आयात द्वारा कारित कीमत अवमंदन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ में इस हद तक गिरावट आई की घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा होने लगा।
- ग. घरेलू उद्योग के निष्पादन में कम नकदी प्रवाह और बढ़ती मालूसची का भी विपरीत प्रभाव पड़ा है।
- 93. अत: यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

### (ज) क्षति मार्जिन की मात्रा क्षति मार्जिन

94. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की निर्धारित गैर क्षतिकारी कीमत की तुलना जांच की अवधि के दौरान क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए संबद्ध देशों से निर्यातों के अवसारित मूल्य से की गई। इस तरह निर्धारित क्षति मार्जिन निम्नलिखित है:-

संबद्घ देश	इकाई			
सऊदी अरेबिया		ओबिकान ग्लास कंपनी	अरेबियन यूनाइटेउ फ्लोट ग्लास कंपनी	असहयोगकर्ता उत्पादक/निर्यातक
गैर क्षतिकारी कीमत	रुपए/एमटी	*	*	*
उतराई कीमत	रुपए/एमटी	*	*	*
क्षति मार्जिन	रुपए/एमटी	*	*	*
क्षति मार्जिन	%	*	*	*
क्षति मार्जिन	रेंज	50-60	55-65	80-90
यूएई		इमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी	असहयोगकर्ता उत्पादक/निर्यातक	
गैर क्षतिकारी कीमत	रुपए/एमटी	*	*	
उतराई कीमत	रुपए/एमटी	*	*	
क्षति मार्जिन	रुपए/एमटी	*	*	

क्षति मार्जिन	%	*	*	
क्षति मार्जिन	रेंज	35-45	55-65	
पाकिस्तान		घानी ग्लास कंपनी	असहयोगकर्ता उत्पादक/निर्यातक	
गैर क्षतिकारी कीमत	रुपए/एमटी	*	*	
उतराई कीमत	रुपए/एमटी	*	*	
क्षति मार्जिन	रुपए/एमटी	*	*	
क्षति मार्जिन	%	*	*	
क्षति मार्जिन	रेंज	50-60	80-90	

95. यथानिर्धारित पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन का स्तर बहुत अधिक गया गया है।

### ठ. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

- 96. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सामान्य रूप से पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का प्रशमन करना है ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं पक्षपात रहित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुन: स्थापित हो सके जो देश के सामान्य हित में हैं। पाटन रोधी शुल्क का अधिरोपण करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होगी, इसलिए, इससे उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- 97. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से उन उत्पादों की कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है जिनका विनिर्माण संबद्ध वस्तु का प्रयोग करके किया जाता है और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की संगत प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपाय खासकर तब जब पाटन रोधी शुल्क का अधिरोपण घरेलू उद्योग को कारित क्षति का समाधान करने के लिए जरूरी राशि तक प्रतिबंधत कर दिया जाए तो, से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में किसी तरह की कमी नहीं आएगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण पाटन प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ को दूर कर देगा, घरेलू उद्योग के निष्पादन आई कमी को दूर करेगा, और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु के व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता करेगा।

### झ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात प्रस्तुतिकरण

#### झ.1 विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात प्रस्तुतिकरण

- 98. विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात प्रस्तृतिकरण निम्नलिखित है:
  - (i) प्रतिवादियों ने स्टार्ट अप लागत समायोजन के लिए दावे के संबंध में सभी साक्ष्य प्रदान कराए। पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत अनुबंध-1 के पैरा 3(iii) में यह प्रावधान नहीं है कि जांच की अवधि के दौरान स्टार्ट अप प्रचालन घटित हो। इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि वाणिज्यिक उत्पादन जांच की अवधि के समय शुरू हो। यदि वाणिज्यिक उत्पादन जांच की अवधि से पहले प्रभावित हो सकती है। प्रतिवादी को जांच की अवधि के दौरान तकनीकी मुद्दों का भी सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त, डीजीएडी ने समान हालत में पूर्ववर्ती पाटनरोधी जांच में स्टार्ट अप लागत का समायोजन करने की अनुमित दी है और यूएस विधि में भी स्टार्ट अप लागत का समायोजन करने का प्रावधान है। इसलिए, प्रतिवादी प्राधिकारी से यह अनुरोध करता है कि वह पाटनरोधी नियमावली और डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार के अनुरक स्टार्ट अप के कारण समायोजन प्रदान करे।
  - (ii) प्राधिकारी ने इन प्रस्तुतिकरणों पर विचार नहीं किया है कि यह जांच पूरी करने के लिए समयाविध समाप्त हो गई है।
  - (iii) आवेदक द्वारा सहन की गई क्षति के लिए कारणों का निर्धारण करते समय शीट ग्लास के आयातों को संगत कारक माना जा सकता है।
  - (iv) उत्पाद के दायरे समावटी, औद्योगिक तथा आटोमोटिव प्रयोजनार्थ प्रोसेस किया गया शीशा अलग रखना चाहिए।

- (v) प्राधिकारी ने यह जांच आवेदक प्रस्तुत आंकड़ों का सत्यापन किए बिना प्रारंभ की। डीजीसीआईएस आंकड़े न तो प्रतिवादियों को प्रदान कराए गए और न ही उन्हें सार्वजनिक फाइल में रखा गया जिससे कि हितबद्ध पक्षकार उस तक उसका विश्लेषण करने के लिए पहुंच सके और उस पर सार्थक टिप्पणियां दे सकें। आवदेकों द्वारा दायर की गई याचिका में तथा प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए प्रकटन विवरण में कई संवेदनशील पैरामीटरों में कई विसंगतियां हैं।
- (vi) चालू विनिमय दर का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- (vii) पाटनरोधी नियमावली का अनुबंध-III यह अधिदेशित करता है कि प्राधिकारी को निवल अचल आस्तियों का निर्धारण करने के लिए उन आस्तियों पर विचार नहीं करना चाहिए जिनका प्रयोग विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण करने के लिए नहीं किया जाता है। इसलिए प्रतिवादीगण प्राधिकारी ने यह अनुरोध करते हैं कि वह बेशी भूमि को नजरअंदाज कर गैर-क्षतिकारी कीमत की पुनर्संगठना करें।
- (viii) विगत में किए गए हमारे प्रस्तुतिकरणों ने स्पष्ट तौर पर यह अभिव्यक्त किया कि आवेदक घरेलू उद्योग संबद्ध देशों से कथित पाटन के कारण वास्तविक क्षित का माला स्पष्ट करने में असफल रहा है और यह जांच समाप्त कर देनी चाहिए। तथापि, उपर्युक्त स्थिति की पूर्वावधारणा के बिना यह निवेदन किया जाता है कि यदि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण किया जाता है तो इसे संदर्भ कीमत आधार पर उदग्रहित किया जाना चाहिए। इस तथ्य पर पर विचार करते हुए कि जांच की अविध के दौरान आयात कीमतों में भारी उतार-चढ़ाव हुआ इसलिए संदर्भ रूप में वांछनीय एवं पर्याप्त है और वह भी भारतीय रुपयों में होनी चाहिए।
- (ix) एमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी यूएई के मामले में प्राधिकारी को सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ केबल असंबद्ध पक्षकारों पर ही विचार करना चाहिए।
- (x) कीमत से संबंधित कोर पैरामीटरों तथा भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा तथा घरेलू उद्योग के मात्रा एवं कीमत पैरामीटरों पर समनुरूपी प्रभाव के बीच विपरीत संबंध है। इसलिए संबद्ध देशों से भारत में संबद्ध वस्तु के पाटन और घरेलू उद्योग को कथित क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।
- (xi) पाकिस्तान संगणन से आयातों के लिए उतराई मूल्य में आधारभूत सीमा शुल्क की लागू दर को ध्यान में रखते हुए संशोधित किया जाना चाहिए।

### झ.2 घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात किया गया प्रस्तुतिकरण

- 99. घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया गया :
  - (i) सऊदी अरेबिया और यूएई के लिए सामान्य मूल्य नामंजूर कर दिया जाना चाहिए क्योंकि क्लीयर फ्लोट ग्लास का उत्पादन करने में प्रयोग बाजार वाहन कीमतों को प्रदर्शित नहीं करती हैं।
  - (ii) निर्यातक ओनिकान ने केवल विधिक प्रावधानों का उल्लेख किया है परंतु उसने स्टार्ट अप लागत समायोजन की मांग करते हुए अपने दावे के समर्थन में कोई प्रस्तुतिकरण अथवा साक्ष्य प्रदान नहीं किया है। निर्यातक इस समायोजन को प्राप्त करने के लिए भी अई नहीं क्योंकि उसने जांच की अवधि के दौरान अपना प्रचालन शुरू नहीं किया था।

#### झ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

- 100. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण के पश्चात किए गए अधिकांश प्रस्तुतिकरण पुनरावृत्तिक प्रवृत्ति के हैं और उनका प्रकटन विवरण में पहले ही समाधान कर दिया गया है और उनका इस अंतिम जांच परिणाम में उपयुक्त शीर्षकों के अंतर्गत पुन: समाधान किया जा रहा है। फिर भी प्राधिकारी ने इन मुद्दों का समाधान किया है और उनका निष्कर्ष निम्नवत निकाला है:
  - (i) संबद्ध देशों से आयात कम नहीं है जैसाकि विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दावा किया गया है। जैसाकि प्राधिकारी ने इस अंतिम जांच परिणाम में अन्यत्र पहले ही विश्लेषण किया है कि संबद्ध देशों से जांच की अवधि में आयात की मात्रा न केवल न्यूनतम स्तर से अधिक थी परंतु वह आधार वर्षज में रिपोर्ट की गई मात्रा से भी बहत अधिक थी।
  - (ii) विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में विगत वर्ष की तुलना में जांच की अविध के दौरान सुधार हुआ है प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में वर्ष 2010-11 और 2011-12 में वृद्धि कर ली थी और इसलिए उनकी उत्पादन लागत वर्ष 2010-11 और 2011-12 में वृद्धि कर ली थी। प्राधिकारी पुन: यह नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध के दौरान उत्पादन और बिक्री में वृद्धि के बावजूद जांच की अविध के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में गिरावट आई है। प्राधिकारी पुन: यह नोट करते हैं कि किसी भी विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकार ने घरेलू उद्योग द्वारा वहन की जा रही क्षित के कारण, साक्ष्यों सहित प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाए। प्राधिकारी उन अन्य गत

- कारणों की जांच करने के पश्चात, जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है, इस निष्कर्ष पर पहुंच कि घरेलू उद्योग उठाई गई क्षति पाटित आयातों के कारण हुई।
- (iii) जहां तक विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क का संबंध है कि कोई कीमत प्रभाव नहीं हुआ, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान भारी कीमत अधोरदन, कीमत अधोविक्रयण और कीमत निग्रहण हुआ।
- (iv) पाकिस्तान से आयातों के लिए उतराई मूल्य की संगणना में पहले मानी गई 10 प्रतिशत सीमा शुल्क के पश्चात 6 प्रतिशत आधारभूत सीमा शुल्क की लागू दर को ध्यान में रखते हुए संशोधन किया गया।
- (v) सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए संबद्ध पक्षकारों को की गई घरेलू बिक्रियों की अनदेखी करने के इिमरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, यूएई के अनुरोध के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध पक्षकारों को की गई घरेलू बिक्रियां नजदीकी बिक्रियां हैं और उनकी कीमत गैर-संबद्ध पक्षकारों को की गई बिक्री कीमत के तुलनीय है। इसलिए प्राधिकारी ने संबद्ध एवं असंबद्ध दोनों तरह की लाभप्रद घरेलू बिक्रियों पर विचार किया है।
- (vi) जहां तक विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध का संबंध है कि पाटनरोधी शुल्क, यदि कोई, का अधिरोपण संदर्भ कीमत आधार पर भारतीय रुपयों में किया जाए क्योंकि जांच की अविध के पश्चात अमरीकी डालर की तुलना में भारतीय रुपए का भारी अवमूल्यन हुआ है, प्राधिकारी मामले की तथ्यापरक जांच करने के पश्चात शुल्क का अमरीकी डालर में निश्चित रूप में निर्धारण करते है।
- (vii) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में उल्लिखित सिद्धांतों के अनुसार "बेशी भूमि" का अपवर्जन करने के पश्चात करते हैं।
- (viii) जहां तक याचिकाकर्ता द्वारा याचिका में उपलब्ध कराए गए आंकड़ों और उन आंकड़ों में मेल न होने का संबंध है जिन पर प्रकटन विवरण में विचार किया गया था, प्राधिकारी नोट करते हैं। याचिकाकर्ता द्वारा याचिका में प्रस्तुत किए गए आंकड़ों पर विधिवत सत्यापन करने के पश्चात विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने याचिका में अपने आयात आंकड़े इन्फोड़ाइब से प्राप्त करके प्रस्तुत किए हैं, परंतु प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त आयात आंकड़ों पर विचार किया है।
- (ix) जहां तक विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों में से एक पक्षकार के इस तर्क का संबंध है कि शीट ग्लास के आयात को घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए एक कारण के रूप में नहीं माना जा सकता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस पक्षकार ने अपने तर्क के समर्थन में कोई साक्ष्य नहीं दिया है और इसलिए उसे अस्वीकार किया जाता है।
- (x) जहां तक मैसर्स ओबैकान ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया (ओबैकान) के इस तर्क का संबंध है कि यह निर्धारित करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग को क्षित हो रही है या नहीं, वर्तमान विनिमय दर को संगत कारक के रूप में विचारा जाना चाहिए, प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि चीन पाटनरोधी जांच में यह निर्धारण करना होता है कि जांच की अवधि और जांच की अवधि से 3 वर्ष पहले के आंकड़ो के आधार पर और न कि जांच के पश्चात की अवधि के आधार पर पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षिति हुई है और ओबैकरन करण के तर्क को नामंजूर कर दिया गया है।
- (xi) जहाँ तक ओबीकान के इस अनुरोध का संबंध है कि जाँच की अविध के दौरान उत्पादन/बिक्री लागत का निर्धारण करते समय स्टार्ट अप के लिए समायोजन पर विचार किया जाए, प्राधिकारी ने इस मुद्दे की जांच की है और निम्नलिखित के कारण इसमें कोई गुण नहीं पाया:
  - (क) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ओबीकान ने वर्ष 2011 में नवीन फ्लोर ग्लास संयंत्र स्थापितिकया था। कम्पनी ने फ्लोर ग्लास का उत्पादन अप्रैल, 2011 से करना शुरू किया था और वाणिजयिक उत्पादन 1 जुलाई, 2011 से करने की घोषणा की थी। कम्पनी ने जांच की अविध के दौरान लगभग \*\*\* प्रतिशत क्षमता उपयोग प्राप्त कर लिया था। कम्पनी ने अपनी परियोजना रिपोर्टमें प्रचालन के प्रथम या द्वितीय वर्ष किसी भी क्षमता उपयोग का प्रक्षेपण नहीं किया है। इस प्रक्षेपण के अभाव में प्राधिकारी यह अधिवचन करते हैं कि ओबीकान द्वारा प्राप्त किया गया क्षमता उपयोग युक्तियुक्त है और इसलिए यह माना जा सकता है कि उत्पादन स्थिरीकरण हो गया है।
  - (ख) प्राधिकारी पुन: यह नोट करते हैं कि ओबीकान ने अपनी परियोजना रिपोर्ट में प्रचालन के तीसरे वर्ष \*\*\*प्रतिशत क्षमता उपयोग प्राप्त करने का प्रक्षेपण किया था और इसके विपरीत इसने वर्ष 2013 में \*\*\*प्रतिशत क्षमता उपयोग प्राप्त कर लिया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि कम्पनी का उत्पादन जांच की अवधि के दौरान स्थिर हो गया और इसलिए यह स्टार्ट अप क्रियाकलापों से प्रभावित नहीं है।

- (ग) प्राधिकारी नोट करते हैं कि ओबीकान द्वारा उद्धृत चीन जन गण, इंडोनेशिया, यू ए ई आदि के मूल के अथवा वहां से निर्यातित प्लेन जिप्सम प्लास्टर बोर्ड के एक अभिनव मामले में संबंधित निर्यातक/उत्पादक ने अपनी परियोजना रिपोर्ट में प्रक्षेपित 70 प्रतिशत क्षमता उद्योगकी तुलना में केवल 34 प्रतिशत क्षमता उपयोग ही किया था। चूँिक संबंधित निर्यातक द्वारा प्राप्त किया गया क्षमता उपयोग प्रक्षेपित क्षमता का लगभग 50 प्रतिशत था, इसलिए प्राधिकारी ने इस मामले में स्टार्ट अप लागत के कारण समायोजन पर विचार किया था।
- (घ) प्राधिकारी यह अधिवचन करते हैं कि किसी नई कम्पनी के लिए जिसे बाजार में अपने उत्पाउ के लिए समय चाहिए और इसलिए प्रचालन की शुरूआत अविध में ईष्टतम क्षमता उपयोग प्राप्त करने के लिए यह एक अवरोध है। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ओबीकान ने अपना प्रचालन अप्रैल, 2011 में प्राप्त किया था और जाँच की अविध की समाप्ति पर इसकी मालसूची की तुलना में अधिक थी, जब ओबीकान ने दावा किया कि उसने क्षमता उपयोग का इष्टतम स्तर प्राप्त कर लिया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ओबीकान वर्ष 2013 के दौरान अपने उत्पादन में उस समय वृद्धि कर सकता था जब उसकी बाजार पर पकड़ थी। अतः प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि ओबीकान का यह तर्क कि पी ओ आई में उसका उत्पादन स्टार्ट अप प्रचालन के कारण प्रभावित हुआ था और यह वर्ष 2013 के दौरान ही स्थिर हो पाया था, सही नहीं है।
- (ङ) प्राधिकारी पुन: यह धारित करते हैं कि ओबीकान द्वारा जांच की अवधि के दौरान उत्पादन घाटे के लिए दिए गए कारणों जैसे सतत विद्युत की अनुपलब्धता, डी जी सेट्स पर भरोसा करना, अनियमित वोल्टेज आपूर्ति आदि, पर स्टार्ट अप प्रचालनों के कारण विचार नहीं किया जा सकता है क्योंकि उन्हें प्रबंधीय मुद्दे माना जा सकता है।
- (च) मैसर्स ओबीकान ने प्राधिकारी से उस उत्पादन स्तर पर विचार करने का अनुरोध किया है जिसे उसने वर्ष 2013 में उत्पादन के ईष्टतम स्तर के रूप में माना है अर्थात वह उत्पादन स्तर जो वाणिज्यिक प्रचालन के 30 माह के समय के अन्दर प्राप्त किया । प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि ओबीकान के इस तर्क में कोई गुण नहीं है कि उसका उत्पादन जाँच की अविध के दौरान सामान्य नहीं था और यह वर्ष 2013 में अर्थात प्रचालन के 19 से 30 माह के अन्दर स्थिर हो पाया ।

# निष्कर्ष

101. विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा और घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों तथा उनके उठाए गए मुद्दों की जांच करने तथा रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि विचाराधीन संबद्ध वस्तु का संबद्ध देशों से भारत को निर्यात इससे जुड़े सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया जिसके परिणामस्वरूप उत्पाद का पाटन हुआ। घरेलू उद्योग को सम्बद्ध वस्तु के बारे में वास्तविक क्षति हुई।यह वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण कारित की जा रही है।

#### सिफारिशें

- 102. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच प्रारंभ की गई तथा सभी हितबद्ध पक्षकारों को इसकी सूचना दी गई और निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षित और कारणात्मक संबंध के सभी पहलुओं पर सकारात्मक जानकारी प्रदान कराने के लिए उन्हें पर्याप्त अवसर दिया गया। पाटनरोधी नियमावली में दी गई शर्तों के अनुरूप पाटन, क्षित और कारणात्मक संबंधी की जांच प्रारंभ करके एवं आयोजित करके घरेलू उद्योग के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा इन पाटित आयातों के कारण हुई वास्तविक क्षित की स्थापना करने के पश्चात प्राधिकारी का विचार है कि पाटन और परिणामी "क्षिति" को दूर करने के लिए निर्णायक पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करना अपेक्षित है जिससे कि घरेलू उद्योग की क्षित दूर हो सके इसलिए प्राधिकारी संबद्ध देशों से होने वाले संबद्ध वस्तु के आयातों पर अधोलिखित विहित स्वरूप और ढंग से निर्णायक पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।
- 103. प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले न्यूनतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन से न्यनूतर के बराबर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने की सिफारिश करते हैं जिससे कि घरेलू उद्योग की क्षति दूर की जा सके। तद्नुसार सऊदी अरेबिया, संयुक्त अरब अमीरात और पाकिस्तान के मूल के अथवा वहां से निर्याति संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केंद्रीय सरकार द्वारा जारी अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका में विनिर्दिष्ट राशि के अनुरूप पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण किए जाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

					ता।लका	1			,
क्र.सं.	उप-शीर्ष	वस्तु विवरण	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	मापन की इकाई	मुद्रा
1	7003, 7004, 7005, 7009, 7013, 7016, 7018, 7019, 7020	बीआईएस 14900: 2000 के अनुरूप 4 मिमी से 12 मिमी की नामिनल मोटाई (दोनों शामिल) वाले क्लीयर फ्लोट ग्लास	सऊदी अरेबिया	सऊदी अरेबिया	ओबेकान ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया	ओबैकान ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया	58.22	एमटी	यूएस डालर
2	-वही-	-वही-	सऊदी अरेबिया	सऊदी अरेबिया	अरेबियन यूनाइटेड फ्लोट ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया	अरेबियन यूनाइटेड फ्लोट ग्लास कंपनी, सऊदी अरेबिया	134.92	एमटी	यूएस डालर
3	-वही-	-वही-	सऊदी अरेबिया	सऊदी अरेबिया	ऊपर क्रम सं. 1 और 2 के अलावा कोई अन्य	ऊपर क्रम सं. 1 और 2 के अलावा कोई अन्य	165.07	एमटी	यूएस डालर
4	-वही-	-वही-	सऊदी अरेबिया	संबद्घ देशों के अलावा कोई अन्य देश	कोई भी	कोई भी	165.07	एमटी	यूएस डालर
5	-वही-	-वही-	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य देश	सऊदी अरेबिया	कोई भी	कोई भी	165.07	एमटी	यूएस डालर
6	-वही-	-वही-	संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)	संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)	एमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, यूएई	एमिरेट्स फ्लोट ग्लास एलएलसी, यूएई	79.00	एमटी	यूएस डालर
7	-वही-	-वही-	संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)	संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)	ऊपर क्रम सं. 6 के अलावा कोई अन्य	ऊपर क्रम सं. 6 के अलावा कोई अन्य	111.15	एमटी	यूएस डालर
8	-वही-	-वही-	संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)	संबद्ध देशों के अलावा कोई देश अन्य	कोई भी	कोई भी	111.15	एमटी	यूएस डालर
9	-वही-	-वही- -	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य देश	संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)	कोई भी	कोई भी	111.15	एमटी	यूएस डालर
10	-वही-	-वही-	पाकिस्तान	पाकिस्तान	घानी ग्लास लिमिटेड, पाकिस्तान	घानी ग्लास लिमिटेड, पाकिस्तान	82.34	एमटी	यूएस डालर
11	-वही-	-वही-	पाकिस्तान	पाकिस्तान	ऊपर क्रम सं. 10 के अलावा कोई अन्य	ऊपर क्रम सं. 10 के अलावा कोई अन्य	123.61	एमटी	यूएस डालर

क्र.सं.	उप-शीर्ष	वस्तु विवरण	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	मापन की इकाई	मुद्रा
12	-वही-	-वही-	पाकिस्तान	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य देश	कोई भी	कोई भी	123.61	एमटी	यूएस डालर
13	-वही-	-वही-	संबद्ध देशों के अलावा कोई अन्य देश	पाकिस्तान	कोई भी	कोई भी	123.61	एमटी	यूएस डालर

शुल्क तालिका के लिए टिप्पणी : ग्रीन ग्लास एवं ट्रांजीशन ग्लास सहित रिफ्लेक्टिव ग्लास और टिंटेड ग्लास ऊपर उल्लिखित शुल्क तालिका के वस्तु विवरण में शामिल नहीं किए गए हैं।

- 104. इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ आयातों का उतराई मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमा शुल्क द्वारा यथा-निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उपर्युक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों के सिवाय अन्य सभी सीमा शुल्क (कस्टम्स ड्यूटी) शामिल होंगे।
- 105. केंद्रीय सरकार इस आदेश के विरुद्ध सीमा शुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद कर एवं सेवा कर अपीलीय प्राधिकरण के समक्ष अपील दायर की जा सकती है।

जे. के. दादू, निर्दिष्ट प्राधिकारी

#### MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

#### **Department of Commerce**

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED DUTIES)

#### **NOTIFICATION**

New Delhi, the 10th October, 2014 (Final Findings)

Subject: Final Findings in the Anti-Dumping investigation concerning imports of Clear Float Glass originating in or exported from Pakistan, Saudi Arabia and UAE.

**F.No.14/25/2012-DGAD.**—Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules or the Rules), the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) received a written application under the Rules from M/s Gold Plus Glass Industry Ltd., M/s HNG Float Glass Ltd. and M/s Saint-Gobain Glass India Ltd., (hereinafter also referred to as petitioners or applicants) alleging dumping of Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive) (hereinafter referred to as the subject goods) originating in or exported from Pakistan, Saudi Arabia and UAE (hereinafter referred to as the subject countries).

2. Whereas the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 11<sup>th</sup> April, 2013, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with the Rule 6(1) of

the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to consider recommendation of the anti-dumping duty.

#### A. PROCEDURE

- 3. The following procedure has been followed with regard to this investigation:
  - i. The Authority notified the Embassies of the subject countries in India about the receipt of application alleging dumping of the subject goods originating in or exported from the subject countries before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Anti-dumping Rules.
  - ii. The Authority issued a public notice dated 11<sup>th</sup>April, 2013, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.
  - iii. The Authority forwarded a letter along with copy of the public notice to all the known exporters and other interested parties and the industry associations (whose details were made available by the domestic industry) and gave them opportunity to make their views known in writing within the prescribed time limits in accordance with the Rule 6(2) of the Anti-dumping Rules.
  - iv. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters of the subject countries in accordance with Rule 6(3) of the Anti-dumping Rules. A copy of the application was also made available other interested parties, upon request.
  - v. Copies of the letter and the exporter questionnaires sent to the exporters/producers in the subject countries were also sent to the embassies of the subject countries in India along with a list of known exporters/producers with a request to advise the known exporters/producers from the subject country as also other exporters/producers from the subject countries to respond to the questionnaires within the prescribed time limits.
  - vi. The Authority sent exporter's questionnaire to elicit relevant information to the following known exporters in the subject countries in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:
    - a. Khawaja Group Glass, Pakistan
    - b. Ghani Glass Ltd, Pakistan
    - c. Emirates Float Glass LLC, UAE
    - d. Gulf Glass Industries, UAE
    - e. Saudi Guardian International Float Glass Co. Ltd, Saudi Arabia
    - f. Obeikan Glass Company, Saudi Arabia
  - vii. Response to the questionnaire was filed by the following:
    - a. Obeikan Glass Company, Saudi Arabia,
    - b. M/s Arabian United Float Glass Company, Saudi Arabia,
    - c. M/s Emirates Float Glass LLC, UAE, and
    - d. M/s Ghani Glass Limited, Pakistan.

- viii. In addition to the above, M/s Tariq Glass Industries Ltd, Pakistan, filed injury submissions and comments on the petition but not the questionnaire response and the Ministry of Commerce and Industry, Kingdom of Saudi Arabia wrote a letter to the Authority expressing that it reserves its right as an interested party in this investigation.
- ix. Importer's questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:
  - 1 Atlantic Trading - Mumbai 2 Kanch Ghar – Mumbai 3 Fishfa Glass - Mumbai 4 Samarth Industries - Mumbai 5 Prashanth Trading - Mumbai 6 Asmi Traders - Mumbai 7 Rajat Glass Traders – Karad 8 Chandan Glass Traders - Pune 9 Kochhar Glass Traders – Bhopal 10 Ganeriwala Brothers Pvt Ltd - Kolkata Sure Safe Group/ Ganeriwala Glass Traders- Kolkata 11 M S Glass Traders- Kolkata 12 13 Glaze Architecture Pvt Ltd- Kolkata 14 Glaze Infrastructure P Ltd.- Kolkata 15 Saraf Glass P Ltd- Kolkata GSC, Noida 16 17 Shiv Shakti, Roorkee 18 Ridhi Sidhi, Jaipur 19 Banaras Glass, Lucknow (Globe India) T. L. Verma, Chandigarh 20 21 Jagdamba Glass, Delhi 22 Sheesh Mahal Tuff, Rohtak 23 Nutan Glass Hs(P) Ltd, Bangalore 24 Mahaveer Glass Hs, Bangalore 25 Karnataka Metal Company, Bangalore 26 Impact Safety Glass (P) Ltd, Bangalore 27 Southern Auto Products (P) Ltd, Bangalore 28 Tough Glass India, Bangalore 29 Yesho Float Glass (P) Ltd, Hyderabad 30 Bhandari Glass Co, Hyderabad 31 Prakash Glass, Hyderabad Mahaveer Glass, Chennai/Navakar/Mahaveer Mirror, 32 Vishakhapatnam Uma Industries, Bangalore 33
- x. Only Samarth Industries, Mumbai, filed the Importer's Questionnaire response.

Jai Mirror Industries, Chennai

34

xi. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

- xii. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of the subject goods for the period of investigation and preceding three years and the same was obtained and relied upon.
- xiii. The non-injurious price (NIP) has been worked out based on the information furnished by the domestic industry on its cost of production and cost to make and sell the subject goods in India and in the light of the guidelines outlined in Annexure III to the AD Rules. The NIP has been computed so as to ascertain whether Anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- xiv. On the spot verification of the information provided by the petitioners as well as the producers/exporters of the subject countries were conducted to the extent considered relevant by the Authority.
- xv. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all the interested parties to present their views orally in an Oral Hearing held on 18<sup>th</sup> June, 2014. Parties which participated in the Oral Hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally.
- xvi. Investigation was carried out for the period of investigation (POI) starting from 1<sup>st</sup> October, 2011 to 31<sup>st</sup> December, 2012. The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period from April 2009-March 2010, April 2010-March 2011, April 2011-March 2012 and the POI.
- xvii. The original date for completion of the investigation was up to 10.04.2014. However, at the request of the Authority, this date was extended by the Ministry of Finance up to 10.10.2014.
- xviii. A Disclosure Statement containing the essential facts in this investigation which would have formed the basis of the Final Findings was issued to the interested parties on 24.09.2014. The post Disclosure Statement submissions received from the domestic industry and the opposing interested parties have been considered, to the extent found relevant, in this Final Findings Notification.
- xix. The submissions made by the interested parties considered relevant by the Authority have been addressed in this Final Findings Notification.
- xx. \*\*\*in this Final Findings Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.
- xxi. The exchange rate adopted for the POI is 1 US \$ =Rs 53.10

# **B.** Product Under Consideration and Like Article

4. The product under consideration (PUC) for the purpose of present investigation was defined as "Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive)", the nominal thickness being as per BIS14900:2000, originating in or exported from Pakistan, Saudi Arabia and UAE.

- 5. Clear Float Glass is used in construction, refrigeration, mirror, solar energy industries etc. The product is a superior quality of glass. Due to its inherent strength, high optical clarity, distortion free smooth surface etc., the applications of the product have been increasing for different purposes.
- 6. Float Glass is classified under Chapter Heading 70 "Glass and glassware". However, the subject goods are also being imported under tariff sub-headings 7003, 7004, 7005, 7009, 7013, 7015, 7016, 7018, 7019 and 7020. However, the customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.

#### Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties

- 7. The submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties, regarding the product under consideration and like articles, during the course of the investigation and considered relevant by the Authority are as follows:
  - i. Clear float Glass, which is used for decorative, industrial or automotive processes, should be excluded from the scope of product under consideration as the same was not included in the previous investigations concerning China and Indonesia.
  - ii. Reflective glass, light green glass, green glass and transition glass should be excluded from the scope of the product under consideration.
- iii. The Authority should follow the same product under consideration as followed in the past cases and should exclude products which are not part of that product under consideration in terms of past practice of the Authority.

#### **Views of the Domestic Industry**

- 8. The product under consideration (PUC) for the purpose of present investigation is "Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive)", the nominal thickness being as per BIS14900:2000.
- 9. Clear Float Glass is used in construction, refrigeration, mirror and solar energy industries etc. The product is a superior quality of glass. Due to its inherent strength, high optical clarity, distortion free smooth surface etc., the applications of the product have been increasing for different purposes.
- 10. Float Glass is classified under Chapter Heading 70 "Glass and glassware". However, the subject goods are also being imported under tariff headings 7003, 7004, 7005, 7009, 7013, 7015, 7016, 7018, 7019 and 7020. It is also submitted that the custom classification is indicative only and in no way binding upon the product scope of the Customs Tariff Act, 1975.
- 11. There is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods. The applicants have claimed that the subject goods, which are being dumped into India, are identical

to the goods produced by the domestic industry. There are no differences either in the technical specifications, quality, functions or end-uses of the dumped imports and the domestically produced subject goods and the product under consideration manufactured by the applicants. The two are technically and commercially substitutable and hence should be treated as 'like article' under the Rules.

- 12. In the context of the exclusion of products such as reflective glass, light green glass, green glass and transition glass, the contention is baseless as these variants of float glass are not even a part of the Product under Consideration defined in the initiation notification. Therefore, the request for exclusion of these types does not require to be addressed as a part of these proceedings.
- 13. As regards the exclusion of clear float used for decorative, industrial or automotive processes purportedly on the ground that these types were not included in the previous investigations as per the "past practice" of the Designated Authority, it is submitted that the entire approach as well as the basis is self-serving, misleading, baseless and hence devoid of any merit. The responding parties have not cited any legal or logical basis in support of their claim that "past practice" should be the basis for exclusion. In the absence of any legal or logical ground, this claim does not deserve any comment. Nevertheless, the Designated Authority may appreciate that the Product under Consideration is defined by the Designated Authority specifically for each investigation depending upon the circumstances prevailing in the context of that particular investigation. There is absolutely no occasion to draw any parallels from past cases merely because some of the applicants in the present investigations happen to be common with the previous investigations.
- 14. It is further submitted that Domestic Industry is producing complete range of product under consideration, i.e., "Clear Float Glass from 4mm to 12mm thickness (both inclusive). In view thereof, no request of exclusion can be entertained by the Authority.

#### **Examination of the Authority**

- 15. The product under consideration for the purpose of present investigation is "Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive)", the nominal thickness being as per BIS14900:2000 (hereinafter referred to as the "subject goods").
- 16. Clear Float Glass is used in construction, refrigeration, mirror and solar energy industries etc. The product is a superior quality of glass. Due to its inherent strength, high optical clarity, distortion free smooth surface, etc., the applications of the product have been increasing for different purposes and classified under Chapter Heading 70 "Glass and glassware". The classification at the 8-digit level is 70051090 even though the same are being classified and imported under various sub-headings like 7003, 7004, 7005, 7009, 7013, 7015, 7016, 7018, 7019 and 7020 etc. The custom classification is indicative only and in no way binding upon the product scope of the Customs Tariff Act, 1975.
- 17. With regard to like article, Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules provides as under:

"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."

- 18. The Authority notes that there is no known difference in product under consideration produced by the Indian industry and exported from subject countries. Product under consideration produced by the Indian industry and imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The subject goods produced by the domestic industry are like article to the product under consideration imported from subject counties within the scope and meaning of Rule 2(d) of Anti-dumping Rules.
- 19. The various submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties during the course of the present investigation with regard to the scope of PUC and domestic like article and considered relevant by the Authority are examined and addressed as follows:
  - i. As regards the submission that the reflective glass, light green glass, green glass and transition glass should be specifically excluded from the purview of the product under consideration, the Authority notes that the PUC has been defined in the present investigation as "Clear Float Glass" and as such does not include the said products.
  - ii. As regards the submission that Clear float Glass, which is used for decorative, industrial or automotive processes, should be excluded from the scope of product under consideration, the Authority notes that clear float glass meant for decorative, industrial or automotive processes does not make it different from another clear float glass of 4mm to 12mm as long as both are technically and commercially substitutable within the purview of Anti-dumping Rules.
- 20. After considering the information on record, the Authority has determined that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods. The consumers are using the two interchangeably. Therefore, the Authority confirms the product under consideration as "Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4mm to 12mm (both inclusive)", the nominal thickness being as per BIS14900:2000.

# C. Domestic Industry and Standing

#### Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties

21. It is contended by certain interested parties that the Domestic Industry does not have the standing in terms of Rule 2(b) as the two other major domestic producer M/s Asahi India Glass Limited and Gujarat Guardian Ltd cannot be considered as supporters without providing any data in support. The Designated Authority must terminate the present investigation in the absence of lack of information provided by the other domestic producers who constitute a significant proportion of the total domestic production.

#### **Views of the Domestic Industry**

22. The applicants with or without the support from other two domestic producers, namely, M/s Asahi India Glass Limited (AIS) and Gujarat Guardian Ltd. (GGL), account for more than 50%

of the total Indian production. Further, the applicants have neither imported the subject goods from the subject countries nor are they related to any importer of the subject goods. Therefore, the applicants satisfy the requirements of 'standing' under Rule 5 of the AD Rules and also constitute 'Domestic Industry' in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.

# **Examination of the Authority**

23. Rule 2(b) of the AD Rules defines domestic industry as under: -

"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers"

24. The Application has been jointly filed by M/s Gold Plus Glass Industry Ltd., M/s HNG Float Glass Ltd. and M/s Saint-Gobain Glass India Ltd. There are two other producers, namely M/s Asahi India Glass Limited (AIS) and Gujarat Guardian Ltd. (GGL) who have supported the petition. The Authority notes that the petitioners account for more than 50% of the total Indian production and, therefore, production by the petitioners constitutes a major proportion in total production of the like product produced in India. It is further noted that none of the petitioners has imported the product under consideration nor are they related to an importer or exporter of the product under consideration. Therefore, the petitioners constitute 'Domestic Industry' in terms of Rule 2(b) of the AD Rules. Since the application is filed by applicants accounting for more than 50% of the total domestic production, it satisfies the requirements of 'standing' under Rule 5 of the AD Rules.

#### D. Confidentiality

#### Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties

- 25. Various submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties during the course of the present investigation with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are examined and addressed as follows:
  - i. The petition suffers from excessive confidentiality. The petition provides absolutely no information with respect to petitioner's policy regarding its distribution channels, commission/discount policy, credit terms, normal value calculation, purchase policy, sales policy, inventory etc.
  - ii. The domestic industry has claimed and has been allowed excessive confidentiality in the sense that they have not made available their annual report in the public file.
  - iii. The applicant domestic producers have claimed confidentiality on the costing information. It is submitted that the following information submitted as part of costing information can easily be provided in indexed form so as to indicate a trend along with the petition.
  - iv. Petitioner has not disclosed many material information relating to methodology used to refine the import data.

# Submissions made by the domestic industry

- 26. Various submissions made by the domestic industry with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are as follows:
  - i. Petitioner has claimed confidentiality on information provided by them as allowed in Rule 7 of the AD rules and a meaningful summary of such information were also provided. The claims of interested parties that the petitioner has claimed excessive confidentiality are baseless.
  - ii. On the other hand, excessive confidentiality has been claimed by the exporters in as much as the non-confidential versions of the questionnaire response were not the exact replica of the confidential version filed by the exporters as required under the Rules and the instructions on the issue.
  - iii. Basic information as to when the commercial operations of the exporters started has also not been provided.

# **Examination by the Authority**

- 27. Various submissions made by the interested parties during the course of the present investigation with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are examined and addressed as follows:
  - i. With regard to confidentiality of information, Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-
  - Confidential information: (1) Notwithstanding anything contained in sub-rules and (7) of rule 6, sub-rule (2), (3) (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.
  - (2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.
  - (3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.
  - ii. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of

the information filed on confidential basis. The Authority made available the non-confidential version of the evidences submitted by various interested parties in the form of a public file.

#### E. Miscellaneous Submissions

#### Submissions made by producers/exporters/importers/other interested parties

- 28. The miscellaneous submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority are as follows:
  - i. The application filed by the Domestic Industry is not in the form and manner prescribed by the Authority.
  - ii. The petition is deficient and, therefore, the investigation needs to be terminated.
  - iii. Moreover, there are several inaccuracies in the petition. Importers need not file questionnaire response in order to be treated as a cooperating importer. Non-filing or incomplete filing of response does not dilute the right of an interested party to make submissions.
  - iv. It is submitted that there are vital differences between the petition based on which the present investigation is initiated and the non confidential version of the petition supplied to the interested parties after incorporating the information for the 3 months suo-moto extended in the POI by the Authority.
  - v. The domestic industry has not provided any details of average selling price of indigenous product anywhere in Proforma IVB.
  - vi. It is to be noted that sheet glass, which is a commercial substitute of clear float glass, is also a similarly low priced import which may be considered to be another cause of injury, if any, to the applicant domestic producers. The presence and immediate availability of a commercial substitute for float glass could be reason as to why the domestic float glass producers may be suffering injury.
  - vii. It is relevant that during the POI, the exchange rate for USD that has been adopted by domestic industry is Rs 53.10. However, the prevailing rate of USD, as per the RBI, is currently Rs 61.90. It is also predicted that Rupee will not appreciate once again and may get depreciated further. This means that imports into India currently are priced significantly higher than what they used to be during the POI. It is also submitted that the applicant domestic producers arrived at a price undercutting of 15-25% considering the exchange rate of Rs 53.10. However, if the prevailing exchange rate is considered, which would present the most accurate picture, the level of price undercutting and price underselling would be eliminated.
  - viii. The Domestic Industry has not followed the Rule 7 while providing non-confidential version of the application.
  - ix. Support letters are not for complete period of investigation.

- x. Certifications provided by Domestic Industry are not correct and even not covering the complete period of investigation.
- xi. The time period in this case had expired on 10th April 2014. Both the dates, i.e., 5th June, 2014 or 12th May, 2014 fall beyond the expiry of one year period on 10th April, 2014. After the expiry of one year period, one cannot revive a dead investigation.

# **Views of the Domestic Industry**

- 29. The miscellaneous submissions made by the domestic industry during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority are as follows:
  - i. Producers/exporters from Saudi Arabia and UAE enjoy undue advantage in costing because of dual pricing of natural gas and other utilities. Therefore, the true price of natural gas should be reflected while calculating the cost of production.
  - ii. Certificates are not signed as per the prescribed guidelines. Moreover, complete addresses of plant and corporate office were also not provided by the exporters in response to the questionnaire sent by the Authority.
  - iii. The information provided in the petition is correct and shows no discrepancy as claimed by the interested parties. Further, the domestic industry has followed all the procedures prescribed in the Rules.
  - iv. Domestic Industry has provided complete details of selling price in the Proforma IV A and in the injury analysis. Therefore, mere non reproduction of the information at one place cannot be said as violation of any rule, particularly when the domestic industry has provided price undercutting separately while giving injury analysis.
  - v. The domestic industry has provided complete raw data to the Authority and explained the segregation methodology in detail. Thereafter, the domestic industry has only provided the data relevant for the investigation in the petition. It is also important to note that all the interested parties have made mere submissions and failed to present any evidence to show that the same is incorrect.
  - vi. It is submitted that the Sheet glass and Clear Float glass are technically and commercially different and therefore, cannot be termed as like product in any manner whatsoever. More importantly, none of the interested parties has placed any evidence to prove otherwise. Therefore, it is requested that Authority should completely reject the argument of substitutability raised by the interested parties.
  - vii. The methodology suggested by the interested parties that the Authority should use current exchange and determine price undercutting is wrong and contrary to the established practice of the DGAD. Moreover, the said methodology is also not sustainable either logically or legally. Therefore, same should be rejected.
  - viii. The contention of the interested parties about the extension of time is wrong. In our view,

the Ministry of Finance is fully empowered to extend the period even after the expiry of the period. Moreover, it is an administrative procedural issue.

# **Examination by Authority**

- 30. Various miscellaneous issues raised by the interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority are examined herein below:
  - a. As regards the argument of the opposing interested parties that the petition is deficient and, therefore, the investigation needs to be terminated, the Authority notes that the present investigation was initiated on the basis of prima facie evidence furnished by the domestic industry showing dumping, injury and causal link and justifying initiation of the investigation in accordance with the Act and Rules. The Authority has also called for additional information wherever required and verified the information furnished by the domestic industry.
  - b. With regard to the argument on certificates and support letter, it is noted that the same are complete and correct for the period of investigation.
  - c. As regards the argument of using current exchange rate for determining price undercutting, the Authority noted that the same is not practically possible and it would not be appropriate to analyze as effect of exchange rate in isolation when other factors are also variable in nature. Moreover, the same is logically and legally incorrect preposition to adopt.
  - d. As regards the issue of substitutability of the Sheet Glass and Clear Float Glass, it is noted that the same cannot be termed as like article in terms of Rule 2(d). Therefore, the same cannot be said to substitute.

#### NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

# F. Normal Value, Export Price and Dumping Margin

- 31. The submissions concerning normal value, export price and dumping margin made by the producers/exporters/importers/other opposing interested parties during the course of the investigation and considered relevant by the Authority are as follows:
  - i. The applicant domestic producers have sought to have an investigation initiated against the subject goods but have adduced no evidence in support of the same, which has been accepted by the DGAD. In this connection, it is submitted that no investigation is tenable without the fulfillment of the basic evidentiary standards and, therefore, the present investigation must be terminated immediately.
  - ii. The two conditions specified in the relevant provisions do not include "non-availability" of data relating to domestic selling prices as a ground for construction of normal value. The basis stated in the application for resorting to constructed normal value is thus erroneous.
  - iii. In all the investigations involving Saudi Arabia, the domestic industry has made a claim that a 'particular market situation' is prevailing in Saudi Arabia due to the low prices of natural gas. The Authority has rejected such claims in all the investigations. The respondents also submit that there are certain commodities in which some countries have a geographical

- advantage, and merely possessing such an advantage does not mean that there exists a "particular market situation" in an Anti-dumping investigation.
- iv. Obeikan Glass Company commenced commercial production on 1st July, 2011. The POI in the subject investigation is October, 2011 to December, 2012. The respondent is thus facing Anti-dumping action soon after starting its commercial production. During this period, the cost structure of the respondent was high on account of the huge start-up costs and low capacity utilization.
- v. The estimate of inland freight provided by applicant domestic producers is also not supported by any evidence. The applicant domestic producers have arbitrarily arrived at a set of figures to express its estimation of inland freight. The application did not contain any evidence as to how the figure cited as inland freight was arrived at and what the relevant calculations are.
- vi. The normal value and export price arrived at by petitioners in the petition cannot be accepted as correct since petitioners have not made available any evidence to support their computations.
- vii. The Designated Authority has also not followed the prescribed procedure with regard to Normal Value in terms of Para 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules.
- viii. The adjustments made by the applicants with respect to the export price are abnormally high and unsupported by any evidence. Therefore, the Authority should use correct adjustments while computing the export price.
- ix. Total quantum of imports from subject countries is very less and constitutes only around 6% of the demand in India.
- x. All the imports from Pakistan are coming via road transport. Hence, the expenditure on ocean freight is not applicable for imports from Pakistan.
- xi. The adjustment made for marine insurance in the petition is not acceptable for this reason.
- xii. Anti-dumping duty, if any, should be imposed on reference price basis.
- 32. The submissions made by the domestic industry concerning normal value, export price and dumping margin and considered relevant by the Authority are as follows:
  - a. The producers in Saudi Arabia and UAE enjoy undue advantage with respect to energy pricing, essentially on account of government intervention. The energy cost which is substantial part of the cost for the subject goods cannot be accepted on its face value on account of differential pricing policy followed in these countries. Moreover, this is not reflective of fair market price of utility cost in Saudi Arabia and UAE. The Authority is requested to take into account the market price of the utility cost while computing the cost of production for the purpose of determining normal value in Saudi Arabia and UAE.

- b. M/s Obeikan Glass Company has specifically withheld information from the Authority in relation to supply of raw material and utilities. Even the costing heads have not been provided in Appendix 8, which gives rise to a suspicion that they are attempting to hide something or to mislead the Authority.
- c. M/s Obeikan Glass Company has provided wrong and misleading information about the commencement of their operations. From their commercial presentation, it is clear that they have started their operations in April, 2011, whereas they are showing date of July 1, 2011. The same should be checked and if found correct the exporter should be rejected for providing false data.
- d. The request of Obeikan for accepting start-up cost adjustments needs to be rejected as the same is not part of non-confidential version of the response and most importantly because they have started their commercial operation prior to the period of investigation. According to the law and available jurisprudence, only when a firm starts commercial operation during the period of investigation, the start-up adjustments can be allowed. It is beyond any doubt that the M/s Obeikan has started operations much prior to the investigation.
- e. The exporter has also misled the Authority by not disclosing the fact that there are significant differences in the export sales and domestic sales, regarding packing, freight, delivery terms and payment terms while charting differences in export and domestic sales. Further, they have also not provided any details about service support they are providing in domestic market.
- f. In view of the fractured information provided by the M/s Obeikan Glass Company, Domestic Industry requests the Authority to reject their normal value for the purpose of this investigation.
- g. The Domestic Industry has provided all the evidences required during the investigation wherever required. Therefore, the contention of the interested parties that no information was provided is wrong and needs to be rejected.
- h. Without prejudice to the factual inconsistency by Obeikan in its claims, it is submitted that the claims of start-up cost adjustment are not available to the said exporter also on the ground that they had admittedly started the commercial production much prior to the period of investigation. Kind attention is invited to Paragraph 3(ii) of Annexure I of the Anti-dumping Rules which reads as under:
  - "(ii) unless already reflected in allocation of costs referred to in clause (1) and sub-clause (i) above, the designated authority, will also make appropriate adjustments for those non-recurring items of cost which benefits further and/or current production, or for circumstances in which costs during the period of investigation are affected by start-up operation."
- i. It may be seen from the above that the said rule empowers the Designated Authority to make appropriate adjustments only if costs during the period of investigation are affected by start-up operation. In other words, such adjustments under this clause are permitted only and only if the start-up operation has taken place during the Period of Investigation and has affected the costs of that period.

- j. It may also be noted that the Obeikan was setup sometime in 2010 and the commercial production started in February 2011, as is evident from the website of the exporter-producer. Since it is an admitted fact that the start-up operation did not take place during the POI, the question of making any adjustment on account of startup operation simply does not arise. In view thereof, the exporter cannot seek this adjustment as the exporter did not start his operations in the period of investigation.
- k. Adjustments under paragraph 3 (ii) of Annexure I on account of start-up of expenses claimed by the M/s Obeikan should be rejected as it is a undisputed fact that that M/s. Obeikan was an established industry as they were setup in the year 2010 and started commenced commercial production in February 2011 i.e., much prior to the period of investigation of October, 2011–December, 2012. Assuming but not accepting that they started their commercial production in July 2011, still it is much prior to the period of investigation and hence, not eligible for any adjustment in terms of the provisions cited above.
- 1. The issue of handling start-up costs has been very eloquently described in the US law (Section 773(f)(1)(C)(ii) of the Act) which throws considerable light on the methodology of computing the start-up costs. From the said section, the following would become obvious:
  - i. That the US law specifically mandates that the Authority ought to identify the start of the start-up period as well as the end of the start-up period [See 773(f)(1)(C)(ii) (4)(i)].
  - ii. That there are specific guidelines and understanding which have to be applied for determining the end of the start-up period [See 773(f)(1)(C)(ii) (2)]. These laws are based on sound economic principles and ought to be applied in India even if there are no specific guidelines in India.
  - iii. That the US law specifically provides that a producer's projections of future volume or cost will be accorded no weight [See 19CFR 35.407 (d)(3)(ii)]. It is submitted that there is no precedence of computing the costs of an exporter on hypothetical and arbitrary projections. It has been the consistent practice of the Authority to take into account only the actual costs as far as the exporters are concerned. There are no reasons for deviation from this practice and the plain position of law.
  - iv. That the US law provides that the production levels during the POI have to be limited due to technical factors associated with initial phase of commercial production.
  - m. It is further submitted that world-wide start-up costs is adjusted by amortizing the difference between actual costs and the costs of production calculated for startup costs over a reasonable period of time. The calculation of reasonable period can be decided on case to case basis. In the instant case, this period is typically 15-20 years which coincides with the expected life of the furnace.
  - n. In view of the above, it is clear that for the purpose of allowing adjustment on account of start-up costs, it would be necessary that:
  - i. The effect of start-up costs should be within the period of investigation.
  - ii. It should be demonstrated that the production levels during the POI were limited due to technical factors associated with initial phase of commercial production.

- iii. Details of the startup cost have to be provided by the exporter to even claim them as an adjustment.
- iv. The claim of adjustment has to be based on evidence, data, information or substantiation to justify such an adjustment.
- v. Details with evidence have to be provided for identifying the end of the startup period.
- vi. Details have to be provided on amortization of start-up cost over a reasonable period of time subsequent to the startup period over the life of the product or machinery.
- o. Domestic Industry in their submissions has also stated that as per the non-confidential version of the response and the website of Obeikan, the plant is not a new plant as admittedly the same was setup prior to the period of investigation. Further, none of the above necessary conditions and requirements have been fulfilled so as to allow the claim of start-up cost adjustment. The Domestic Industry further submitted that the non-confidential version of Appendix-8 does not even reveal the elements of costing which gives rise to suspicion that they are attempting to hide something or to mislead the Authority. ...It is submitted that no exporter can be allowed to keep even the elements of costs confidential that too without assigning any reasons. They have further submitted that the fact that the exporter's request for adjustment on account of the so-called start-up costs was cleverly and mischievously concealed in the non-confidential version of their response as well as in other correspondence. It was for the first time in the written submissions (not even during the hearing) that the claim of the exporter with regard to "start-up cost" came on board.
- p. In view of the above, any claim for adjustment of normal value on account of startup cost has to be necessarily disallowed.
- q. Without prejudice to the aforesaid, if the exporter has submitted any additional information / evidence during the verification visit, the same may be supplied to the Domestic Industry for its comments. This is also without prejudice to the contention that new information cannot be taken during the verification visit or after the public hearing is over. The Authority may refer to the case of CR Coils wherein a detailed report by a public sector enterprise regarding the technical capability of the Domestic Industry was rejected on the sole ground that the same was filed after the public hearing.
- r. The request of the exporter for granting reference price duty cannot be accepted. It is submitted that the reference price based duty does not take into account the price and cost volatility of the subject goods. In such a scenario, duty based on reference price will not be able to provide sufficient and effective protection to the domestic industry against dumped imports from the subject country.

#### **Examination by Authority**

- 33. Under section 9A (1) (c), normal value in relation to an article means:
- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or

- (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either
  - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);
- 34. The Authority sent questionnaires to the known exporters from the subject countries advising them to provide information in the form and manner prescribed. However, barring the following producers and exporters, none of the other producer/exporter from subject countries has cooperated in this investigation by filing their Questionnaires' responses.
  - (i) M/s Obeikan Glass Company, Saudi Arabia.
  - (ii) M/s Arabian United Float Glass Co., Saudi Arabia.
  - (iii)M/s Emirates Float Glass LLC, Abu Dhabi, UAE.
  - (iv)M/s Ghani Glass Company, Pakistan.
- 35. Since the above mentioned companies have filed the questionnaire response, the Authority has determined individual dumping margin in respect of these companies. The general methodology adopted for determination of Normal Value for them was that it was first seen whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters in their home markets were representative and viable for permitting determination of Normal Values on the basis of domestic selling prices and whether the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondents. In other cases, i.e., where the domestic sales of the subject goods by the responding exporters in their home markets were not representative and viable for permitting determination of Normal Values on the basis of domestic selling prices and where the ordinary course of trade test was not satisfied, the costs of production including SG&A expenses claimed by the respective exporters have been accepted after verification and after adding 5% towards profit, the normal value has been determined.
- 36. In the absence of cooperation from the other producers/exporters in the subject countries, the Authority has determine the normal value, on the basis of facts available in terms of Rule 6 (8) of AD Rules read with Article 6.8 of the Agreement.
- 37. Accordingly, the Authority has determined the normal value, export price and dumping margin in respect of producers/exporters of the subject countries as follows:

#### Normal Value in case of M/s Obeikan Glass Company, Saudi Arabia

38. The questionnaire response was perused and it was found that the respondent has provided domestic sales price details of the subject goods in Appendix 1 and 3B of their response. It was noted that the weighted average domestic selling price so determined was less than the weighted average domestic cost of production and the loss making domestic sales transactions were more than 20% of the total domestic sales. Therefore, the Authority has proceeded to determine the Normal value based on the profitable domestic sales in terms of the provisions of Annexure I of

the AD Rules.

- 39. As regards the claim of the exporter for adjustment in the cost on account of the start-up costs, the Authority observes that the law indeed provides for such adjustments in terms of paragraph 3 of Annexure I to the Anti-dumping Rules subject to the conditions mentioned therein. The relevant portion of the said paragraph is reproduced below:
  - "(ii) unless already reflected in allocation of costs referred to in clause (1) and sub-clause (i) above, the designated authority, will also make appropriate adjustments for those non-recurring items of cost which benefits further and/or current production, or for circumstances in which costs during the period of investigation are affected by startup operation."
- 40. It is noted that the said provision does not elaborate as to the exact meaning of the term "start-up costs" nor does it give any guidance on the circumstances under which such adjustments are to be allowed. There is also no methodology prescribed for making such adjustments. However, the Domestic Industry has drawn the attention of the Authority to the provisions of the US laws and practices on the issue in great detail. While the US laws are not binding on the Authority in any manner whatsoever, the Authority is of the view that the economic rationale and the methodology of the said provisions do not lose their importance. From a careful analysis of the aforesaid provisions, it appears that the start-up costs are intricately related to the difficulties which the industry may have to face in the initial phase of their operations. Certainly, these difficulties have to be related to the technical issues and not the slowness of operations for any other reasons. Secondly, it needs to be clearly identified as to what are the starting point and the end-point of the start-up period.
- 41. The Authority also notes the objection of the Domestic Industry that the exporter had not indicated that their intent to claim adjustment on account of the start-up costs in the non-confidential version of the exporter's questionnaire response. The Domestic Industry has also vehemently raised the issue that the exporter has not given such information until the stage of the post-hearing written submissions.
- 42. Keeping the above in mind, the Authority notes that though the exporter has a right to claim the adjustment on account of such pre-commercial operations costs which may be having an effect on the costs during the period of investigation, yet at the same time, the Authority is of the view that any adjustment in the actual cost has to be based on actual figures and information. It is seen that based on actual figures and information, the claim of the exporter does not meet the criteria and tests for treating such costs as "start-up" costs and, therefore, the Authority has decided not to consider adjustment on account of start-up cost.
- 43. The exporter has claimed adjustments on account of (a) Rebates (b) Inland freight and (c) Credit cost and bank charges. It was explained during verification visit that there is no difference in the packing cost incurred for domestic sales and export sales and, therefore, the exporter has not claimed any adjustments in this regard. The adjustments claimed by the exporter have been accepted after verification. Accordingly, the Normal value at ex-factory level of US\$ \*\*\*per MT has been determined.

# Export price in case of M/s Obeikan Glass Company, Saudi Arabia

44. The Authority notes from the Appendix 2 of M/s Obeikan that it had exported directly to India \*\*\*MT of the subject goods valued at SR \*\*\* to unrelated parties. OGC had claimed the

adjustments on account of (i) Inland and Overseas freight, (ii) Overseas insurance (iii) Credit expenses, (iv) port handling and customs broker fee, (d) bank charges. It was explained during verification visit that there is no difference in the packing cost incurred for domestic sales and export sales and therefore the exporter has not claimed any adjustments in this regard. The Authority had verified the exports to India and the adjustments claimed by OGC and determined the net export price at US\$ \*\*\*per MT.

# Normal value in case of M/s Arabian United Float Glass Co., Saudi Arabia

45. The questionnaire response was perused and it was found that the respondent has provided selling price details of the subject goods in relevant Appendices of their response. The Authority has verified the details furnished by the exporter to the extent considered necessary. The Authority notes that the exporter has allocated the manufacturing costs between PUC and non-PUC as per their consistent practice. During the verification, the Authority was not provided any documentary evidence in support of their claim. Further, the Authority is not in a position to appreciate that the cost of production of the product could be allocated on the basis of sales quantity rather than the production quantity. The Authority has, therefore, revised the cost allocation and reworked the cost of production/sales. At the reworked cost of sales, the domestic sales made by the exporter did not pass the ordinary course of trade. The Authority has, therefore, constructed the normal vale based on the revised cost of production and after adding profit at 5% of cost of sales. The Normal value for the exporter so determined works out to US\$

\*\*\*per MT.

# Export price in case of M/s Arabian United Float Glass Co., Saudi Arabia

46. During the POI, the company has exported \*\*\*MT of the subject goods to India at an average invoice price of US\$ \*\*\*per Mt. The exporter has claimed adjustments on account of Ocean Freight, Inland freight and handling charges, Insurance (in case of CIF). The data were verified to the extent considered necessary and based on such verified data the net export price has been determined at US\$ \*\*\*per Mt.

# Normal value in the case of other producers and exporters from Saudi Arabia

47. The normal value for other producers/exporters in Saudi Arabia has been determined on the basis of facts available in terms of 6(8) of the Antidumping Rules and the same works out to US\$ \*\*\*per MT.

#### Export price in case of other producers and exporters from Saudi Arabia

48. In view of the non cooperation of other exporters from Saudi Arabia in this investigation, the export price for other exporters has been determined on the basis of best facts available in terms of Rule 6(8) of the Antidumping Rules. The net export price so determined works out to US\$ \*\*\*per MT.

#### Normal Value in case of M/s Emirates Float Glass LLC, Abu Dhabi, UAE

49. The questionnaire response was perused and it was found that the respondent has provided domestic sales price details of the subject goods in relevant Appendixes of their response. It was noted that the weighted average domestic selling price so determined was less than the weighted average domestic cost of production and it was also noted that the loss making transactions were

more than 20% of the total sales. Therefore, the Authority has proceeded to determine the normal value based on the profitable sales in terms of the provisions of Annexure I of the AD Rules. The adjustments claimed by the exporter have been verified and accepted to the extent found correct. The Normal value of the exporter so determined works out to US\$ \*\*\*per MT.

# Export price in case of M/s Emirates Float Glass LLC, Abu Dhabi, UAE

50. During the POI, M/s Arabian Emirates has sold \*\*\*MT of the subject goods in the Indian market at an average price of US\$ \*\*\*per Mt. The exporter has claimed adjustment on account of inland freight, overseas freight, clearance & handling charges, overseas insurance and credit cost, and the same have been accepted after verification. Thus, the export price for the exporter has been determined at US\$ \*\*\*per MT.

#### Normal value in case of other producers and exporters from UAE

51. The normal value for other producers/exporters in UAE has been determined on the basis of facts available in terms of 6(8) of the Antidumping Rules and the same works out to US\$ \*\*\*per MT.

# Export price in case of other producers and exporters from UAE

52. In view of the non cooperation of other exporters from UAE in this investigation, the export price for other exporters has been determined on the basis of best facts available in terms of Rule 6(8) of the Antidumping Rules. The net export price so determined works out to US\$ \*\*\*per MT.

#### Normal Value in case of M/s Ghani Glass Limited, Pakistan

53. The questionnaire response was perused and it was found that the respondent has provided domestic sales price details of the subject goods in relevant Appendixes of their response. It was noted that the weighted average domestic selling price so determined was less than the weighted average domestic cost of production and it was also noted that the loss making transactions were more than 20% of the total sales. Therefore, the Authority has proceeded to determine the normal value based on the profitable sales in terms of the provisions of Annexure I of the AD Rules. The adjustments claimed by the exporter have been accepted. The Normal value of the exporter so determined works out to US\$ \*\*\*per MT.

# Export Price in case of M/s Ghani Glass Limited, Pakistan

54. During the POI, M/s Ghani Glass Company has sold \*\*\*MT of the subject goods in the Indian market at an average price of US\$ \*\*\*per Mt. The exporter has claimed adjustment on account of inland freight, overseas freight, clearance & handling charges and bank charges and the same have been accepted. Thus, the export price for the exporter has been determined at US\$ \*\*\*per MT.

#### Normal Value in case of other producers and exporters from Pakistan

55. The normal value for other producers/exporters in Pakistan has been determined on the basis of facts available in terms of Rule 6(8) of the Antidumping Rules and the same works out to US\$ \*\*\*per MT.

# Export price in case of other producers and exporters from Pakistan

56. In view of the non cooperation of other exporters from Pakistan in this investigation, the export price for other exporters has been determined on the basis of best facts available in terms of Rule 6(8) of the Antidumping Rules. The net export price so determined works out to US\$ \*\*\*per MT.

# **Dumping Margin**

57. Considering the normal values and export prices for the subject goods as determined above, the dumping margin for the subject goods as a whole has been determined as follows. It is seen that the dumping margin for the subject goods is more than de-minimis and significant.

# **Dumping Margin Table**

Country	Exporter/Producer	Normal Value	Net Export Price	Dumping Margin		
		(US\$/MT)	(US\$/MT)	US\$/MT	%	Range
Saudi Arabia	Obeikan Glass Company, Saudi Arabia	***	***	***	***	20-30
Saudi Arabia	Arabian United Float Glass Co, Saudi Arabia	***	***	***	***	55-65
Saudi Arabia	Non Cooperative producers/exporters	***	***	***	***	85-95
UAE	Emirates Float Glass LLC, UAE	***	***	***	***	25-35
UAE	Non Cooperative producers/exporters	***	***	***	***	40-50
Pakistan	Ghani Glass Limited, Pakistan	***	***	***	***	25-35
Pakistan	Non Cooperative producers/exporters	***	***	***	***	50-60

#### G. INJURY ASSESSMENT AND EXAMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

#### Submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties

- 58. The following are the injury related submissions made by the producers/exporters/importers/other interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority:
  - i. DGAD is required to examine the data of not only the petitioner company but also other domestic producers in the market. There are 5 producers in the market, as was stated by the petitioner. That being the case, DGAD should direct petitioners to submit information about the other producers or require other domestic producers to provide necessary information for the purposes of evaluating injury.
  - ii. Import prices have increased during the injury period and, therefore, the claim of the petitioners that the dumped imports are affecting profitability and their inability to increase the selling price has no merit. There is no volume effect as well.

- iii. It is submitted that the applicant domestic producers have not fulfilled the requirement with respect to Article 3.4 which mandates that 'actual and potential' decline in various factors be examined and established for a positive finding of injury.
- iv. It is submitted that even though the market share of imports from subject countries has slightly increased in the POI as compared to base year, there is no volume injury.
- v. The production of the domestic industry has significantly improved and the domestic industry has expanded its plant capacity over the period in a very significant manner. Thus, there is no adverse impact on this factor because of alleged dumped imports. It is also not out of place to mention here that the Indian capacity is significantly higher than the domestic demand for the product.
- vi. Negligible imports from subject countries do not cause any injury to the Domestic Industry.
- vii. There has been a marked improvement in production, production capacity, sales, employment, productivity (per day as well as per employee), etc. Thus, injury claimed by domestic industry holds no merit.
- viii. The CIF prices of imports from Saudi Arabia have undergone a consistent increase throughout the period of injury as well as the POI. The CIF price per MT underwent an increase from Rs 10790 in 2009-10 to Rs 11457 in 2010-11 and Rs 12773 in 2011-12. During the POI, it increased further to Rs 14942 which is an absolute increase of 38% from the CIF price per MT in 2009-10.
  - ix. When the applicants command a market share of 93%, it is absurd to consider that import volumes from Saudi Arabia which forms less than 5% of the total demand are capable of causing injury to the Applicants.
  - x. The increase in prices and the subsequent decrease in profits indicate that there is no link between the injury, if any, that the applicant domestic producers may be suffering.
  - xi. One applicant domestic producer, M/s HNG Float Glass Limited has submitted information before the Competition Commission of India against M/s Saint Gobain Glass India Ltd (SGGIL) putting forth a slew of allegations against SGGIL including abuse of dominant position, aggressive and unfair pricing strategy, anti-competitive and abusive marketing strategies, in addition to alleging that the weakening of its competitors were the above factors.
- xii. HNG Float Glass Ltd has also specifically stated that the Saint Gobain Glass India Ltd was responsible for the reduction of prices of clear float glass in the marketplace.
- xiii. Internal competition between applicant Domestic Producers is a crucial factor to be taken into account while analyzing injury. The Respondent submits that the authority is required to grant this factor due importance while making any determinations with regard to injury.

- xiv. In addition to above, the following factors clearly demonstrate absence of causal link between alleged dumping from subject countries and injury caused to the domestic industry:
  - a) The imports from subject countries remained at very miniscule levels vis-à-vis demand for the subject goods in India during the injury period ruling out any volume effect of imports from subject countries on the domestic industry;
  - b) The landed price and selling price of the domestic industry showed increasing trend ruling out any price effects on the domestic industry. In fact, there is an inverse relation between landed price of imports and selling price of the domestic industry;
  - c) The most important aspect which disproves the entire argument of the petitioner with regard to causal relationship between alleged dumping and injury is that the profitability of the domestic industry showed tremendous improvements and recovery over the previous years during the POI. This should not have been the case in case of a causal relationship between the alleged dumping and injury. Thus, there is an inverse relation between alleged dumping and injury in the present case;
  - d) It can be fairly ascertained that other factors were causing injury to the domestic industry in the previous years except base year. It is not demonstrated by the petitioner that such other factors were inexistent during the POI and the injury claimed by them are solely due to alleged dumping from subject countries;
  - e) Segregation of injury for other reasons and alleged dumping is inevitable as the domestic industry was making losses during the previous years except base year on account of other reasons and it is not demonstrated that such other reasons were inexistent during the POI.
  - f) Under the above factual circumstances, when only miniscule volume of subject goods reached India from subject countries during the injury period, when the landed price of such imports showed a continuous increases, when both volume and price parameters of injury concerning domestic industry showed improvements at a time when the petitioner alleged dumping of subject goods from subject countries, it can be fairly concluded that the situation shows absence of causal link between the alleged dumping and alleged injury.
- xv. The real cause for the alleged injury to the petitioner is not dumping of subject goods but rather due to other reasons such as the internal competition with other domestic producers.
- xvi. There is no price effect on domestic prices due to alleged dumped imports.

#### **Views of the Domestic Industry**

59. The following are the injury related submissions made by the domestic industry during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority:

- i. Imports of the product under consideration have shown significant increase over the years with a significant increase in POI;
- ii. Imports have increased in relation to production and consumption in India;
- iii. Market share of the subject countries in demand is significant. Market share of the domestic industry has decreased in the POI as compared to the base year. The same is due to significant imports from the subject countries;
- iv. With reduction in the prices by the foreign producers, the only choice available to the Indian producers is to either realign their prices with the changes in the import prices or to lose orders and hence the market share;
- v. Domestic industry prices reflect the effect of the prices that are being offered by the importers in the domestic market;
- vi. Imported goods have been undercutting the prices of the domestic industry. Price undercutting in respect of the product under consideration is quite significant.
- vii. Inventories with the domestic industry increased in the POI as compared with the base year.
- viii. Performance of the domestic industry has steeply deteriorated in terms of profits, return on investments and cash profits to a very significant extent. Moreover, no conclusions can be seen from the profitability of GGL (multi-product company) from its balance sheet as the GGL is multi-product company and the product under investigation is one part of that product group.
- ix. The decline in profitability of the domestic industry was due to significant increase in the import volume at non-remunerative prices from the subject countries.
- x. The increase in selling price was lower than the increase in cost of production and thus the dumped imports are creating price suppression effect on the domestic industry.
- xi. As regards the submissions of interested parties that low quantum of imports and their impact of domestic industry, it is submitted that the imports from all the subject countries is above threshold limit of 3% and, therefore, it would be wrong to say that imports are miniscule. Moreover, the landed value is way below the cost and selling price of the domestic industry to cause injury. The Authority may like to appreciate that none of the exporters has claimed that they are not dumping the subject goods. Therefore, the Domestic Industry requested the Authority to kindly reject all the claims made by the responding interested parties.
- xii. The domestic industry has suffered material injury in connection with dumping of subject goods from subject countries. Further, the domestic industry is threatened with continued injury, should the present condition continue.
- xiii. It is submitted that the interested parties had mischievously cited only the allegation part of the investigation and intentionally chosen to withhold the findings of the commission. It is a matter of record that the CCI held that not only SGGIL is not abusing its dominant position; it is in fact not even a dominant player. The relevant portion of finding is reproduced below for

the ready reference of the Authority:

"Para 64

In the result, the Commission is of opinion that no case of contravention of the provisions of "Section 4 of the Act is made out against the opposite party and concurs with the findings of the DG in this regard."

xiv. In view of the above, it may be seen that the reference to the CCI investigations by the exporters is only with the objective of creating confusion and has not merit. This is without prejudice to our basic contention that a complaint by a co-applicant in fact proves that there is no collusive behavior within the industry and that there are healthy conditions of competition amongst them. We also want to draw the kind attention to the Authority to the earlier decision of the Competition Commission, where the Commission very categorically said that the glass industry is facing serious competition from the imported goods.

# **Examination by the Authority**

- 60. As regards the submissions of some of the interested parties that the Designated Authority is required to examine the data of not only the petitioner company but also other domestic producers in the market, the Authority notes that the petitioner companies constitutes domestic industry under the rules and, therefore, there is no need to examine the data of the supporting companies. moreover, the other two domestic producers do not fall under the category of domestic industry in terms of Rule 2(b) as discussed in detail under the respective paragraphs.
- 61. The Authority has computed the non-injurious price in accordance with Annexure III to the Anti-dumping Rules and the established practices of the DGAD.
- 62. With regard to the analysis relating to injury to the Domestic Industry, Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.
- 63. Further, Annexure II to the Anti Dumping Rules provides that in case of imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports in case it determines that:
  - i) The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three percent, the imports cumulatively account for

- more than seven percent of the imports of the like article, and;
- ii) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in the light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.
- 64. The Authority notes that it is appropriate in this investigation to cumulatively assess the effects of imports of the subject goods from the subject countries on the domestically produced like article in the light of conditions of competition between the imported article and the like domestic article and also the volume and the dumping margin of the imports from these countries is more than de-miminis levels
- 65. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

- 66. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra.
- 67. The injury analysis made hereunder addresses various submissions made by the interested parties during the course of the present investigation and considered relevant by the Authority.

#### **Volume Effect of Dumped Imports**

#### Import Volume and Market Share

68. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied on the import data procured from the DGCI&S. The volume of imports of the subject good from the subject countries have been analyzed as under:

					POI (15	POI
Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12	months)	(Annualized)
Subject Countries	MT	24996	19744	17088	88799	71039
Saudi Arabia	MT	5771	1324	7954	56820	45456
Pakistan	MT	5320	373	-	2898	2319
UAE	MT	13905	18047	9134	29081	23264

Other Countries	MT	15971	14504	15157	19770	15816
Total Imports Volume	MT	40966	34248	32245	108569	86855
Domestic Industry sales	MT	269380	418154	494621	611120	488896
Sales of other domestic						
producers	MT	245270	171052	241300	336641	269313
Total domestic sales	MT	514650	589206	735921	947761	758209
Total demand	MT	555616	623454	768166	1056330	845064
Market share in Imports						
Subject Countries	%	61	58	53	82	82
Other Countries	%	39	42	47	18	18
Market share in demand						
Subject Countries	%	4.50	3.17	2.22	8.41	8.41
Other Countries	%	2.87	2.33	1.97	1.87	1.87
Domestic Industry	%	48.48	67.07	64.39	57.85	57.85
Other Domestic Producers	%	44.14	27.44	31.41	31.87	31.87
<b>Total Domestic Sales</b>	%	92.63	94.51	95.80	89.72	89.72

- 69. The Authority notes from the above data that the imports from Pakistan are less than the de minimis level in POI. The Authority further notes that the import data provided by DGCI&S does not include the imports made from Pakistan through Wagah Customs port. The Authority further notes that there are two known exporters from Pakistan and one of them has responded to the questionnaire. The Authority also notes from the data provided by the cooperative exporter that the volume of imports from Pakistan is more than the de minimis level. The Authority has, therefore, considered Pakistan as one of the subject countries and accordingly made the injury analysis.
- 70. It is noted from the above table that imports of the subject goods from subject countries have increased in absolute terms in the POI as compared to the base year, i.e., 2009-10.
- 71. The market share of imports from subject countries in relation to the overall imports has also gone up significantly from the base year as compared to the POI. The increase is significant. Similarly, the market share of imports from subject countries in the total demand has also increased by almost two times during the same period. It is also seen that the market share has also gone up in relation to the production of the Domestic Industry in the country from the base year to the POI. Thus, it is seen that the volumes from subject countries have increased significantly in absolute terms as well as in relation to the domestic production, imports and the overall demand in the country. As regards the submission of the interested parties that the imports from specific countries are too small as compared to the total demand in the country, the Authority notes that the imports from all the subject countries is above de minimis level.

#### **Price Effect of Imports**

72. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped

imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price suppression and price depression, if any.

#### **Evolution of Prices over the Period**

73. In the injury period, the average CIF prices of the imports originated in subject countries has been as under:

Subject Countries	Import price (CIF)			
Unit	US\$/MT	Rs./MT		
2009-10	241	11627		
2010-11	296	13645		
2011-12	273	13128		
October 11 to December 12 (POI)	232	12300		

74. It is seen from the above table that the CIF import price of subject goods has increased until the year 2010-11 in US\$ terms but decreased thereafter. However, the Authority notes that import prices in US \$ terms have considerably declined in the POI when compared to any preceding year. The Authority is required to examine the data for the entire injury investigation period and not only a comparison of the POI and the base year. It is noted that the decrease in prices as compared to the immediately preceding two years is significant particularly when the costs have gone up during the corresponding period. Detailed analysis has been done in the latter part of the injury analysis.

# **Price Undercutting**

75. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry.

Subject countries	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Landed price of imports	Rs./MT	12952	15201	14625	13688
Net Sales Realization	Rs./MT	***	***	***	***
Net Sales Realization	Index	100	102	108	121
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	Range %	25-35	5-15	15-25	40-50

Saudi Arabia	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Landed price of imports	Rs./MT	10118	13048	12690	13325

Net Sales Realization	Rs./MT	***	***	***	***
Net Sales Realization	Index	100	102	108	121
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	Range %	55-65	20-30	35-45	40-50

Pakistan	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Landed price of imports	Rs./MT	13118	15622	-	14187
Net Sales Realization	Rs./MT	***	***	***	***
Net Sales Realization	Index	100	102	108	121
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	Range %	20-30	0-10	-	35-45

UAE	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Landed price of imports	Rs./MT	14065	15350	16309	14348
Net Sales Realization	Rs./MT	***	***	***	***
Net Sales Realization	Index	100	102	108	121
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	Range %	10-20	5-15	5-15	30-40

76. The Authority notes that the landed values of the subject goods were much below the selling price of the domestic industry showing significant price undercutting being caused by the dumped imports from the subject countries in the POI.

# **Price Underselling**

77. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject countries, as follows:

Particulars	Unit	Saudi Arabia	Pakistan	UAE	Subject Countries
Volume of imports	MT	56820	2898	29081	88799
Landed price of imports	Rs./MT	13325	14405	14348	13688
Non Injurious Price	Rs./MT	***	***	***	***
Price Underselling	Rs./MT	***	***	***	***
Price Underselling	%	***	***	***	***
Price Underselling (%)	Range	90-100	70-80	70-80	80-90

78. It is noted from the above table that the domestic industry has suffered significant price

underselling on account of imports of the subject goods from the subject countries.

#### **Price Suppression and Depression**

79. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. Table below shows the factual position:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Landed Value of Imports	Rs./MT	12952	15201	14625	13688
Index	Indexed	100	117	113	106
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	107	119	125
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	102	108	121

- 80. It is seen that the selling prices of the subject goods in the domestic market has not increased in comparison to increase in the cost.
- 81. It is also noted from the table above that the cost of sales has shown an increasing trend throughout the injury investigation period. While the cost of sales has gone up by 25% in the POI as compared to the base year, the selling price has gone up by 21% only. This position is reflected in the falling profitability of the Domestic Industry over the injury investigation period. It is also noted that the landed value has registered increase by 6% in the POI as compared to the base year and the same is not commensurate with the increase in the cost of sales of the domestic industry over the same period. Overall, it is noted that cost of sales have increased significantly during the injury period. Further, the selling price of the subject goods has not increased in proportion to the increase in the cost of sales during the same period. Accordingly, it is apparent that the dumped imports of subject goods from subject countries have suppressed the domestic industry prices.

# H. Economic Parameters of the Domestic Industry

- 82. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.
- 83. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed herein below:
  - **a. Market share:** The effect of the dumped imports on the domestic sales and the market share of the domestic industry have been examined below. As mentioned earlier, imports of

the subject goods from subject countries have increased in absolute terms in the POI as compared to the base year, i.e., 2009-2010. The imports have gone up from 24996 MT in the base year of 2009-2010 to 88799 MT during the POI and 71039 MT in POI annualized, which is an increase of more than 180% (annualized).

Particulars	2009-10	2010-11	2011-12	POI	POI (Annualized
Domestic Industry sales (MT)	269380	418154	494621	611120	488896
Sales of other domestic producers (MT)	245270	171052	241300	336641	269313
Total domestic sales	514650	589206	735921	947761	758209
Imports from subject countries (MT)	24996	19744	17088	88799	71039
Imports from other countries (MT)	15971	14504	15157	19770	15816
Total Imports (MT)	40966	34248	32245	108569	86855
Total demand (MT)	555616	623454	768166	1056330	845064
Trend	100	112	138	190	152
Market share of Domestic Sales in demand	93%	95%	96%	90%	90%
Percentage of Share of imports from Subject countries in demand	4%	3%	2%	8%	8%

**b. Profitability:** It can be seen from the table below that the overall losses of the Domestic Industry have increased significantly over the injury investigation period. Same trend is seen with respect to the profitability per unit.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI	POI (Annualized)
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	107	119	125	125
Selling price	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	102	108	121	121
Profit/Loss	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend of Losses	Index	-100	-184	-299	-204	-204
Profit/Loss	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Index	-100	-286	-549	-462	-370
PBIT	Rs. Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	-70	-472	-102	-82

**c. Return on Investment:** The return on investment has seen similar trend as that of profitability as can be seen from the table below and it is noted that the ROI has become negative from 2010-11 to the POI in comparison to the base year.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI	POI
						(Annuali-
						zed)
Return on Investment	%	***	***	***	***	***
Trend	Index	100	-64	-364	-73	-58

d. Cash Flow: The fact that the even the cash flow for the Domestic Industry has become negative during the POI indicates that the dumped imports and the falling performance of the Domestic Industry has had an adverse impact on the cash flow position. It is noted from the table below that the costs of sales have increased in the POI as compared to the base year i.e., 2009-10. Since the increase in sales price is not commensurate with the increase in the cost of sales, the profits of the domestic industry have declined significantly in the POI as compared to the base year. Moreover, the Domestic Industry has suffered losses in the injury investigation period. Similarly, Domestic Industry has incurred cash losses during the injury investigation period though marginal cash profits were made during the base year.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI	POI (Annualized)	
Cash Profit/Loss	Rs. Lacs	***	***	***	***	***	
Trend	Indexed	100	-4	-267	-47	-37	

e. Production and Capacity Utilization: It can be seen that the production of the Domestic Industry has increased which is largely due to the increase in production capacity which has increased by more than 50% keeping in view the increasing demand in the country. The capacity utilization of the Domestic Industry has remained in the same band despite the fact that the demand during the POI has increased substantially. It is, however, noted that there are significant idle capacities lying with the Domestic Industry to cater to the increasing demand and, therefore, the Domestic Industry has suffered injury on account of significant idle capacities.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI	POI (Annuali-
						zed)
Capacity	MT	678300	861900	1027960	1285480	1028384
Total Production	MT	540617	693443	821298	1065839	852671
Production – PUC (4mm-12mm)	MT	323025	458942	522964	639371	511497
Capacity Utilization	%	80	80	80	83	83
Sales volume						
Domestic	MT	269380	418154	494621	611120	488896
Exports	MT	14495	15521	16269	20635	16508
Total Sales	MT	283875	433675	510890	631755	505404

**f. Sales Volumes:** It is seen from the above table that the sales volume of the Domestic Industry has also gone up throughout the injury investigation period. The sales have gone up which reflects the increasing market size. However, the Authority notes that even though the Domestic Industry has been able to increase its sales volume, it has nevertheless suffered on the price front leading to cash losses.

**g. Inventories:** The data relating to inventory of the subject goods is shown in the following table. It is noted from the table given below that the average stock during POI has increased significantly as compared to the base year. The increasing trend can be seen in the POI even when compared to the immediately preceding year. It is observed that the inventories have increased in the POI as compared to the immediate preceding year also.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI	POI (AnnuAlized)	
Average Stock	MT	***	***	***	***	***	
Trend	Index	100	140	137	144	144	

h. Employment and Wages: The position with regard to employment and wages is as follows. It is seen that employment level has declined marginally during the POI and the wages per employee have increased in the POI.

	2009-10	2010-11	2011-12	POI (15 months)	POI
Particulars					(Annualized)
Employees (Nos.)	***	***	***	***	***
Trend	100	104	120	117	117
Wages per employee (Rs)	***	***	***	***	***
Trend	100	140	145	217	173

**i. Productivity:** It can be seen from the table below that productivity in terms of production per employee has increased in the POI as compared to the base year. Despite increase in productivity, the performance of the Domestic Industry has deteriorated in the POI. Accordingly, productivity is not a factor that can be attributed to injury.

					POI
Particulars	2009-10	2010-11	2011-12	POI	(Annualized)
Production (MT)	323025	458942	522964	639371	511497
Employees (Nos.)	***	***	***	***	***
Production (MT)/ employee	***	***	***	***	***
Trend	100	137	134	169	135

- j. Magnitude of Dumping: Magnitude of dumping is an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margin determined against the subject countries are above de minimis and significant. The Authority has determined that the dumping margin of the cooperating exporters which is significantly high.
- k. Ability to raise Capital Investment: The future investment in the sector is marred by the presence of dumped imports from the subject countries. The sharp decline in profitability, return on investment along with reduced cash flow indicates that the ability of the domestic industry to raise capital investments for the sector is jeopardized due to dumped imports from the subject countries.

- I. Factors affecting domestic prices: Considering the import prices from subject countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market show that the landed value of imported material from subject countries are significantly below the selling price and non-injurious price of the domestic industry causing significant price undercutting and underselling in the Indian market. The imports of the product under consideration from countries other than subject countries are not injuring the domestic industry as the prices offered by these countries are significantly higher. Demand for the product is showing an increase and, therefore, could not have been a factor responsible for price depression and suppression faced by the domestic industry. It is thus evident that the dumped goods from subject countries are responsible for the depressed and suppressed prices of the domestic industry.
- **m. Growth:** There was positive growth of the domestic industry in terms of sales and production in the POI as compared to the base year. However, same has declined in the POI as compared to just preceding year, i.e., 2011-12. Profits, cash profit as well as ROI declined significantly in the POI as compared to the base year despite significant increase in demand. The domestic industry has contended that with increase in capacity, the domestic industry had expected robust growth in profits, comfortable cash flow and increase in return on investments. However, the domestic industry was not able to achieve the same due to the presence of the dumped imports from the subject countries.

# I. Conclusion on Material Injury

84. An examination of the various parameters of injury along with the volume and price effects of imports clearly reveals that material injury has been caused to the Domestic Industry during the period of investigation. There is an increase in the volume of imports of subject goods from the subject countries during the injury investigation period in absolute terms as well as in relation to the total imports, domestic production and total demand in the country. With regard to price effect on account of imports of subject goods from subject countries, it is noted that imports of the subject goods from subject countries are significantly undercutting the prices of domestic industry. Further, the domestic industry has suffered price suppression on account of imports of product under consideration from subject countries as sales price of subject goods has not increased in proportion to increase in cost of production of subject goods during the injury period. Comparison of the landed values with the non-injurious prices of the Domestic Industry also reveals significant price underselling. In view of the above, it is concluded that even though the performance of the domestic industry has marginally improved in respect of production, capacity utilization and domestic sales, the performance has deteriorated in respect of profit, cash flow, return on investment and inventories. The decline in profits, return on investment and cash flows is quite significant and material. Thus, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury during the period of investigation.

# J. Other Known Factors & Causal Link

85. Having examined the existence of material injury, volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, underselling and price

suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti-dumping have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry.

# (a) Volume and prices of imports from third countries:

86. Imports of the product under consideration from countries other than subject countries are at higher prices. It is seen from the table below that the import prices from other countries were much higher than the import price from subject countries. The Authority further notes that while the volume of imports from other countries has shown declining trend in the POI (annualized) as compared to the base year, the volume of imports from subject countries has shown a rising trend.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI	POI
						(Annualized)
Import Volume						
Subject Countries	MT	24996	19744	17088	88799	71039
Other Countries	MT	15971	14504	15157	19770	15816
					10856	
Total Imports	MT	40966	34248	32245	9	86855
Share of Import from Subject						
Countries	%	61	58	53	82	82
Share of Import from other						
Countries	%	39	42	47	18	18
Import Price (CIF Value per MT)						
Subject Countries	Rs/MT	11627	13645	13128	12300	12300
Other Countries	Rs/MT	19710	19766	23264	20641	20641

#### (b) Contraction of demand and changes in the pattern of consumption.

87. There has been a constant rise in demand of the product concerned throughout the injury period. Therefore, decline in demand is not a possible reason of injury to the Domestic Industry.

#### (c) Developments in technology:

88. Technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, development in technology is also not a factor causing injury to the domestic injury.

# (d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers :

89. There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the Domestic Industry as the raw materials as well as the subject goods are freely importable in the country. As regards the issue raised by certain interested parties regarding investigation by

the Competition Commission of India (CCI), the Authority is of the view that filing of complaint by one of the constituents of the Domestic Industry against another cannot, by itself, have any bearing on the anti-dumping investigations. Moreover, in the facts of this particular case, it is seen that the CCI in its Order dated 24.10.2013, has come to the conclusion that neither SGGIL is a dominant player in the market nor has it abused its position in any manner. Under the circumstances, the Authority is of the view that the contention of the interested parties in this regard is irrelevant and without any merit.

# (e) Export performance of the domestic industry:

90. The exports of the domestic industry constitute an insignificant share in their total sales. In any case, the injury analysis has been done by the Authority taking into consideration their domestic operations only. Therefore, performance in the export market has not affected the present injury analysis.

### (f) Productivity of the Domestic Industry:

- 91. It is noted that the productivity of the domestic industry in terms of production per employee as well as production per day has increased over the period.
- 92. It is thus noted that listed known other factors do not show that the domestic industry could have suffered injury on account of them. None of the interested parties has also provided any evidence to suggest that the material injury caused to the Domestic Industry is attributable to other known factors. On the other hand, the following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:
  - a. The imports of subject goods from subject countries were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Resultantly, the domestic industry was not able to increase its prices commensurate with the increasing costs. Further, there is significant price underselling.
  - b. The pressure on the domestic prices of the domestic industry led to significant loss of profitability and return on investment during the POI. The reduction in the prices coupled with the increasing costs has materially injured the financial performance of the Domestic Industry.
  - c. Performance of the Domestic Industry was also affected adversely in terms of poor cash flow and rising inventories.
- 93. It is, therefore, concluded by the Authority that the domestic industry suffered material injury due to dumped imports from subject countries.

#### **K.** Magnitude of Injury Margin:

#### **Injury Margin**

94. The non-injurious price of the subject goods produced by the Domestic Industry determined has been compared with the landed value of the exports from the subject countries for

determination of injury margin during the POI. The injury margin determined are as under:-

Saudi Arabia	Unit	Obeikan Glass Company	Arabian United Float Glass Co	Non-Co- operative producers/ exporters
Non Injurious Price	Rs./MT	***	***	***
Landed Price	Rs./MT	***	***	***
Injury Margin	Rs./MT	***	***	***
Injury Margin	%	***	***	***
Injury Margin	Range	50-60	55-65	80-90
UAE		Emirates Float Glass LLC	Non-Co-operative producers/exporters	
Non Injurious Price	Rs./MT	***	***	
Landed Price	Rs./MT	***	***	
Injury Margin	Rs./MT	***	***	
Injury Margin	%	***	***	
Injury Margin	Range	35-45	55-65	
Pakistan		Ghani Glass Limited	Non-Co-operative producers/exporters	
Non Injurious Price	Rs./MT	***	***	
Landed Price	Rs./MT	***	***	
Injury Margin	Rs./MT	***	***	
Injury Margin	%	***	***	
Injury Margin	Range	50-60	80-90	

95. The level of dumping margins and injury margins, as determined are, considered significant.

#### L. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES:

- 96. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country/territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.
- 97. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of this product. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline in the performance of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

#### M. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS BY THE INTERESTED PARTIES

# M.1 Post Disclosure Statement submissions by the opposing Interested Parties

- 98. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the opposing interested parties:
  - (i) The Respondent had provided all the evidence pertaining the claim for start-up cost adjustment. Para 3(ii) to Annexure 1 under the AD Rules does not provide that startup operation has to take place during the POI. There is no need that commercial production should start during the POI. Cost during the period of investigation can be affected by start-up issues even if commercial production was started before the period of investigation. The Respondent also faced the technical issues during the period of investigation. Further, the DGAD has allowed the adjustment for startup costs in the previous anti-dumping investigations in similar situations and the US law also provides start-up cost adjustments. Therefore, the Respondent requests the authority to provide for adjustment on account of start-up phase as per AD Rules and the WTO Anti-Dumping Agreement.
  - (ii) The Authority has not considered the submission that the time period for completion of investigation has expired.
  - (iii) The product scope should exclude processed glass meant for decorative, industrial or automotive purposes.
  - (iv) The imports of sheet glass be considered as a relevant factor in determining the reasons for the alleged injury suffered by the Applicant.
  - (v) The Authority initiated the present anti-dumping investigation without even verifying the accuracy of data submitted by the Applicant. DGCIS data was neither provided to respondents nor kept in the public file so that interested parties could access it to analyze and make meaningful comments on the same. There are numerous inconsistencies across various crucial parameters as per the data given in the petition filed by the Applicant and the Disclosure Statement issued by the Authority.
- (vi) The current exchange rate should be used.
- (vii) Annexure-III to AD Rules mandates that those assets which are not used in manufacture of the PUC should not be considered by the authority for determination of net fixed assets. Therefore, the respondents request the authority to re-compute the non-injurious price by ignoring the surplus land.

- (viii) Our earlier submissions clearly demonstrated that the applicant domestic industry failed to establish a case of material injury on account of alleged dumping from subject countries and the investigation is liable to be terminated. However, without prejudice to the above position, it is prayed that in an event any anti-dumping duty is sought to be imposed, it has to be levied based on the reference price basis. Reference form of duty is desirable and adequate considering the fact that import prices recorded significant fluctuations since POI and that too in Indian Rupees only.
- (ix)In case of Emirates Float Glass LLC, UAE, the Authority may consider sales to non affiliated parties only for the purpose of determination of Normal Value.
- (x) There is an inverse relation between core parameters relating to price and volume of imports of subject goods into India and a corresponding effect on the volume and price parameters of the domestic industry. Thus, there is no causal link between alleged dumping of subject goods from subject countries into India and alleged injury to the domestic industry.
- (xi)The landed value for the imports from Pakistan computation should be revised taking into account the applicable rate of basic customs duty.

#### M.2 Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry

- 99. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the domestic industry:
  - (i) Normal value ought to be rejected for Saudi Arabia and UAE because cost of the natural gas used in the production of clear float glass is not reflective of the market driven price because of the existence of a particular market situation.
  - (ii) The exporter Obeikan has merely cited the legal provisions but has not provided any submissions or evidence whatsoever in support of their claim seeking startup cost adjustments. The exporter does not qualify to even seek such an adjustment as it did not start its operations during the period of investigation.

# M. 3 Examination by the Authority

- 100. The Authority notes that most of the post disclosure statement submissions made by the opposing interested parties are repetitive in nature and have already been dealt with in the Disclosure Statement and are again addressed in this Final Findings Notification under the appropriate headings. Nonetheless, the Authority has addressed these issues to the extent considered relevant as under:
  - (i) The imports from subject countries are not miniscule as claimed by the opposing interested party. As already analysed by the Authority elsewhere in this Final Findings, the volume of imports from the subject countries during the POI was not only more than the de-minimis level but also significantly higher than the volume reported in the base year.

- (ii) With regard to the contention of the opposing interested parties that the profitability of the domestic industry improved in the POI as compared to the previous years, the Authority notes that the domestic industry has increased its capacity in 2010-11 and therefore their cost of production was high in 2010-11 and 2011-12. After the stabilisation of the production in the POI, the loss in the POI as compared to the previous year has decreased. The Authority further notes that in spite of increased production and sales during the POI as compared to the base year, the domestic industry's performance has declined in the POI. The Authority further notes that none of the opposing interested parties has brought to the notice of the Authority the other reasons for the injury suffered by domestic industry with supporting evidence. The Authority after examining other known factors that could have caused injury to the domestic industry has come to the conclusion that the injury suffered by the domestic industry is due to dumped imports.
- (iii) As regards the contention of the opposing interested parties that there is no price effect, the Authority notes that there is significant price undercutting and price underselling during the POI.
- (iv) The computation of the landed value for the imports from Pakistan has been revised by taking into account the applicable rate of basic customs duty at 6% w.e.f. 1.1.2012 instead of 10% considered earlier.
- (v) With regard to the request of Emirates Float Glass LLC, UAE to disregard the domestic sales made to affiliated parties for determination of normal vale, the Authority notes that the domestic sales made to the affiliated parties are at arm's length basis and the prices were comparable with the prices of sales made to non-affiliated parties. The Authority has, therefore, considered the profit making domestic sales made to both affiliated and non-affiliated parties.
- (vi) As regards the request of opposing interested parties for imposition of antidumping duty if any on Reference Price basis in Indian rupee since the there has been significant depreciation of Indian rupee vis-a-vis US\$ after the Period of Investigation, the Authority after considering the factual matrix of the case recommends fixed form of duty in US\$.
- (vii) The Authority notes that the NIP determined for the domestic industry is after excluding the 'surplus land' in terms of the principles outlined in Annexure-III to the Antidumping Rules.
- (viii) As regards the mismatch in the data provided by the petitioner in the petition and the one considered in the disclosure statement, the Authority notes that the data submitted by the petitioner in their petition has been considered after due verification. Further, the Authority notes that while the petitioner has submitted the petition based on the import data sourced from info drive, the Authority has considered the import data collected from DGCI&S.
- (ix) As regards the contention of one of the opposing interested parties that imports of sheet glass could be considered as relevant reason for the injury to the domestic industry, the Authority notes that the contention of the party is not supported by any evidence and therefore rejected.

- (x) As regards the contention of M/s Obeikan Glass Co, Saudi Arabia (Obeikan) that current exchange rate should be considered as a relevant factor in determining whether or not the domestic industry is suffering injury the Authority holds that in the fresh antidumping investigation it has to determine whether the domestic industry has suffered injury on account of dumped imports based on the data of POI and 3 years prior to POI and not on the post-POI and, therefore, the argument of Obeikan is rejected.
- (xi) As regards the request of Obeikan for considering adjustment for start up expenses while determining cost of production/sales during POI, the Authority has examined the issue and found no merit due to the following:
- a. The Authority notes that Obeikan had set up a new float glass plant in 2011. The Company started producing float glass from April, 2011 and declared commercial production on 1st July, 2011. The Company had achieved a capacity utilisation of about \*\*\*% in POI. The Company has not projected any capacity utilisation in the first/second year of operation in the project report. In the absence of such projection, the Authority holds that the capacity utilisation achieved by Obeikan is reasonable and, therefore, it could be reasonably considered that the production had stabilised.
- b. The Authority further notes that Obeikan had projected the capacity utilisation of \*\*\*% in the third year of operations in its Project Report and as against this it, had achieved a capacity utilisation of about \*\*\*% in 2013. This shows that the production of the company had stabilised during the POI itself and, therefore, it is reasonable to assume that it was not affected by start up operations.
- c. The Authority notes that in the recent case of Plain Gypsum Plaster Boards originating in or exported from China PR, Indonesia, UAE, etc, cited by Obeikan, the concerned producer/exporter had achieved a capacity utilisation of \*\*\*% as against\*\*\*% projected in the Project Report. Since the capacity utilisation achieved by the concerned exporter was almost \*\*\*% of the projected capacity, the Authority had considered the adjustment on account of start up cost in that case.
- d. The Authority holds that any new company requires time to market its product and, therefore, in the initial period of operation, it is one of the constraints for achieving optimum capacity utilisation. In this connection, the Authority notes that Obeikan started its operations in April, 2011 and the inventories at the end of POI were high as compared to the inventories at the end of 2013 when Obeikan claims that it had achieved optimum level of capacity utilisation. This shows that Obeikan could have increased its production during 2013 when the market had picked up. The Authority, therefore, holds that the contention of Obeikan that its production in POI was affected due to start up operations and it got stabilised only during 2013 is not correct.
- e. The Authority further holds that the reasons for production loss, particularly the non-availability of constant power, relying on DG sets, irregular voltage supply, etc., during POI furnished by Obeikan cannot be considered as due to start up operations as they could be considered as managerial issues.

f. M/s. Obeikan has requested the Authority to consider the production level that they had achieved in 2013 as the optimum level of production, i.e., the production level achieved at the time of 30 months of commercial operation. The Authority holds that the contention of Obeikan that its production was not normal during the POI and it got stabilised only during 2013, i.e., during 19th to 30th month of operation is devoid of merit.

#### N. <u>Conclusion</u>

101. After examining the submissions made by the opposing interested parties and the domestic industry and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that the product under consideration has been exported to India from the subject countries below its associated normal value, thus, resulting in dumping of the product. The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods. The material injury has been caused by the dumped imports from the subject countries.

# O. Recommendations

- 102. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the domestic industry, exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti-dumping duty is required to offset dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.
- 103. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in the table below is recommended to be imposed from the date of the Notification to be issued by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from Saudi Arabia, United Arab Emirates and Pakistan.

#### **Duty Table**

S. No.	Sub- heading	Description of Goods *	Country of origin	Country of exports	Producer	Exporter	Amount	Unit of measure- ment	Currency
1	7003, 7004, 7005, 7009, 7013, 7015, 7016, 7018, 7019, 7020	Clear Float Glass of nominal thicknesses ranging from 4 mm to 12 mm (both inclusive), the nominal thickness being as per BIS 14900:2000	Saudi Arabia	Saudi Arabia	Obeikan Glass Company, Saudi Arabia	Obeikan Glass Company, Saudi Arabia	58.22	MT	US\$

S. No.	Sub- heading	Description of Goods *	Country of origin	Country of exports	Producer	Exporter	Amount	Unit of measure-ment	Currency
2	-do-	-do-	Saudi Arabia	Saudi Arabia	Arabian United Float Glass Co, Saudi Arabia	Arabian United Float Glass Co, Saudi Arabia	134.92	MT	US\$
3	-do-	-do-	Saudi Arabia	Saudi Arabia	Any other than at S1. No 1 and 2 above	Any other than at S1. No 1 and 2 above	165.07	MT	US\$
4	-do-	-do-	Saudi Arabia	Any country, other than subject countries	Any	Any	165.07	MT	US\$
5	-do-	-do-	Any country, other than subject countries	Saudi Arabia	Any	Any	165.07	MT	US\$
6	-do-	-do-	United Arab Emirates (UAE)	United Arab Emirates (UAE)	Emirates Float Glass LLC, UAE	Emirates Float Glass LLC, UAE	79.00	MT	US\$
7	-do-	-do-	United Arab Emirates (UAE)	United Arab Emirates (UAE)	Any other than at Sl. No 6 above	Any other than at Sl. No 6 above	111.15	MT	US\$
8	-do-	-do-	United Arab Emirates (UAE	Any country, other than subject countries	Any	Any	111.15	MT	US\$
9	-do-	-do-	Any country, other than subject countries	United Arab Emirates (UAE	Any	Any	111.15	MT	US\$
10	-do-	-do-	Pakistan	Pakistan	Ghani Glass Limited, Pakistan	Ghani Glass Limited, Pakistan	82.34	MT	US\$
11	-do-	-do-	Pakistan	Pakistan	Any other than at S1. No. 10 above	Any other than at Sl. No. 10 above	123.61	MT	US\$
12	-do-	-do-	Pakistan	Any country, other than subject countries	Any	Any	123.61	MT	US\$
13	-do-	-do-	Any country, other than subject countries	Pakistan	Any	Any	123.61	MT	US\$

<u>Note:</u>\* Reflective glass and Tinted glass including green glass and transition glass are not included in the "Description of Goods" in the Duty Table above.

- 104. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
- 105. An appeal against the order of the Central Government arising out of these findings shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

J. K. DADOO, Designated Authority